Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024, R.N.I. No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

नई दिल्ली • वर्ष 25 • अंक 33 • 20 मई - 26 मई , 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 18-05-2024 • पेज 24 • ₹ 10 रुपये

एकांत स्थान में साधना करने का मूल्य है, पर भीड़ में रहकर भी एकांत का-सा अनुभव करना परम मूल्यवान है।
- आचार्यश्री भिक्षु

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के जन्मोत्सव, पट्टोत्सव, दीक्षा कल्याण महोत्सव पर शत्-शत् वंदन-अभिनंदन

मुझे स्मृति है जब मैं श्रीसमवसरण में दीक्षा दे रहा था, और आपश्री के चोटी के केश ले रहा था, तब कल्पना आई कि यह मुनि संघ का सिरमोर बनेगा, यह शिखर तक पहुंचेगा। उस समय मेरे मन में यह था कि यह शिखर तक पहुंचेगा किंतु यह नहीं आया कि मैं देखूंगा। यह महसूस हो रहा है कि मैं हीरालालजी स्वामी (डालगणी के दीक्षा प्रदाता) से भी आगे निकल गया।

दीक्षा प्रदाता - मुनिश्री सुमेरमल जी स्वामी

युवा दिवस
5वां दीक्षा दिवस, 22 मई 2024

आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव 50

आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण विशेषांक

श्रद्धाप्रणत: अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

कैसे बनाया संयम के पर्यवों को उज्ज्वल

● साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा ●

महान् संत विनोबाजी ने गांधीजी के दर्शन का सार तीन शब्दों में प्रस्तुत किया 'सत्य, संयम और सेवा।' सत्य जीवन का लक्ष्य है, संयम जीवन की पद्धति है और सेवा जीवन का कार्य है। आचार्य महाश्रमणजी के जीवन में इन तीनों का प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है। इन्हीं रहस्य-सूत्रों को अपने जीवन में अपनाकर वे संयम के पर्यवों को उज्ज्वल बना रहे हैं।

जैन आगमों में सत्य को भगवान कहा गया है। गांधीजी ने भी 'Truth is God' कहकर सत्य की गरिमा का मूल्यांकन किया है।

: अभिवंदना स्वर :
'शासनमाता' साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी

अभिनन्दन उजले प्रभात का, नन्दनवन के पारिजात का।।

आरोहण आस्था तरंग पर, सदा निछावर एक रंग पर,
आंच न आए कभी संघ पर, वीतरागता अंग-अंग पर।
गण-गौरव से अभिस्नात का, अभिनन्दन उजले प्रभात का।।

जीवन की हर भोर सुहानी, चरणों में हो सतत रवानी,
रोक न पाए आंधी-पानी, जागृत हो ताकत रूहानी।
पुष्प सुगन्धित अनाघ्रात का, अभिनन्दन उजले प्रभात का।।

जैनागम के अगम पुजारी, वैश्वानर बन दो चिनगारी,
नए सृजन की कर तैयारी, भावी पीढ़ी हो संस्कारी।
पौरूष के निर्मल प्रपात का, अभिनन्दन उजले प्रभात का।।

तुम तुलसी के नए छन्द हो, महाप्रज्ञ-मन की पसन्द हो,
पहली वर्षा-सी सुगंध हो, संघपुरूष के शुभ प्रबंध हो।
नूतन युग के सूत्रपात का, अभिनन्दन उजले प्रभात का।।

: अभिवंदना स्वर :
'मुख्य मुनि' महावीरकुमार जी

श्री संत शिरोमणि महाश्रमण का सुन्दर सुखकर साया है।
दीक्षा कल्याण महोत्सव का शुभ पावन अवसर आया है।।

कालू जप किया गहन मंथन, निर्णय जग के तोड़ूं बंधन।
तत्काल त्याग कर शादी का, वैराग्य प्रवर प्रकटाया है।।

द्वादश वय बन गए संन्यासी, तेजस्वी संयम अभ्यासी।
साधु हो महाश्रमण जैसा, गुरु तुलसी ने फरमाया है।।

रत्नत्रय के तुम आराधक, समता के श्रेष्ठ महासाधक।
उपशम है सार साधुता का, वच सच करके दिखलाया है।।

मंत्री मुनिवर द्वारा दीक्षित, गुरुद्वय से शिक्षित संपोषित।
श्री महाप्रज्ञ विभु ने गण का दायित्व सकल संभलाया है।।

उत्कृष्ट आन्तरिक तप तेरा, है प्रबल बाह्य तप का घेरा।
गुरुवर मुख महातपस्वी का, महिमामंडित वर पाया है।।

सम शम श्रम से वर श्रमण बनें, श्रमणों में भी महाश्रमण बने।
परमार्थ समर्पित अर्धसदी, संयम सुरतरु सरसाया है।।

लाखों-लाखों के कल्याणी, आनन्द शांति सुख वरदानी।
युग-युग युग का कल्याण करो, हर भक्त हृदय ने गाया है।।

लय - महावीर तुम्हारे चरणों में

आचार्य महाश्रमणजी की साधना का अभिन्न अंग है सत्य। सत्य के साथ निश्छलता (सरलता) का गहरा संबंध है। अध्यात्म का पुष्प सरलता के प्रांगण में खिलता है। सरलता में ही आत्मदर्शन की ज्योति प्रकट होती है। सत्य का आचरण करने वाले व्यक्ति का चित्त पवित्र हो जाता है। सत्य की अभिव्यक्ति के चार माध्यम हैं-

1. काया की ऋजुता
2. भाषा की ऋजुता
3. भावों की ऋजुता
4. अविसंवादन योग।

सत्य में आस्था रखने वाला व्यक्ति कायिक ऋजुता का विकास करता है। सत्यवादी व्यक्ति के जीवन में उठना, बैठना, चलना आदि सारी क्रियाएं बिल्कुल सहज होती हैं, उसके व्यवहार और आचरण में कहीं भी कृत्रिमता का दर्शन नहीं होता। वह यह चिन्तन करता है कि मेरे शरीर के द्वारा कोई भी ऐसा कार्य न हो, जिससे दूसरों का अहित हो। आचार्य महाश्रमणजी अपनी किसी भी प्रवृत्ति के द्वारा किसी को भी चोट नहीं पहुंचाते हैं। गमनयोग के समय यदा कदा सूक्ष्म जीव भी आपके नयनपथ में आ जाते हैं, आप उनको लांघकर आगे बढ़ने से परहेज करते हैं क्योंकि उनका अतिक्रमण करने से उन जीवों की विराधना होती है। आचार्यवर स्वयं उनकी हिंसा के प्रति जागरूक रहते हैं और अपने परिपार्श्व में रहने वालों को भी सजगता का पाठ पढ़ाते रहते हैं।

सत्य में श्रद्धाशील साधक के जीवन में वाचिक ऋजुता स्वतः विकसित हो जाती है। सत्य मार्ग का पथिक कभी भी कटु भाषा का उपयोग नहीं करता, जहां कटुता है वहां भाषा की ऋजुता नहीं होती, सत्य वहीं होगा जहां भाषा की ऋजुता होगी। सत्यनिष्ठ साधक कभी भी अप्रिय भाषा, व्यंग्यात्मक भाषा और कर्कश भाषा का प्रयोग भी नहीं करता और वह ऐसी भाषा का उच्चारण भी नहीं करता, जिससे दूसरों को ठेस पहुंचे। आचार्य महाश्रमणजी का भाषा-विवेक विलक्षण है। आप अनावश्यक वचन की प्रवृत्ति नहीं करते। जब बोलना जरूरी होता है तो विवेकपूर्वक हित, मित, इष्ट और शिष्ट भाषा का प्रयोग करते हैं। आपका आदर्श वाक्य है-Think Before You Speak. चिन्तनपूर्वक बोलने वाला अपनी वाणी को विशिष्ट और मनोज्ञ बना लेता है।

सत्य का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है- भाव ऋजुता। कायऋजुता और भाषाऋजुता के विकास में भावों की ऋजुता अनिवार्य है। मानसिक पवित्रता की साधना करने वाला साधक सदैव जागरूक रहता है-मेरा मन मोह, स्वार्थ, लोभ, राग, द्वेष आदि निषेधक तरंगों से दूषित न हो, मैं किसी का अनिष्ट नहीं करूं। आचार्य महाश्रमणजी की भावात्मक पवित्रता अनुपमेय है। भावधारा की निर्मलता के प्रति सतर्क व्यक्ति अपने चिन्तन को और अपनी वाणी को भी पवित्र बना लेता है। आपके भावों की पवित्रता वाणी और शरीर के माध्यम से स्पष्टरूपेण अनुभूत की जा सकती है।

सत्यनिष्ठ व्यक्ति के जीवन में योगों की लयबद्धता रहती है। उसके तीनों योग एक दिशा में गतिशील रहते हैं, तीनों योगों में परस्पर संवादिता रहती है। वीणा के तार संवादी बनकर झंकृत होते हैं तो मधुर ध्वनि का नाद होता है। एक तार भी यदि शिथिल रह गया तो संवादी स्वर नहीं निकलेंगे। सत्यप्रेमी साधक की कथनी और करनी में एकात्मकता रहती है, द्विरूपता नहीं होती। उसके बाहर और भीतर में कोई भेद नहीं होता। इसलिए महापुरुषों के लिए कहा जाता है- 'मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्' - आचार्य महाश्रमणजी के मन, वचन और कर्म की एकरूपता है। मन में जो चिन्तन करते हैं, उसे ही वाणी के द्वारा व्यक्त करते हैं। जैसा कहते हैं वैसा ही आचरण करते हैं। एक बार काका कालेलकर के पास एक विदेशी व्यक्ति आया। उसने प्रश्न किया- 'महात्मा गांधी के प्रभावशाली व्यक्तित्व का रहस्य क्या था?' काका कालेलकर ने कहा- 'उनकी कथनी और करनी में समानता तथा उनका संयम। उनकी इन दो विशेषताओं ने उनके व्यक्तित्व को प्रभावशाली व आकर्षक बना दिया।' उपर्युक्त दोनों ही विलक्षणताएं आचार्य महाश्रमणजी के जीवन को वैशिष्ट्य प्रदान कर रही हैं।

संयम के पर्यवों को स्फटिक की भांति निर्मल बनाने वाला तत्त्व है- संयम। ठाणं सूत्र में संयम को धर्म की संज्ञा दी गई है। आचार्य महाश्रमणजी के इन्द्रियों का संयम सधा हुआ है। आचार्यप्रवर जो आवश्यक हैं उन्हीं शब्दों को श्रोत्रेन्द्रिय का विषय बनाते हैं। श्रोत्रेन्द्रिय संयम की दृष्टि से विचार करें तो एक नेतृत्व वाले धर्मसंघ के आचार्य होने से आपके सामने चतुर्विध धर्मसंघ की समस्याएं आती रहती हैं। उनको ध्यान से सुनते हैं और सीमित शब्दों में उनका समाधान देने का प्रयास करते हैं। प्रिय-अप्रिय शब्द, प्रिय- अप्रिय रूप, मनोज्ञ-अमनोज्ञ गंध, प्रिय-अप्रिय स्पर्श आपके मन को प्रभावित नहीं करते, क्योंकि आप शब्दातीत, रूपातीत, गंधातीत, रसातीत और स्पर्शातीत जगत् में प्रवेश करने की साधना कर रहे हैं। यह तब संभव होता है जब साधक अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण कर लेता है। इसलिए एक विशिष्ट साधक की साधना के संदर्भ में कहा जाता है- 'पश्यन्नपि न पश्यति' वह देखता हुआ भी नहीं देखता है। 'शृण्वन्नपि न शृणोति'-वह सुनता हुआ भी नहीं सुनता है। 'जिघ्रन्नपि न जिघ्रति'-वह सूंघता हुआ भी नहीं सूंघता है।

प्रवृत्ति के तीन स्रोत हैं-मन, वचन और काय। आचार्य महाश्रमणजी अपने मन, वचन और शरीर का संयम कर साधना के क्षेत्र में अनवरत गतिमान हैं। यही वजह है कि आचार्यप्रवर अनावश्यक स्मृति, अनावश्यक चिन्तन और अनावश्यक कल्पना में समय जाया नहीं करते। आपके मन की एकाग्रता सधी हुई है। कभी-कभी आप पत्र लेखन या अन्य कोई भी कार्य करते हैं, उस दौरान कोई विशिष्ट व्यक्ति आ गया अथवा कोई मंगलपाठ सुनने आ गया, कोई अपनी समस्या लेकर आ गया, उन सारे कार्यों को सम्पादित करते हुए भी आचार्यवर की मूल कार्य से संबद्ध एकाग्रता भंग नहीं होती। इससे यह प्रतीत होता है कि आपने अपने मन का संयम सिद्ध कर लिया है।

आचार्य महाश्रमणजी अध्यात्म के सुमेरु हैं। अध्यात्म के पथ पर चलने वाले पथिक का वाक्-संयम सहज ही सध जाता है। उसके मन में प्रश्न पैदा होता रहता है- 'में क्यों बोलूं?, क्या बोलूं? क्या मेरा बोलना अपेक्षित है?' अध्यात्म के क्षेत्र में बोलने का ज्यादा अवकाश नहीं रहता। बोलने की अपेक्षा व्यावहारिक जगत में होती है। आचार्यवर का दर्शकों के साथ पहला संपर्क मुस्कान के साथ प्रारंभ होता है। जब बोलना अपेक्षित होता है, आप बहुत स्वल्प शब्दों का प्रयोग करते हैं। आपश्री की स्वल्पभाषिता, मंदभाषिता, मधुरभाषिता आगन्तुकों को भीतर तक प्रभावित करती है। इसीलिए जैन-जैनेतर कोई भी व्यक्ति आपके सम्पर्क में आता है, वह हमेशा के लिए आपका भक्त बन जाता है। आचार्यश्री महाश्रमणजी साधना के उच्च शिखर पर आरोहण कर रहे हैं। अत्यन्त सीमित शब्दों का प्रयोग कर समग्र धर्मसंघ का सुव्यस्थित संचालन कर रहे हैं।

साधना के क्षेत्र में शरीर की स्थिरता और शरीर के संयम का बहुत महत्त्व है। आचार्य महाश्रमणजी काय-संयम की साधना कर रहे हैं। मैं मुनि अवस्था से ही आपश्री का अवलोकन कर रही हूं। गुरुदेवश्री तुलसी के सान्निध्य में लम्बे-लम्बे कार्यक्रम चलते। उन कार्यक्रमों में आप वज्रासन मुद्रा में उन्मीलित नयन ध्यान करते रहते। वर्तमान में भी यह काय-गुप्ति का प्रयोग सतत् चल रहा है। व्याख्यान का समय हो या कक्ष में बातचीत का प्रसंग हो, आपकी स्थितप्रज्ञता मन को अभिभूत कर देती है।

(शेष पेज 19 पर)

महान् श्रामण्य का नाम है 'महाश्रमण'

● साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा ●

स्वर्ग की सुधर्मा सभा में सुघोषा नामक एक घण्टा होता है। जिस समय सुघोषा घण्टा बजता है, उसी समय बत्तीस लाख विमानों के घण्टे बज उठते हैं। उन विमानों में रहने वाले देव एक पल में सावधान हो जाते हैं। एक आवाज उन सबको सतर्क कर देती है। आत्मा में भी एक वैराग्य रूपी सुघोषा घण्टा है। जब वह जागरण का नाद करता है तब मनुष्य राग से विराग की ओर, भोग से त्याग की ओर, बंधन से मुक्ति की ओर प्रस्थित होने के लिए उद्धत हो उठता है और वह जागृत पुरूष **'पणया वीरा महावीहिं'** इस आगम उक्ति को चरितार्थ करता हुआ असि की धार पर चलने के सम्मान कठिन सन्यास पथ को अंगीकार कर लेता है।

आज से लगभग पचास वर्ष पूर्व वैशाख शुक्ला चतुर्दशी के दिन सरदारशहर के मेहरी वाले दुगड़ परिवार के लगभग बारह वर्षीय बालक मोहन ने केश और संक्लेश का त्याग करने हेतु इस कठोर अनगार पथ पर चरणन्यास किया था। दसवेआलियं सूत्र में मुनि के लिए कहा गया **'जाए सद्धाए निक्खंतो पर्यायट्ठाणमुत्तमं, तमेव अणुपालेज्जा गुणे आयरिए सम्मए।'** अर्थात् जिस श्रद्धा से उत्तम प्रवज्या के लिए घर को छोड़ा, संयम के प्रति उस श्रद्धा को पूर्ववत् बनाए रखें और आचार्य सम्मत गुणों का अनुपालन करें। बालक मोहन ने भी जिस श्रद्धा और संयम निष्ठा के साथ घर से अभिनिष्क्रमण किया था वह निष्ठा संयम जीवन के पचास वर्षों में उत्तरोत्तर प्रवर्धमान होती गई और आज पंचाचार की साधना में निष्णात युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण के रूप में वह प्रकाशमान चेतना जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ का नेतृत्व करती हुई सम्पूर्ण विश्व में देदीप्यमान हो रही है।

आचार्य महाश्रमण अपने जीवन में श्रमणत्व को बहुत अधिक महत्व देते हैं। उनकी दृष्टि में साधु के पद से बड़ा और कोई पद नहीं है। एक बार गुजरात के शिक्षा मंत्री प्रफुल्ल भाई ने आचार्यश्री महाश्रमण से अनुरोध किया कि आप भगवान महावीर युनिवर्सिटी से मानद की उपाधि यानी डी. लिट् की उपाधि स्वीकार करें। उन्होंने केवल शाब्दिक अनुरोध ही नहीं किया अपितु वे डी. लिट् की उपाधि देने की पूरी तैयारी के साथ उपस्थित भी हो गए। परन्तु आचार्य महाश्रमण ने प्रसन्न मन से तथा सुन्दर तरीके से उपाधि लेने से अस्वीकार कर दिया और कहा- 'मुझे साधु की डिग्री प्राप्त हुई है वह मेरी जीवन भर सुरक्षित रहे और साधु की डिग्री के सामने यह डिग्री बहुत ही छोटी है।'

योग ग्रंथों में कहा गया है **'निस्पृहो मुनिसत्तमः'** जो निस्पृह होता है वह मुनि श्रेष्ठ मुनि कहलाता है। आचार्य महाश्रमण संतता के उच्च शिखर पर विराजमान हैं। उनका जीवन कमल की भांति निस्पृहता का अप्रतिम उदाहरण है। किसी भी प्रकार की भौतिक उपाधियां, अलंकरण उनकी साधना को स्खलित नहीं कर सकते। उनका श्रमणत्व बहुत ऊंचा है। एक बार आचार्यश्री तुलसी ने 'मुनि कैसा होना चाहिए' इसका समाधान देते हुए कहा कि मुनि हो तो मुनि मुदित जैसा। यह मुनियों के लिए आदर्श रूप है।

आचार्यश्री महाश्रमण के श्रेष्ठतम और महान् श्रामण्य का रहस्य क्या है इस पर चिंतन करें तो कहा जा सकता है उनके आदर्श श्रमण जीवन का एक महत्वपूर्ण और विशिष्ट सूत्र है- उपशम की साधना। आर्हत् वाड्मय में कहा गया- **'उवसम सारं खु सामण्णं'** अर्थात् उपशम ही श्रामण्य का सार है।

आचार्य श्री महाश्रमण की उपशम साधना बेजोड़ है। कहा भी गया है कि संत वह होता है जो शांत होता है। जिस व्यक्ति के क्रोध, मान, माया और लोभ शांत होते हैं, प्रशान्त होते हैं, उसे उपशम कषायी कहते है। आचार्य श्री महाश्रमण उपशम की साधना में रमण करने वाले महान् योगी हैं।

10 जून 2006 की बात है। मध्याह्न लगभग 4 बजे का समय था। आचार्य श्री महाप्रज्ञ कमरे में विराजमान थे। गर्मी के दिन थे। बाल मुनि महावीर कुमार जी (वर्तमान मुख्य मुनिप्रवर) और मुनि नय कुमार जी ने आचार्यप्रवर के कमरे में लगी इलेक्ट्रॉनिक घड़ी में तापमान को देखकर आचार्यप्रवर से निवेदन किया कि आचार्य प्रवर के कमरे का तापमान 40 डिग्री है और युवाचार्यश्री महाश्रमण के कमरे का तापमान 38 डिग्री है। दिन में भी आचार्य श्री के कमरे का तापमान 38 डिग्री था और युवाचार्य श्री के कमरे का 36 डिग्री। बालमुनियों की बात सुनकर आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा- महाश्रमण के उपशम ज्यादा है इसलिए कमरे का तापमान भी कम रहता है। हालांकि बाहर का तापमान तो प्रक्रति के अनुसार परिवर्तित होता रहता है। परन्तु यहां इसका तात्पर्य यह है कि स्वयं गुरु अपने शिष्य की साधना से कितने प्रभावित थे। वे युवाचार्य श्री महाश्रमण का उदाहरण देकर संभवतः अपने शिष्यों को प्रेरणा देना चाहते थे कि कषायों की मन्दता बाह्य वातावरण को भी अनुकूल बना देती है।

उपशम योगी आचार्य श्री महाश्रमण की अकषाय की साधना अद्भुत है। ऐसा प्रतीत होता है कि क्रोध, मान, माया, और लोभ ये चारों कषाय उनके अधीन हो गए हैं। इसलिए उनके व्यक्तित्व में क्षमा, मृदुता, ऋजुता और संतोष गुण पराकाष्ठा लिए हुए है। विशाल धर्मसंघ का नेतृत्व करते हुए कभी आचार्यप्रवर को अनुशासन भी करना पड़ता है परन्तु क्षमा और मृदुतापूर्ण अनुशासन के प्रति साधु-साध्वियां श्रद्धा प्रणत हो जाते हैं। अनुशासन में भी इतनी क्षमा और मृदुता उपशम की उत्कृष्ट साधना से ही संभव है।

आचार्यश्री महाश्रमण के भीतर उपशम गुण ने सर्वोच्च स्थान पाया है तो निरंहकारता की साधना भी उत्कृष्टता लिए हुए है। उनकी विनम्रता सकल धर्मसंघ के लिए अनुकरणीय है। वह चाहे आप्त वाणी के प्रति हो, भगवान महावीर के प्रति हो, अपने पूर्वाचार्यों के प्रति हो या रत्नाधिक साधु-साध्वियों के प्रति हो। आचार्यप्रवर का अन्य जैन सम्प्रदाय के आचार्य, साधु-साध्वियों के प्रति भी सम्मान का भाव है। यदा-कदा उनसे मिलना होता है तो पट्ट से नीचे उतरकर सामने पधारते हैं या पहुंचाने के लिए कदम बढ़ाते हैं। कभी-कभी उनसे मिलने के लिए निर्णीत विहार में परिवर्तन कर अतिरिक्त चक्कर लेना भी स्वीकार कर लेते हैं।

सन् 2023 के बायतू मर्यादा महोत्सव से पूर्व आचार्य श्री महाश्रमण जोधपुर पधारे। उन्हें ज्ञात हुआ कि स्थानकवासी सम्प्रदाय के वयोवृद्ध आचार्य हीरालालजी यहां विराजित हैं और वे अभी अस्वस्थ हैं। आचार्य प्रवर उनसे मिलने के लिए अतिरिक्त विहार कर वहां पधारे।

प्रायः विशेष अवसर के बिना आचार्यप्रवर सात सीढ़ियों से अधिक ऊपर नहीं चढ़ते परन्तु उनसे मिलने ऊपर पधारे। उनके पास विराजे और लगभग 40-50 मिनिट चर्चा-वार्ता का क्रम रहा। यह घटना आचार्यश्री महाश्रमण के विशिष्ट विनम्रता गुण को उजागर करने वाली है।

जहां ऋजुता होती है वहां वक्रता को स्थान प्राप्त नहीं हो सकता, वहां माया अप्रभावी बन जाती है। आगमकार ने लिखा है- **'सोही उज्जुयभूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई'**। शुद्धि उसकी होती है जो ऋजुभूत होता है और धर्म शुद्ध आत्मा में ठहरता है। आचार्यश्री महाश्रमण की ऋजुता के प्रसंग सुनते है तो ऐसा लगता है मानों पवित्रता और धर्म के ठहरने के लिए यही उत्तम आश्रय है। आचार्यप्रवर की ऋजुता का एक प्रेरणास्पद प्रसंग है-

11 अप्रैल 2022 आचार्यश्री महाश्रमण का हिसार से आर्यनगर के लिए विहार निर्धारित था। विहार से पूर्व आचार्यप्रवर ने साध्वी भाग्यवतीजी, साध्वी तिलकश्री जी, साध्वी यशोधरा जी आदि छह सिंघाड़ों को सेवा कराई। सेवा के दौरान आचार्यप्रवर ने साध्वी यशोधरा जी से कहा- जब मैं बालमुनि था तब आप मुझे संस्कृत में पूछा करते थे। एक बार आपने मुझे कहा कि 'मेरा मन प्रसन्न है' इसे संस्कृत में बोलो। मैंने तत्काल ही बोला- 'मम मनः प्रसन्नः अस्ति।' आचार्यप्रवर ने साध्वी यशोधरा जी से कहा- उस समय आपने मुझे कहा था कि मन तो नपुंसकलिंग है फिर प्रसन्नः कैसे आएगा। तब मैंने उसका परिष्कार करते हुए कहा- 'मम मनः प्रसन्नमस्ति।'

यह प्रसंग सुनकर साध्वी यशोधरा जी ने कहा- गुरुदेव! धन्य है आपकी ऋजुता को। हम तो हमारी कोई गलती होती है तो सोचते हैं किसी के सामने न बोले और आचार्यप्रवर ने इतने लोगों के सामने अपनी गलती को बता दिया। अनुत्तर ऋजुता के कारण आचार्य श्री महाश्रमण का व्यक्तित्व स्फटिक के समान निर्मल, गंगाजल के समान पवित्र और दर्पण के समान पारदर्शी है।

उपशम, मृदुता, ऋजुता के साथ-साथ संतोष संपदा भी आचार्यप्रवर के संयम जीवन को समृद्ध बना रही है। उनकी लोकप्रियता या सर्वप्रियता का एक महत्पपूर्ण कारण है पदार्थ हो या पद, सम्मान हो या अलंकरण उनकी अध्यात्मा चेतना को आकर्षित नहीं कर सकते। देश ही नहीं विदेश की धरती पर भी तेरापंथ धर्मसंघ का अच्छा प्रभाव है। दूसरे देश में धर्मसंघ का इतना अच्छा प्रभाव होना एक आचार्य के लिए विशेष उपलब्धि है। यह उनके यश और प्रसिद्धि का बहुत बड़ा माध्यम है। अपने प्रभाव को फैलाने के लिए जहां एक ओर व्यक्ति अपने मूल्यों के साथ भी समझौता करने के लिए तैयार हो जाता है। वहां आचार्यश्री महाश्रमण जैसे महापुरूष अपना प्रभाव और यश फैलाने वाले प्राप्त अवसरों में भी संतुलित रहते हैं। उनका मानना है कार्य जितना भी हो गुणवत्ता वाला होना चाहिए। मात्र संख्यात्मक वृद्धि को वे वास्तविक विकास का कारण नहीं मानते हैं।

तेरापंथ धर्मसंघ में रेपिड फोर्स के नाम से पहचानी जाने वाली समणश्रेणी की मांग विदेशों में बढ़ती जा रही है। लगभग 17-18 वर्षों से मायामी की जानी-पहचानी फ्लोरिडा इन्टरनेशनल युनिवर्सिटी में समणीजी अध्यापन करवा रही हैं। अन्य विदेशी युनिवर्सिटी जैसे घेण्ट, बर्मिंघम आदि अनेक जगह से भी आचार्यप्रवर के पास पत्र आते हैं कि आप अपनी शिष्या समणीजी को हमारी युनिवर्सिटी में भी पढ़ाने के लिए भेजे। यह आचार्यप्रवर के कीर्ति को फैलाने वाला अवसर है परन्तु आचार्यप्रवर का मानना है जितनी जगह अपने कार्य चल रहे हैं वे अच्छी तरह सम्पादित होते रहें। इतनी बड़ी-बड़ी युनिवर्सिटीज के ऑफर को ससम्मान लौटा देना उनकी निर्लिप्तता का द्योतक है, उनके संतोष गुण को प्रकट करने वाला प्रसंग है।

दसवेआलियं सूत्र में कहा गया-

''उवसमेण हणे कोहं,
माणं मद्दवया जिणे।
मायं चज्जवभावेण,
लोभं संतोसओ जिणे।।''

इस गाथा को केवल कण्ठों में ही नहीं जीवन में धारण करने वाले आचार्य श्री महाश्रमण के उत्कृष्ट साधना स्तर को शत्-शत् नमन। 51 वें दीक्षा कल्याण महोत्सव के शुभ अवसर पर हम आचार्यप्रवर से यही आशीर्वाद चाहते हैं कि हमारे कषाय प्रतनु होते जाएं और वैराग्य रूपी सुघोषा घण्टे का नाद हमें सदैव आत्म जागृति का संदेश देता रहे।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 मई - 26 मई , 2024

शुद्ध, ज्योतिर्मय, निरामय रूप को पाने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्राप्त किया आचार्य श्री महाश्रमण जी का आशीर्वाद

छत्रपति संभाजीनगर।
11 मई, 2024

छत्रपति संभाजीनगर प्रवास के अन्तिम दिन अध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्य श्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि समय तीन प्रकार का होता है भूत, भविष्य और वर्तमान। जो बीत चुका वह भूत हो गया, जो अब तक आया नहीं वह अनागत है और अभी जो समय बीत रहा है वह वर्तमान है।

जैन दर्शन में कहा गया कि हम एक आंख का निमेष करें इतने में संभवतः असंख्य समय बीत जाते हैं। सामान्यतया समय का मतलब है काल। जो समय बीत गया वो तो चला गया, भविष्य में जो समय है उसके लिए हम सतर्क हो सकते हैं कि हम उसका बढ़िया उपयोग करें। वर्तमान में जो समय है उसका भी हम अच्छा उपयोग करें।

आदमी कई बार आलस्य कर लेता है। करणीय कार्य को आगे के लिए छोड़ देता है। अच्छा काम, धर्म का काम, कल्याणकारी काम आज किया जा सकता है उसे आलस्य के कारण कल पर छोड़ देना उचित नहीं है। उठने के बाद प्रमाद नहीं करना चाहिए।

कल पर कार्य छोड़ने का विचार तीन आदमी कर सकते हैं। पहला- किसी की मौत के साथ दोस्ती हो जाये, दूसरा आदमी कहता कि मैं दौड़ने में तेज हूं, मौत मुझे पकड़ नहीं पाएगी। तीसरा आदमी कहता है कि मैं तो कभी मरूंगा ही नहीं, मैं तो अमर हूं। पर ये सब संभव नहीं हो सकता। तीर्थंकर भी एक दिन निर्वाण को प्राप्त होते हैं, फिर दूसरों की तो बात ही क्या हो सकती है। मंत्री मुनि श्री सुमेरमल जी स्वामी जी का पांच वर्ष पहले कल के दिन प्रयाण हो गया था। वे मंत्री मुनि के स्थान पर थे, बहुश्रुत परिषद के संयोजक थे, हमारे धर्मसंघ के वरिष्ठ संत थे, जीवन के नवमें दशक में उन्होंने अंतिम श्वास लिया था।

जो अच्छा कार्य आज किया जा सकता है, उसको आलस्यवश कल पर छोड़ देना हितावह नहीं है। कल का क्या भरोसा? मृत्यु होनी निश्चित है, पर कब होगी वह अनिश्चित है। मृत्यु का पहले पता नहीं चलना एक दृष्टि से सृष्टि की अच्छी बात है, अन्यथा कायरता या कमजोरी भी आ सकती है। काल और कल अज्ञात रहते हैं। यदि विरक्ति आ जाती है तो प्रवज्या की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। हम समय का बढ़िया उपयोग करने का प्रयास करें। संसार में बार-बार जन्म-मरण का क्रम चलता रहता है। वह समय महान होगा जब हम जन्म-मरण की श्रृंखला से हमेशा के लिए मुक्त हो जाएंगे, सिद्धत्व को प्राप्त हो जाएंगे। सिद्ध अवस्था को प्राप्त करने के लिए हमें शुद्धावस्था की ओर आगे बढ़ना होगा। शुद्ध, ज्योतिर्मय, निरामय रूप को पाने का प्रयास करें। सम्यक ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना करने से वह शुद्ध, ज्योतिर्मय, निरामय स्वरूप प्राप्त हो सकेगा। हम समता की साधना कर साम्य योगी बन जाएं तो हमें सिद्धरूप प्राप्त हो सकेगा।

समय के प्रवाह का हम अच्छा उपयोग करें। दुनिया का बढ़िया आदमी वह है जिसका समय बढ़िया बीतता हो। हमें यह मानव जीवन प्राप्त है। कल अनेकों लोगों ने वर्षीतप की सम्पन्नता की। मनुष्य जीवन में तपस्या का क्रम चलाना भी अच्छा है। जितना हो सके जप, तप, स्वाध्याय, ध्यान से निर्जरा करने का प्रयास करें। वर्षीतप एक अच्छा अनुष्ठान है, इसके साथ नियमों का पालन करने से तपस्या और महिमामंडित हो जाती है। हम समय का बढ़िया उपयोग कर बढ़िया आदमी बनने का प्रयास करें। पूज्य प्रवर के मंगल प्रवचन से पूर्व साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने कहा कि हमें संसारी आत्मा से मुक्त हो परमात्मा बनना है। संसारी आत्मा बंद कमरे के समान है, सिद्ध आत्मा खुले कमरे के समान है।

हमें कर्मों से मुक्त बनना है। सत्पुरुषों के मार्गदर्शन से हम मुक्त बन सकते हैं। पूज्यवर के प्रवचनों से हमें ऐसे रास्ते मिलते हैं, जिनसे हम बंधे कर्मों से मुक्त हो लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

(शेष पेज 5 पर)

दुर्लभ मानव जीवन में धर्म को नहीं छोड़ें : आचार्यश्री महाश्रमण

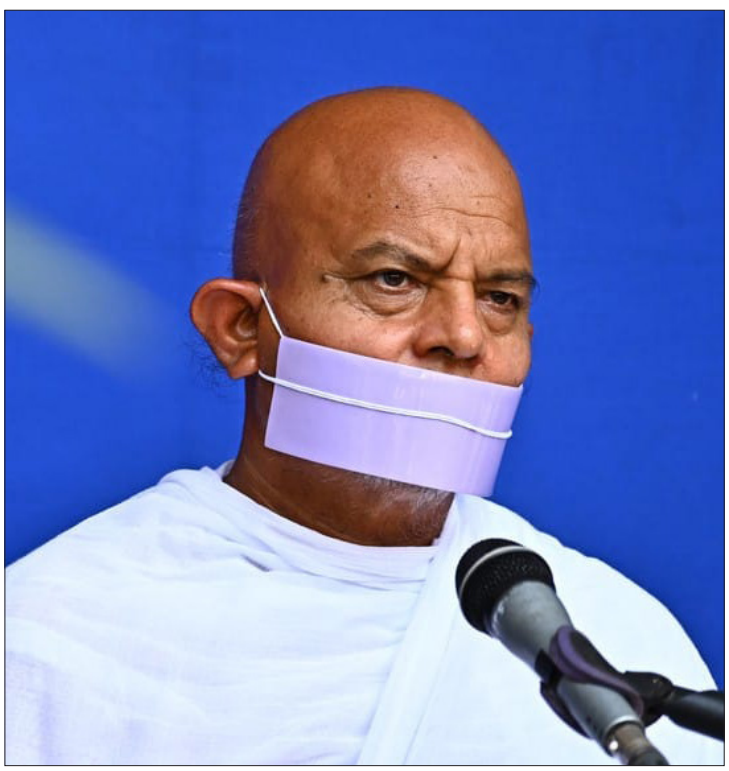

वरुलकाजी चिकलथान।
12 मई, 2024

पंच दिवसीय औरंगाबाद का पावन प्रवास संपन्न कर अध्यात्म के महासूर्य आचार्य श्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना के साथ जालना की ओर विहार करते हुए वरुलका जी चिकलथान पधारे। पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए परम पावन आचार्य प्रवर ने परमाया कि आदमी अकेला जन्म लेता है, और अकेला ही एक दिन अवसान को प्राप्त हो जाता है। व्यवहार में 2-3 साथ में भी आ सकते हैं, जा सकते हैं। भले दो साथ में जन्म जाएं पर दोनों की प्रकृति, शारीरिक स्वास्थ्य में अन्तर अपने-अपने कर्मों के हिसाब से हो सकता है। अकेला आना और अकेला जाना ये मानो हमारी सृष्टि का क्रम सा है। अपने कर्म स्वयं को भोगने पड़ते हैं। ज्ञातिजन, मित्रवर्ग, बेटे, भाई हैं पर एक आदमी कर्मों के योग से तकलीफ पा रहा है, सब पास में खड़े हैं पर वे वेदना को बांट नहीं पाते हैं।

हम अकेले हैं और हमें अभी मानव जीवन प्राप्त हैं। मानव जीवन को दुर्लभ बताया गया है, पर वह दुर्लभ अभी हमें सुलभ है। हम इस मानव जीवन का बढ़िया उपयोग कर आत्मा का कल्याण करने का कार्य करें। इस दुर्लभ मानव जीवन में जो धर्म को प्राप्त कर उसे वापस छोड़ देते हैं, वह आदमी अपने घर में कल्पवृक्ष को उखाड़ कर धतुरे के पौधे को लगाता है, चिन्तामणी रत्न मिल गया उसे नदी में फेंक कर कांच का टुकड़ा जेब में डालता है, श्रेष्ठ गजराज को बेचकर गधा खरीद लेते है। यह नासमझी की बात हो जाती है कि धर्म को छोड़कर लोग भोगों की तरफ दौड़ते हैं। कुछ विपत्ति-कठिनाई आ जाये पर आदमी को धर्म नहीं छोड़ना चाहिये। विपत्ति तो हमारे अशुभ कर्मों से आ सकती है, पर कभी-कभी धर्म की परीक्षा भी होती है, कि हम धर्म में कितने मजबूत हैं। विपत्ति हो या संपत्ति, धर्म को नहीं छोड़ना चाहिये। धर्म तो भव-भव में आत्मा का कल्याण कराने वाला, मुक्ति दिलाने वाला होता है। धर्म को छोड़े देंगें तो फिर हमारे पास बचेगा क्या? क्या हमें पाप की पोटली लेकर आगे जाना है? विपत्ति में समता रखें ताकि कर्म निर्जरा हो सके। कठिनाई तो बड़े- बड़े महापुरुषों के जीवन में आ सकती है, आई है। कठिनाई को हम कर्म निर्जरा का साधन बना लें, शांति-धैर्य रखें।

(शेष पेज 5 पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
20 मई - 26 मई , 2024

इक्षुरस जैसी मिठास सब के जीवन में रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

छत्रपति संभाजीनगर में हुआ अक्षय तृतीया महोत्सव का आयोजन

छत्रपति संभाजीनगर।
10 मई, 2024

वैशाख शुक्ला तृतीया, अक्षय तृतीया का पावन दिन। पूज्य प्रवर की सन्निधि में इस बार अक्षय तृतीया का समारोह छत्रपति संभाजीनगर (औरंगाबाद) में आयोजित किया गया। तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम् महासूर्य, महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अक्षय तृतीया के पावन पर्व पर पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए फरमाया कि जैन आगम दसवेआलियं के प्रथम अध्ययन की प्रथम गाथा है- धम्मो मंगल मुक्किट्ठं। इस गाथा में धर्म की महिमा बतायी गयी है। पहली महिमा है कि धर्म उत्कृष्ट मंगल है। दुनिया में मंगल का महत्व है पर उत्कृष्ट मंगल मिलना बहुत बड़ी बात है। दूसरी महिमा है कि उसे देवता भी नमस्कार करते हैं जिसका मन सदा धर्म में रमा रहता है। धर्म क्या है? अहिंसा, संयम और तप धर्म है। आध्यात्मिक संदर्भ वाला धर्म इन तीन शब्दों में समाविष्ट हो जाता है।

आज अक्षय तृतीया का दिन भगवान ऋषभ से जुड़ा दिन है, उनका प्रथम भिक्षा ग्रहण का दिन है। आज के दिन श्रेयांस कुमार द्वारा प्रथम दान दिया गया। वह प्रथम दान था इक्षुरस का। इक्षुरस जैसी मिठास सब के जीवन में रहे। भगवान ऋषभ ने समाज सेवा की, असि, मसि कृषि का प्रशिक्षण देने का कार्य भी किया। आदिनाथ ऋषभ ने गार्हस्थ्य का जीवन जीया और समाज उत्थान का कार्य किया और बाद में दीक्षा लेकर केवल ज्ञान भी प्राप्त किया। वे अध्यात्म जगत के महान नेता भी बन गए थे, प्रथम तीर्थंकर बन गए थे।

भगवान ऋषभ के जीवन से यह प्रेरणा ली जा सकती है कि हम भी यथायोग्य प्रशिक्षण देने वाले बनें। योगक्षेम वर्ष भी प्रशिक्षण का समय हो सकता है। देने वाले अच्छा प्रशिक्षण दें और लेने वाले अच्छी तरह प्रशिक्षण ग्रहण कर सकें तो अच्छा विकास हो सकता है। दूसरों को ज्ञान देना उपकार का कार्य हो सकता है। वर्षीतप करना साधना का प्रयोग है। अनेक साधु-साध्वियां, समणियां व गृहस्थ वर्षीतप की साधना करने वाले हैं। वर्षीतप करने वाले गृहस्थों के लिए कुछ नियम भी हैं, जो इस प्रकार हैं :

1. ॐ ऋषभाय नमः की 11 माला
2. आधा घंटा ध्यान
3. एक घंटा मौन
4. ब्रह्मचर्य की साधना
5. सचित्त एवं छः जमीकन्द का त्याग
6. पारणे के दिन रात्रि में चौविहार या तिविहार रखना
7. सुबह या सायं एक बार प्रतिक्रमण अथवा उस समय स्वाध्याय अथवा जप करना।
8. क्षमा की साधना, गुस्सा आ जाये तो पारणे के दिन चीनी अथवा नमक अथवा लाल मिर्च भक्षण का वर्जन।

वर्षीतप के साथ ये नियम जुड़ जाते हैं तो वर्षीतप रूपी पुरुष आभूषित हो जाता है। पूज्यप्रवर ने पिछले वर्षीतप की आलोयणा के रूप में 51 अतिरिक्त सामायिक करने की प्रेरणा प्रदान करवाई एवं आगामी वर्ष में वर्षीतप करने वाले तपस्वियों को प्रत्याख्यान करवाए। लगभग 285 तपस्वी वर्षीतप की पूर्णता के उपलक्ष में पूज्य प्रवर की सन्निधि में उपस्थित हुए। पारणार्थी तपस्वियों ने पूज्य प्रवर को इक्षुरस का दान देकर धन्यता का अनुभव किया।

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जैन परम्परा में तपस्या पर विशेष ध्यान दिया जाता है। भगवान ऋषभ ने भी तप तपा था। उनके तप के पारणे से जुड़ा आज का दिन है। तपस्या से आदमी अपनी विघ्न बाधाओं को दूर कर लेता है।

जब व्यक्ति अपनी आठ कर्म ग्रन्थियों को तपाता है, वह वास्तविक तप होता है। तपस्या ईहलोक के सुख, परलोक के सुख या यश व कीर्ति के लिए नहीं होनी चाहिए। तपस्वी का एक ही लक्ष्य होना चाहिए - कर्म निर्जरा।

मुख्य मुनिश्री ने कहा कि असंख्य-असंख्य वर्षों पहले भगवान ऋषभ ने जो अनुष्ठान किया था उसका अनुकरण आज भी सैंकड़ो-सैंकड़ो तपस्वी कर रहे हैं। भगवान ऋषभ एक विशिष्ट वैज्ञानिक थे। उन्होंने अनेक प्रकार की कलाएं सिखाई। उन्होंने महिला सशक्तिकरण का भी कार्य किया था। उन्होंने अहिंसोन्मुखी समाज का निर्माण किया था। वर्षीतप करने वाले साधक कषाय मंद करने का प्रयास करें। इस अवसर पर मुख्य मुनि प्रवर ने 'आयो आदिश्वर रे वर्षीतप तो पारणो' गीत का सुमधुर संगान किया।

साध्वीवर्या संबुद्ध यशाजी ने कहा कि भगवान ऋषभ विशिष्ट पथप्रदर्शक और आदिकर्ता पुरुष थे। उन्होंने धर्म और कर्म युग का प्रवर्तन किया था, आत्म साधना का पथ दिखलाया था। उन्होंने समाज, परिवार और व्यापार व्यवस्था का भी ज्ञान दिया था तो आत्मज्ञान भी दिया था। भोग के साथ त्याग का ज्ञान भी दिया था। साध्वीवर्याजी ने 'ऋषभ को वंदन बारंबार' गीत का सुमधुर संगान भी किया।

आचार्य प्रवर की सन्निधि में मुनि अजीत कुमार जी, मुनि राजकुमार जी, मुनि लक्ष्य कुमार जी, मुनि चिन्मय कुमार जी, साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी, साध्वी सन्मतिप्रभा जी एवं साध्वी रुचिरप्रभा जी ने अपने वर्तमान वर्षीतप को पूर्ण किया।

कार्यक्रम में आचार्य श्री महाश्रमण अक्षय तृतीया प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुभाष नाहर ने अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मंडल ने गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

पृष्ठ 4 का शेष

शुद्ध, ज्योतिर्मय, निरामय...

पूज्य प्रवर के दर्शनार्थ पहुंचे राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि आचार्य श्री महाश्रमण जी का दर्शन कर में लाभान्वित हुआ हूं। संतों ने अच्छा मार्ग दिखाकर इस राष्ट्र को मजबूत बनाने का काम किया है।

आपने समाज को दिशा दी है, आपने सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की जो बात बतायी है, उससे राष्ट्र का विकास हो सकता है।

जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित एवं आचार्य श्री महाप्रज्ञजी द्वारा लिखित ग्रन्थ 'जैन योग' का अंग्रेजी भाषा का संस्करण मुख्यमंत्री द्वारा पूज्य प्रवर को समर्पित कर लोकार्पित किया गया।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने इस संदर्भ में कहा कि आचार्य प्रवर ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के साहित्य को वांग्मय के रूप में संपादित करने का स्वप्न देखा था।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की 300 पुस्तकों को संपादित कर 121 पुस्तकों का वांग्मय प्रकाशित किया गया था। तब आचार्य प्रवर ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की 21 किताबों का अंग्रेजी में अनुवाद करने का स्वप्न देखा था। आज जैन योग के संदर्भ में पुस्तक पूज्य चरणों में उपरित हुई है।

पूज्य प्रवर की अभिवंदना में तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, तेरापंथ किशोर मंडल, तेरापंथ कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला के सदस्यों ने गीत का संगान किया।

सभा अध्यक्ष कौशिक सुराणा, अणुव्रत समिति से रूपा धोका एवं तेयुप अध्यक्ष अंकुर लूणिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। किशोर मंडल व ज्ञानशाला की प्रस्तुति हुई। मुनि चिन्मय कुमार जी ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि श्री दिनेशकुमार जी ने किया।

दुर्लभ मानव जीवन में...

जिनकल्पी साधु तो कष्ट को उदीर कर ले लेते हैं। जयाचार्य ने आराधना की ढाल में लिखा है-

जिन कल्पिक साधु, लियै कष्ट उदीरो रे।
तो आव्यां उदय, किम थाय अधीरो रे? भावै भावना।।

हमारे तो सहज में कष्ट आ गया तो सहन करें। कष्ट आने पर धर्म को न छोड़ें। धर्म देव हमेशा हमारे पास रहे। अहिंसा, संयम और तप धर्म है, इससे आत्मा का कल्याण करें। धन तो इस जीवन तक है, धर्म तो आगे भी साथ जाने वाला है।

पैसे के लिए गलत तरीके काम न लें, पाप न करें। आदमी काम अच्छा करता रहे, ताकि आत्मा का कल्याण होता रहे। हम सद्गति-सुगति की तरफ आगे बढ़ते रहें।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 मई - 26 मई , 2024

आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर विशेष

मोहन आज हुआ संन्यस्त

● साध्वी सुनन्दाश्री ●

मोहन आज हुआ संन्यस्त,
संतों का सान्निध्य सुपावन पाकर मार्ग प्रशस्त ।।

बने क्लास के ये मॉनीटर,
पढ़ने में भी अव्वल नम्बर,
स्पर्धा में प्रतिभागी बनकर,
होनहार विद्यार्थी कहलाए हरदम विन्यस्त।।

मिलकर सारे भाई-भाई,
धमा चौकड़ी खूब मचाई,
खेल कबड्डी छुपम-छुपाई,
गोल-गोल कंचों से खेले जीवन था अलमस्त ।।

नेमां की संतानें सारी,
चंचल किन्तु आज्ञाकारी,
मोहन था सबसे संस्कारी,
कार्यों का संपादन नियमित दिनचर्या थी व्यस्त ।।

चतुर्दशी वैशाखी आई,
मुनि सुमेर से दीक्षा पाई,
और उन्हीं से शिक्षा पाई,
हुए अग्रसर संयम पथ पर आत्मार्थी आश्वस्त ।।

महाव्रतों का पहना बाना,
समिति गुप्तियों को पहचाना,
निष्ठामृत से भरा खजाना,
स्थितप्रज्ञ एकाग्रचित्त अरू मितभाषी अभ्यस्त ।।

तुलसी महाप्रज्ञ का साया,
मानो सुखमय शीतल छाया,
महाश्रमण ने अविरल पाया,
विनयवंत मतिमंत संत के सिर पर गुरु का हस्त ।।

लय - निहारा तुमको कितनी बार

गण में दीवाली आई

● साध्वी चित्रलेखा ●

करूणा का अक्षय घट थामे, जन-मन को सहलाए।
अनुशासन की पुण्य ऋचाएं, मधुरिम स्वर में गाएं।।
गुरु गरिमा क्या बतलाएं।।

नयन युगल में पलते पल-पल नव्य सृजन के सपने,
बहे निरन्तर कलकल करते वत्सलता के झरने,
मनमोहक मुस्कान अजब अपनापन खूब लुटाए।।

चंदा निशि अरू रवि वासर का हरते हैं अंधियारा,
तेरा आभामंडल बांटे आठ पहर उजियारा,
सिद्धांतों से समझौते की बात न मन को भाए।।

देश-विदेशों की धरती पर अभिनव रंग लगाया,
यात्राओं का कीर्तिमान गढ़ नव इतिहास रचाया,
त्रिसूत्री आयाम शुभंकर स्वस्थ समाज बनाए।।

तुलसी महाप्रज्ञ से पाया अनुभव भरा खजाना,
भैक्षव गण की ऊंचाई को शिखरों तुम्हें चढ़ाना,
करो शासना युगों-युगों तक दिल-अरमान सुनाएं
दीक्षा-कल्याणक उत्सव पर मिलजुल सभी बधाएं।।

गुरु अतिशय मंगलकारी है

● साध्वी मधुस्मिता ●

महातपस्वी महाश्रमण गुरु अतिशय मंगलकारी है।
दीक्षा कल्याणक उत्सव पर विकसित गण फुलवारी है।।

एक सूर्य रो तेज प्राप्तकर जियां हजारां कमल खिले,
एक मेघ रै सिंचन स्यूं लाखां बेलां तरू फुलै-फलै।
मुस्कानां रै झरने स्यूं आकर्षित दुनियां सारी है।।

तीन देश तेइस राज्यां नै कोमल चरणां स्यूं परस्या,
अद्भुत तृप्ति मिली जनता नै जन-जन मन उपवन सरस्या।
नशामुक्ति अभियान चलायो हितकारी सुखकारी है।।

करूणा सागर सौम्य सुधाकर शीतलता बरसावै है,
उजलो आभामंडल आधि व्याधि नै दूर भगावै है।
सत्यनिष्ठ श्रेयस्कर चिन्तन युग तसवीर संवारी है।।

संघ सदन रै प्रांगण में श्रद्धा रा मोती उछले आज,
तप जप संयम दीप जलाकर पुलकित प्रमुदित सकल समाज।
नाज घणो पा सुखद शासना जागी किस्मत म्हारी है।।

लय : कलियुग बैठा मार कुंडली

महापथिक को आज बधाएं बारम्बार

● साध्वी मनीषाप्रभा ●

युगप्रधान योगीश्वर के चरण कमल में वंदन शत बार।
महानिर्ग्रंथ के महापथिक को आज बधाएं बारम्बार।

संयम की गोल्डन जुबली पर वर्धापित करता मन का पोर-पोर,
अवनि अम्बर में छाई खुशियां आज घटा घनघोर।
गुरु महाश्रमण का पाकर पुलकित मन का कोर-कोर,
प्रकृति का कण-कण भी हरियल चुनर ओढ़कर लाई नई बहार।।

गुरु महाश्रमण से जुड़ती रहे जन्म जन्मों की इकतारी,
सांस-सांस में वास तुम्हारा नाम तेरा विघ्न बाधा हारी।
गुरुभक्ति शक्ति में आप्लावित हो सदा तेरी शरणहारी,
पावनचरणों में जो सदा रहता मिट जाता भवोदधि संसार।।

दुग्धस्नान संन्यास का वर्णन करूं ऐसा जग में शब्द कहां?
अरबों खरबों न्यूरोन्स से वंदन करूं ऐसा स्वर उपलब्ध कहां?
अध्यात्म के महासमंदर को माप सकूं ऐसा प्रज्ञालब्ध कहां?
संयम की सरिता में नित नए रत्न खोजू दे दो प्रभों! आशीर्वर।।

जय महाश्रमण भगवान

● साध्वी काव्यलता ●

जय महाश्रमण भगवान।
तव चरणों में अर्पित मेरे तन मन प्राण।

जन्मभूति सरदार शहर में दूगड़ कुल विख्यात।
तुलसी महाप्रज्ञ गुरु पाये कृपा निधान।।

जिनशासन यश झण्डी शिखरों फहराई।
कल्याणी वाणी से जग पाता परित्राण।।

करूणा रस से भीगा रोम-रोम तेरा।
तेरापंथ अधिनायक! करूं सतत सम्मान।।

दीक्षा कल्याणक दिन गणवन में पुलकन।
प्रमुदित मन गुण गाऊं भक्ति भरा संगान।।

रोम-रोम में खिली मुस्कान

● 'शासनश्री' साध्वी सोमलता ●

रोम-रोम में आज खिली मुस्कान है।
स्वणोत्सव पर संघ क्षितिज पर उतरी स्वर्ण विहान है।।

अनुकंपा के आसमान में चांद सितारे चमक रहे।
वत्सलता के बागवान में सुमन हजारों महक रहे।
महाश्रमण-2, चरणों में प्रणत जहान है।।

परम पुरूष ने पुरूषार्थी जीवन में भर उल्लास नया।
खून पसीने की स्याही से रचा दिया इतिहास नया।
अमर अहिंसा-2,अणुव्रत रथ गतिमान है।।

तुलसी महाप्रज्ञ के कर कमलों ने जिसे तरासा है।
संयम सुधा पिलाकर मिटा रहा जन्मों की प्यासा है।
सांस-सांस में-2, गूंजे आगम ज्ञान है।।

धर्मसंघ में नई उमंगें नया जोश उत्साह है।
दीक्षोत्सव पर खुले उन्नति की आध्यात्मिक राह है।
सब गायें-2, तेरापंथ संघ महान है।

लय- आने वाले कल की

महामहिम को शीष नवाएं

● साध्वी प्रेक्षाप्रभा ●

महातपस्वी गुरुवर पाए, महामहिम को शीष नवाएं।
शांतिदूत, नेमा सपूत को, पाकर दिल हरसाए।।

मोहन से बन गये मुदित, मुनि मुदित से महाश्रमण,
संघ शिरोमणि, समता शेखर, महके तेरा गण चमन।
भावों के भक्ति थाल सजाएं।।

आगम आस्था, सम्यक् रास्ता, मंजिल तक पहुंचाए,
परम ध्येय की पुनीत साधना, पथ पर कदम बढ़ाएं।
अन्तर ज्योति दीप जलाएं।।

साधना के सुरतरू तेरी, संयम तपमय छांव भली,
चरणों में पावन परिमल पा, मन की कली-कली खिली।
उपशम आभा में रम जाएं।।

सव्वभूयखेमंकरी, मंगलमय यात्रा प्यारी,
आभारी हर दिल का गुंजन, प्रभुवर महाउपकारी।
जीवन गुलशन को विकसाये।।

संयम शक्ति, जिनवर भक्ति, अभय मैत्री मन भाए,
अनासक्ति की विमल साधना, नूतन रंग रचाए।
श्रम सुरभि से गण महकाए।।

दीक्षा कल्याणक उत्सव है, मंगल गाएं बधाएं,
क्रोड दिवाली राज करो प्रभु, सुयश दशों दिशाएं।
हर क्षण शुभ सन्निधि हम पाएं।।

लय - झिलमिल सितारों

साझपति बने मुनि मुदितकुमार (सरदारशहर)

वैशाख शुक्ला चतुर्थी, वि. सं. 2081, औरंगाबाद

साध्वीप्रमुखाश्री जी आदि साध्वियां प्रातः वंदना हेतु पूज्यप्रवर के उपपात में पहुंची। वंदना के बाद साध्वीप्रमुखाश्री जी ने निवेदन किया- सतियां एक गीत गाना चाहती हैं। गीत की एक प्रति पूज्यप्रवर के हस्त कमल में दे दी। ऐसा लगा उसे देखकर आचार्यश्री को हर्ष हो रहा था। गीत के बोल इस प्रकार हैं-

साझ बणायो रे।

हां कै, साझ बणायो रे म्हारै मुदित मुनि रो साझ बणायो रे।।

चौथ वैशाखी दो हजार तैंयाली रो शुभ दिन आयो,
ब्यावर तेरापंथ भवन इतिहास सुहायो रे।

अर्हत् वंदन बाद प्रभुवर ध्यान साधनालीन बण्या,
सुण्यो शब्द गोष्ठी रो मनड़ो प्रश्न उठायो रे।।

इं गोष्ठी में गुरुवर कांई म्हारो साझ बणासी के?
सहज सरल आत्मा भावी आभास करायो रे।

साझपति री करो वन्दना गुरुवर तुलसी फरमायो,
ऋषभ मुनि धर्मेश मुनि रो भाग्य सवायो रे।।

मन में घणी खुशी ही प्रभु रे पाणी संत पिलासी रे।
भाणो होसी अब तो म्हारो मन हरसायो रे।।
पूछ-पूछकर काम करसी मन हरसायो रे।।

साझपति अब शासनस्वामी साझ दियो देता रहिज्यो,
बडै भाग स्यूं पायो शीतल सुखकर सायो रे।।
(तर्जः होली आई रे)

गीत की परिसम्पन्नता के बाद :
पूज्यप्रवर ने फरमाया - आज के दिन ही साझ बनाया गया था।
साध्वीप्रमुखाश्रीजी- ऋषभ कुमारजी स्वामी बहुत भाग्यशाली हैं। इनको दीक्षा लेते ही पूज्यप्रवर के साथ दे दिया। 38 वर्षों से रात-दिन साथ रहते हैं। ऐसे बहुत कम व्यक्ति होते हैं जिन्हें ऐसा दुर्लभ अवसर मिलता है। पूज्यप्रवर! साझपति बनाने पर आपको बहुत खुशी हुई थी कि संत मुझे पानी पिलाएंगे...
आचार्य प्रवर - हां ! मुझे अतिरिक्त प्रसन्नता हुई थी।
साध्वीप्रमुखाश्रीजी - अब तो गुरुदेव को कोई पानी पिलाता है तो गुरुदेव सोचते हैं कि मेरे लिए इसे कोई कष्ट न हो।
आचार्य प्रवर - उस समय मेरी उम्र छोटी थी। लगभग 24 वर्ष पूरे होने वाले थे। गुरुदेव तुलसी कितना ध्यान देते थे कि किसका साझ बनाना है आदि।
सुमतिप्रभाजी - आचार्य प्रवर को तो पहले ही ध्यान में आभास हो गया था।
आचार्य प्रवर - हां। उस समय मुझे दोनों (ऋषभमुनि, धर्मेशमुनि) छोटे संत दिए थे। कोई बड़ी उम्र वाला नहीं था।
सुमतिप्रभाजी - कई-कई व्यक्ति इतने उपयोगी निकल जाते हैं कि पूरे संघ को निश्चित कर देते हैं।
साध्वीवर्याजी - पहले तो गुरुदेव तुलसी को चिंता थी कि यह कैसे काम करेगा।
सुमतिप्रभाजी - साझपति से पहले आपको अन्तरंग सहयोगी बना दिया था।
आचार्य प्रवर - साझ से बड़ी बात तो यह है। साझ तो औरों का भी बनता है पर वैसा निर्णय तो किसी-किसी का ही होता है।
साध्वी वर्याजी- गुरुदेव तुलसी ने फरमाया था कि ऊपर जाकर भी देखूंगा।
आचार्य प्रवर- उस दिन गुरुदेव जमीन पर ही विराजे हुए थे। मैं भी वहीं था साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी भी वहीं थे। हम दोनों को महत्वपूर्ण सेवा कराई थी। फिर फरमाया था कि ऊपर जाकर भी देखूंगा।
कीर्ति कुमारजी -ऐसा लगता भी है कि गुरुदेव ऊपर से देखते हैं।
आचार्य प्रवर- ऐसा लगता है क्या?
कीर्ति कुमार जी - तहत्।
साध्वीप्रमुखाश्रीजी- आचार्य प्रवर ने दीक्षा लेते ही 12 साल तक विशेष ध्यान साधना की। ऐसा लगता है उसका फल यहीं मिलने लग गया। उस साधना से आपने बहुत सारी पुण्याई अर्जित की है।
आचार्य प्रवर - उन 12 वर्षों में ज्यादा समय अध्ययन, स्वाध्याय, सीखना आदि में बीता। संस्कृत के ग्रंथ पढ़े। मैंने कालूकौमुदी को वृत्ति सहित याद किया। भिक्षुशब्दानुशासनम् को प्रायः कंठस्थ किया, सात अध्ययन पूरे व 8वें का भी कुछ-कुछ याद किया। संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी भाषा का अध्ययन किया और ध्यान-साधना में समय लगाया।
साध्वी वर्याजी- आचार्य प्रवर ने उस दौरान थोड़ी सेवा भी की थी। धर्मरुचि जी स्वामी की सेवा में आप रहे।
आचार्य प्रवर- पहले मैं मधुकरजी स्वामी के पास रहा। फिर 3 साल तक रूपचंदजी स्वामी के पास रहा। वहां टाबर संतों में मैं ही था। वहां पर कूंडा, बाल्टी लाना, प्रथम प्रहर में दूर गोचरी जाना, पानी लाना, परिष्ठापन करना आदि काम करता था।
साध्वीप्रमुखाश्रीजी- क्या आचार्य प्रवर उपदेश भी देते थे?
आचार्य प्रवर- जोधपुर चतुर्मास में गुरुदेव ने फरमाया था कि मेरे से पहले तुम उपदेश दे दिया करो। न्यारा में भी थोड़ा बोलता था, ढाल गाता था।
दिनेश कुमारजी स्वामी- जोधपुर में वहां के मिश्रीमलजी भंसाली ने भी आपके लिए कहा था कि ये संघ के भविष्य बनेंगे।
आचार्य प्रवर- युवाचार्य महाप्रज्ञजी अध्ययन करवाते थे। उसमें मैं भी एक था। 12 सालों में गुरुदेव के पास कालूयशोविलास आदि की रागें सीखी। कई सतियां आती थी। शारदाश्रीजी आदि भी आती थी। मैं भी रागें सीखता था। लेख लिखता था। उस समय सन्तों में एक पाठ्यक्रम चलता था। उसका व्यवस्थापक मैं था। सतियों में शायद जिनप्रभाजी थे। उस समय युवाचार्य महाप्रज्ञजी ने व्यवस्थित अध्ययन शुरु करवाया। हमने सबसे पहला ग्रन्थ पढ़ा 'ज्ञान बिन्दु प्रकरण'। उसमें साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी भी आते और भी सन्त-सतियां, समणीजी भी आते। उस दौरान प्रमाण मीमांसा, प्रमाणनय तत्त्वालंकार, शांत सुधारस, सन्मति तर्क प्रकरण की टीका, अध्यात्मोपनिषद् का अध्ययन किया। आचार्य यशोविजय जी का भी एक ग्रंथ पढ़ा था। जिसमें षड्ऋतु की बात थी और गृहस्थ के लिए अति धर्म, अति अर्थ और अति काम भी ठीक नहीं है यह भी उस ग्रंथ में था। पातंजल योग दर्शन भी पढ़ा।
साध्वीवर्याजी - (साध्वी प्रमुखाश्रीजी की ओर) क्या आप भी साथ में अध्ययन करते थे?
आचार्य प्रवर- हमेशा तो साथ में नहीं रहते थे। आप समणी थे। जब कभी लाडनूं या गुरुकुल में आते तब साथ में अध्ययन करते।
साध्वीप्रमुखाश्रीजी - आचार्य प्रवर! एक बार धर्मरुचि जी
स्वामी ने फरमाया- आचार्य श्री बहुत अच्छे सेवक हैं। जिस समय मेरी सेवा की थी उस समय छोटे बच्चे थे। मेरी इतनी जागरूकता से सेवा की। जो व्यक्ति सेवा देना जानता है वही दूसरों से सेवा करवा सकता है।
इस प्रकार एक छोटा सा कार्यक्रम जैसा हो गया।

प्रस्तुति - साध्वी विशालयशा

गुरु सन्निधि के उजले पल

आचार्य प्रवर का 03.04.2024 को पूना से विहार हो गया, किन्तु साध्वीप्रमुखाश्री जी आदि 16 साध्वियों का प्रवास पूना में ही हो रहा था। चूंकि 25 मार्च 2024 को पिंपरी चिंचवड़ में साध्वीप्रमुखाश्री जी के पैर में तकलीफ हो गई थी।

4 अप्रैल को प्रातः वंदना के समय पूज्य प्रवर ने फरमाया - साध्वीवर्या! हम तुमको अवकाश नहीं दे रहे हैं, किन्तु अब तुम मध्यान्ह में ठिकाने में रहा करो। तब वहां उपस्थित साध्वियों ने निवेदन किया - गुरुदेव! क्या हम मध्यान्ह सेवा उपासना में आ सकते हैं?

गुरुदेव - साध्वियां चाहें तो सेवा में आ सकती है।

साध्वियों ने लाभ उठाया। प्रायः हर रोज पूज्य प्रवर कुछ समय अपना काम करने के बाद साध्वियों को कुछ न कुछ पुछवाते, चर्चावार्ता करवाते या किसी विषय को, आगम या अन्य ग्रन्थों में खोजने के लिए फरमाते। पूज्य प्रवर की अलग-अलग विषयों पर चर्चा चली जैसे-

- ईश्वरवाद की अवधारणा
- मूर्तिपूजा की अवधारणा
- द्रव्य, स्थापना, नाम व भाव निक्षेप
- आचार्यों के छत्तीस गुण
- ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग
- पुण्यानुबंधी पुण्य आदि चार भांगे
- द्रव्यपूजा-भावपूजा
- पुण्य-निर्जरा की चर्चा
- तेरापंथ का परिचय व सिद्धांत
- मुख्यमुनिश्री द्वारा गुणस्थानों पर चर्चा ... आदि।

इस प्रकार कई विषयों पर जिज्ञासा समाधान चला। 5 मई को आचार्य प्रवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए साध्वियों ने मध्यान्ह सेवा में एक गीत का संगान किया। गीत के बोल इस प्रकार हैं -

समता के सागर से पाए नित मोती उजले,
सुन्दर शिक्षाओं को पाकर मन के सुमन खिले।।

1. साध्वीप्रमुखाश्रीजी बिन हम कैसे सेवा कर पाएं?
साध्वीवर्या रहे ठिकाने सतियों का मन मचलाए।
मिली मितावग्रह में सन्निधि शत-शत नमन करें।।
2. मई अप्रैल महीना जग में गरमी का अहसास है,
लेकिन हम सतियों ने पाया सावन-सा सुखवास है।
ठण्डी-ठण्डी शीतल नजरें मन का ताप हरे।।
3. द्रव्य पूजा नहीं करेंगे भाव पुजारी बनाना है,
ईश्वर नहीं है जग का कर्ता, प्रज्ञा जागृत करना है।
पुण्य-पाप के भांगे तोड़ें, स्व कल्याण करें।।
4. मुख्य मुनि की पहली कक्षा गुणस्थान को सिखलाया,
परमेष्ठि पंचक के गुण का श्लोक सिखाकर रटवाया।
आचार्यों के गुण छत्तीस कहां कहां मिले ?
5. हॉस्टल बॉर्डिंग में क्या अंतर, निक्षेपों को बतलाया,
पुण्यों की वांछा नहीं करना, निर्जरा गुर सिखलाया।
आठों कर्मों के दर्पण से खुद को हम परखें।।
6. इंट्रोडक्शन तेरापंथ का, सिद्धांतो को समझाया,
ज्ञान, कर्म और भक्ति योग का मार्ग एक है बतलाया।
ठण्डा पानी पी लो सतियां प्रभु फरमान करे।।
तेला करने वालों को ही मिलता गुरु से ग्रास है,
परोक्ष में भी कभी-कभी बकसाते पात्री खास है।
कोरा कागज गुरु कर से पा हो गए हरे भरे।।
कुछ बाकी है उनकी रीति गगरी आज भरे।।
शीतल सुखकर सन्निधि तेरी लगती सबको मनहारी,
सुनकर तेरी मधुरिम वाणी जुड़ती मन की इकतारी।
इंगित के आराधक बनकर प्रभु दिल वास करें।।
कृपा कराई प्रभु सवाई आगे यूं ही करवाएं,
तत्त्वज्ञान और ग्रन्थों की बातें यू ही बतलाएं।
जब ही हो अवकाश आपको हमको याद करें।।

(लय - अणुव्रत है सोया संसार)

उस समय वहां साध्वीवर्याजी सहित 22 सतियां उपस्थित थी।

(शेष पेज 18 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
20 मई - 26 मई, 2024

जिनका सब कुछ अनुत्तर है

● साध्वी कल्पलता ●

वे व्यक्ति सौभाग्यशाली होते हैं, जो आधि, व्याधि और उपाधि से संकुल संसार में सुरक्षा कवच के रूप में संयम की उजली चादर ओढ़ने का अवसर पा लेते हैं। संयम की चादर अपने-आप में उजली होती है। वह जीवनभर उसी रूप में बनी रहे, इसके लिए अपेक्षित है अभीक्ष्ण जागरूकता की। 'दिवा वा राओ वा, एगओ वा परिसागओ वा, सुत्ते वा जागरमाणे वा'- इस आगमवाणी को प्रहरी बनाने वाला साधक इतना अप्रमत्त होता है कि उसकी चद्दर पर कोई धब्बा लग ही नहीं सकता।

अनुत्तर संयम के साधक

आचार्य महाश्रमण की संयम-साधना अनुत्तर है, क्योंकि वे अपने स्वीकृत आचार की छोटी से छोटी बात को भी नजरअंदाज नहीं करते। वे सूक्ष्म-दृष्टि से संयम की आराधना में सजग रहते हैं। ऐसा लगता है कि वे श्वासोच्छ्वास भी पूरी सजगता से लेते हैं। वे कितना ही प्रलम्ब विहार करके आए हों, कुर्सी या पट्ट पर आसीन होने से पहले उनकी नजर स्थान और परिधान का प्रतिलेखन किए बिना नहीं रहती। इससे भी आगे की बात यह है कि रात्रि के समय करवट लेते समय भी स्थान का परिमार्जन उनकी स्मृति से ओझल नहीं होता।

धर्मसंघ के एकमात्र अधिनेता और अनुशास्ता होने के कारण उन्हें कभी किसी को उपालम्भ या प्रायश्चित्त भी देना पड़ता है, पर अगले ही क्षणों में उन पर कृपा/आशीर्वाद का अमृत बरसाकर उसके मुरझाए चेहरे पर गुलाब खिला देते हैं। अनुशासनात्मक कारवाई करने के अवसर पर भी उनकी आकृति, वाणी और भाव-भंगिमा पर वीतरागता की आभा खिली हुई रहती है।

अनुत्तर उपषमभाव के आराधक

आचार्यवर का उपशमभाव बेजोड़ है। उनके पास संवेग-नियंत्रण की अद्भुत क्षमता है। उनकी पछेवड़ी में सलवटें दिखाई दे सकती हैं पर उनके जीवन में रची-बसी सरलता और कोमलता में घृणा, द्वेष, नफरत की एक भी ग्रन्थि परिलक्षित नहीं होती। किसी भी चिन्तन, निर्णय एवं क्रियान्वयन से पहले और पीछे आचार्यवर का उपशम भाव बाधित या प्रभावित नहीं होता। इसीलिए उनके पवित्र आभावलय के चारों ओर उपशम रस की धाराएं बहती रहती हैं और उनकी सन्निधि में पहुंचने वाला व्यक्ति अकल्पित शांति का अनुभव करता है।

अनुत्तर पवित्रता के पुंज

कहा जाता है कि शेरनी के दूध को टिकाकर रखना है तो वह स्वर्णपात्र में ही सुरक्षित रह सकता है। शेरनी के दूध की तरह धर्म का कल्पवृक्ष भी पवित्रता की धरती पर ही पनप सकता है। 'धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ' यह आगम सूक्त भी इसी तथ्य को प्रमाणित करता है। आचार्यवर के अन्तःकरण की नैसर्गिक पवित्रता के कारण अनुकूलता की स्थिति में अतिरिक्त आह्लाद की अभिव्यक्ति नहीं होती और प्रतिकूलता में खिन्नता का दर्शन नहीं होता। प्रत्युत् उनमें सिद्धयोगी-सी सहजता, स्थिरता और एकाग्रता निरन्तर बनी रहती है। आचार्यश्री के भीतरी रसायन की तासीर इतनी पवित्र है कि उनकी इंद्रियां और मन कभी सुविधा का लिबास ओढ़ने को उत्सुक ही नहीं होता।

आचार्यवर की पवित्रता में ऐसा चुम्बकीय आकर्षण है, जो दूर-दराज से ही लोगों को अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है।

कुछ पलों का साक्षात्कार करने वाला व्यक्ति भी उनका पवित्र मुखमण्डल देखकर आनन्द से भर जाता है। जिन व्यक्तियों को चरण-स्पर्श करने और बात करने का अवसर मिल जाता है, उनकी खुशी का तो कहना ही क्या? आचार्यश्री की पवित्रता के निर्मल नीर से अभिस्नात व्यक्ति का रोम-रोम उनकी पवित्र ऊर्जा और प्रसन्नता से भर जाता है। निरन्तर उनके पवित्र आभामंडल में रहने वालों को जिस अलौकिक सुख, समाधि और शान्ति का अनुभव होता है, वह अनिर्वचनीय है उसे शब्दों में प्रस्तुति दी जा सके, यह संभव नहीं लगता।

अनुत्तर क्षमाधर्म के पर्याय

जैन आगमों में दस प्रकार के श्रमणधर्म का उल्लेख है। उनमें प्रथम श्रमणधर्म है क्षान्ति, क्षमा। क्षमा का अर्थ है- सहनशीलता। आचारांग सूत्र के अनुसार निर्ग्रन्थ वह होता है जो शीत और उष्ण को सहन करता है। यहां शीत एवं उष्ण शब्द प्रतीकात्मक है। वास्तव में ये शब्द अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियों के वाचक हैं। आम आदमी अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में विचलित हो जाता है पर निर्ग्रन्थ मुनि के लिए आवश्यक है कि वह हर स्थिति में सन्तुलित रहे। यह सिचुएशन मैनेजमेंट का सिद्धान्त है, जो साधक परिस्थितियों को मैनेज करना जानता है, वह उन पर विजय प्राप्त कर सकता हे। पर ऐसा होना तभी संभव है, जब व्यक्ति में उच्च स्तर की सहनशीलता हो।

आचार्य महाश्रमण श्रमणधर्म (निर्ग्रन्थ धर्म) की आराधना के प्रति सहज रूप में सजग हैं। क्षुधा-पिपासा, सर्दी-गर्मी जैसी प्राकृतिक परिस्थितियां कभी उनके तन पर हावी नहीं होती। इस मानसिक दृढ़ता के कारण उन्होंने अपने शरीर को भी उसी रूप में साध लिया। इस दृष्टि से उनको परीषहजयी कहा जा सकता है। शास्त्रों में साधु के लिए बाईस परीषह बताए गए हैं। जो साधक इन परिषहों से प्रकम्पित नहीं होता, वह जीवन की किसी भी परिस्थिति में विचलित नहीं हो सकता। वह तो इस भाषा में सोचता है-

चलें चलो मौसम हुए, कब किसके अनुरूप?
एक मुसाफिर के लिए, क्या छाया क्या धूप।।

आचार्य महाश्रमण की क्षमा अनुत्तर है। एक संघ के अधिनेता/अनुशास्ता के सामने कैसी-कैसी परिस्थितियां पैदा हो सकती हैं, इस बात को न तो सब लोग जानते हैं और न अनुभव ही कर पाते हैं।

उन विषम परिस्थितियों में मन के संतुलन को साधकर रखना सहनशीलता की सबसे बड़ी कसौटी है। आचार्य महाश्रमण के लिए वह कसौटी भी अकिंचित्कर है। उनका मानसिक संतुलन भी गजब का है।

आचार्य महाश्रमण के जीवन को किसी भी कोण से देखा जाए, उनका सब कुछ अनुत्तर प्रतीत होता है। उनके अनुत्तर क्षमाधर्म की सहस्रों-सहस्रों रश्मियां तेरापंथ धर्मसंघ में ही नहीं, संपूर्ण मानव जाति में सहनशीलता के भाव संप्रेषित करती रहे।

अध्यात्म के ऐसे अनुचर महासूर्य के दीक्षा कल्याणक महोत्सव पर अन्तः करण की असीम आस्था के साथ मंगलकामना करती हूं कि आप चिरायु हो और दीर्घकाल तक तेरापंथ धर्मसंघ को महिमामंडित करते रहें।

तीन चीजें बाजार में नहीं, गुरु सन्निधि में मिलती है

● साध्वी कीर्तिलता ●

स्वामी रामतीर्थ जीवन व मृत्यु के झूले में झूल रहे थे। शिष्यमंडली गुरु सेवा में अहर्निश लगी हुयी थी, तभी कुटिया के बाहर एक बुढ़िया स्वामी रामतीर्थ से सेवा पाने की इच्छुक बनकर करूण पुकार करने लगी। रामतीर्थ के कर्ण युगल ने जैसे ही बुढ़िया के करूणार्द्र स्वरों को सुना, तत्काल शैय्या से उठ खड़े हुए। शिष्यों ने निवेदन किया- प्रभो! आप स्वयं बीमार हैं, आप ये क्या कर रहे हैं? रामतीर्थ ने कहा- शिष्यों! मेरी जिन्दगी का अंतिम क्षण भी किसी की सेवा में लगता है तो इससे बढ़कर मेरा और क्या सौभाग्य होगा।

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी का पूरा जीवन भी स्वामी रामतीर्थ की तरह ही करूणा व संवेदना से ओत-प्रोत है। जैन हो या अजैन, साधु हो या साध्वी, श्रावक हो या श्राविका, कोई भी पीड़ित हो तो आपश्री का करूणार्द्र ह्रदय द्रवित हो जाता है। पीड़ितों को दर्शन देने के लिए स्वतः ही चरण गतिमान हो जाते हैं चाहे फिर उसके लिए 4-5 किमी का चक्कर भी लेना पड़े।

मुम्बई मर्यादा महोत्सव के अवसर पर एक साध्वीजी का नीचे गिरने से फ्रेक्चर हो गया। जैसे ही पूज्य प्रवर को इसकी सूचना मिली गुरुदेव अविलम्ब दर्शन देने के लिए प्रस्थान करने लगे। यह है आपश्री की सेवा परायणता।

सन् 2021 का हमारा चतुर्मास तेरापंथ धर्मसंघ के सप्तमाचार्य आचार्य डालगणी की जन्मस्थली उज्जैन में हुआ। ठाट-बाट से तेरापंथ भवन में प्रवेश हुआ, कार्यक्रम भी शानदार रहा पर जैसे ही कार्यक्रम सम्पन्न हुआ साध्वी शान्तिलताजी को बुखार आ गया। थोड़ी देर बाद मेरे असाता होने लगी, फिर साध्वी पूनमप्रभाजी व साध्वी श्रेष्ठप्रभाजी को भी कठिनाई हुयी।

चारों ऐसे अस्वस्थ हुए कि दो दिन तक नांगले-झोलके भी व्यवस्थित नहीं रख पाए। उपचार करने पर तीन साध्वियां तो स्वस्थ हो गई पर मुझ पर दवाई का कोई असर नहीं हो रहा था।

आखिर पूज्यप्रवर एवं साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभाजी को वस्तुस्थिति की पूरी जानकारी निवेदन करवाई।

पूज्यप्रवर व शासनमाता का संदेश प्राप्त हुआ। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि जैसे ही तुम्हारा संदेश मिला मैंने साध्वी वर्या को इंगित कर मंगलपाठ आदि का समुच्चारण कर दिया है। मनोबल रखना चाहिए और परम पूज्य डालगणी की सात माला रोज यथासंभव प्रातराश से पहले-पहले जप लेनी चाहिए।

सात माला पूरी होने के बाद यह बोल देना चाहिए 'परम पूज्य गुरुदेव डालगणी प्रवर! हम तो आचार्य प्रवर के निर्देश से उज्जैन में चातुर्मास कर रहे हैं तो हमें यहां कठिनाई क्यों हो रही है? आप ध्यान दिरायें।' सब साध्वियां स्वास्थ्य का ध्यान रखें, अच्छी साधना करें। यह है आचार्य प्रवर की करूणा, आत्मीयता व वत्सलता। पूज्यप्रवर ने सभी में ऐसा आत्मविश्वास जगाया कि चन्द दिनों में ही मैं पूर्ण स्वस्थ हो गई।

कहा गया कि तीन चीजें बाजार में नहीं मिलती। कॉफिडेन्स (आत्मविश्वास), करेज (साहस) व केरेक्टर (चरित्र), ये मिलती हैं अध्यात्म व गुरु सन्निधि रूपी बाजार में। प्रभो! मैं आपकी श्रम निष्ठा को नमस्कार करती हूं, आपकी आचार निष्ठा को शत्-शत् प्रणाम करती हूं, दीक्षा की इस अर्धसदी पर प्रभो! मैं आपकी करूणा व सेवा परायणता को नमस्कार करती हूं।

❖ व्यक्ति नशे के दुष्परिणामों को समझ ले तो नशे की लत से छुटकारा मिल सकता है। गलत कार्यों में व्यक्ति धन का नियोजन क्यों करें?

-आचार्य श्री महाश्रमण

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 मई - 26 मई , 2024

आचार्यश्री महाश्रमण जी के संसारपक्षीय परिवारजन की श्रद्धाभिव्यक्तियां

पूर्वजन्म का संस्कार तथा वर्तमान का संयोग

पूर्वजन्म का संस्कार तथा वर्तमान का संयोग जब दोनों का मेल हो तभी वैराग्य के अंकुर फूटते हैं। बालक मोहन में पूर्व जन्म के संस्कार तो थे ही वर्तमान में मुनि पानमलजी जैसे संतो का संयोग मिल गया, दोनों बातें मिलकर आपको अपने लक्ष्य की तरफ आगे बढ़ाने लगी।

मुनिश्री पानमलजी बच्चों को कहानियों के माध्यम से दीक्षा लेने की प्रेरणा दिया करते थे। बालक मोहन भी वैरागी बन गया। तेरापंथ धर्मसंघ में अभिभावकों की ओर से आज्ञा पत्र प्राप्त होने के बाद ही किसी मुमुक्षु को दीक्षित किया जाता है। बालक मोहन की दीक्षा के लिए जब मुझे आज्ञा पत्र लिखकर देने का कहा गया तो मैंने मना कर दिया। क्योंकि हमारे पिताजी का स्वर्गवास हो चुका था और बालक मोहन के बड़े भाई तथा संरक्षक की दोहरी जिम्मेदारी मुझ पर थी। इसलिए आज्ञा पत्र लिखने का मानस नहीं बना। जब मोहन ने मुझ पर दबाव बनाना शुरू किया तो माताजी की इच्छा का सम्मान करते हुए आज्ञा देने की हामी इस शर्त पर भर दी कि मैं आज्ञा पत्र छह माह बाद लिख कर दूंगा। फिर मुनिश्री सुमेरमल जी स्वामी ने मुझे कहा कि जब तुमने हां भर ली है तो देर करने से फायदा नहीं, क्योंकि वैशाख शुक्ला चतुर्दशी के बाद मुहूर्त नहीं मिल रहा है।

मैंने आज्ञा पत्र लिख कर दे दिया और इस प्रकार बालक मोहन की दीक्षा मुनिश्री सुमेरमलजी के करकमलों से हो गई। फिर आचार्य तुलसी की पारखी नजरे आप पर टिकी और आपको तैयार करना शुरु कर दिया। फिर समय आने पर आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने तो आपको अपना उत्तराधिकारी भी घोषित कर दिया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के महाप्रयाण के बाद आप इस तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य पद पर आसीन हो गए। आप पुण्यवान आचार्य हैं। आपकी पुण्यवत्ता के प्रभाव से हम बुराइयों से अपने आपको बचा सकेंगे। आपके इस दीक्षा कल्याण महोत्सव पर मैं मंगल कामना करता हूं कि आप अध्यात्म के शिखरों को छूते हुए अपना तथा जन-जन का कल्याण करते रहें।

– सुजानमल दूगड़

पूज्य प्रवर के अवतरण दिवस पर चारों और खुशहाली है,
नेमानंदन के आभामंडल की चमक निराली है।

दिव्य लोक से दृश्य देख झूमर नेमा मुस्काए हैं,
मानवता के मसीहा के दर्शन पा सब हरसाए हैं।

दुगड़ कुल पर आशीर्वर बरसाओ,
नित दर्शन दे सबके नैनों की प्यास बुझाओ ।

– बिमला देवी दुगड़, भाभी

पूज्य प्रवर, आपके संयम जीवन के 50वें वर्ष की पूर्णता पर हार्दिक शुभकामनाएं। आप निरामय रहें, युगों-युगों तक आपकी छत्र छाया में यह नंदन वन फलता फूलता रहे, यही मंगल कामना।

– रोहित दुगड़, पौत्र

❖ इन्द्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।

-आचार्य श्री महाश्रमण

मैं और मेरे सबसे निकट भाई मोहन

हम लोग आठ भाई बहिन थे, मोहन से मेरा सबसे निकट का रिश्ता था। आठ में से छः भाई बहिन मोहन से बड़े थे। मैं इकलौता था जो मोहन से छोटा था।

मोहन मेरा वो भाई - जिसकी अंगुली पकड़ कर मैंने चलना सीखा, जिसकी अंगुली पकड़ कर मैंने स्कूल जाना शुरू किया। बड़े गर्व और गौरव की अनुभूति होती है जब देखता हूं कि मेरा वो ही भाई जिसने मुझे चलना सिखाया, पढ़ना सिखाया आज पूरे विश्व को सद्मार्ग पर चलना सीखा रहा है, अहिंसा और नैतिकता का पाठ पढ़ा रहा है।

आप यूं ही स्वस्थ रहते हुए युगों-युगों तक विश्व में अहिंसा और नैतिकता का प्रकाश फैलाते रहें यही मंगल कामना।

– श्रीचंद दूगड़

चारित्र निष्ठ, सत्य निष्ठ, आचार निष्ठ, सिद्धान्त निष्ठ, अध्यात्म निष्ठ एवं तुलसी-महाप्रज्ञ की महनीय कृति महातपस्वी महासाधक युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के जन्मोत्सव, पट्टोत्सव एवं 50वें दीक्षा कल्याणक महोत्सव के पावन अवसर पर अभिवंदन, अभिनंदन, नमन।

आपने अपने 14 वर्षों के आचार्यकाल में जिस प्रशासनिक कौशल, अपूर्व क्षमता, कार्य दक्षता का सदुपयोग किया है उससे सभी अभिभूत है। अहिंसा, करूणा, दया, प्रेम व मैत्री की सेना निरन्तर आपके साथ रहती है। आपके पास बुद्धि, वैभव व प्रज्ञा का अटूट खजाना है। आपके श्री चरणों में दिव्य शक्तियां हैं। आपश्री का आचार्य काल तेरापंथ धर्म संघ, जैन शासन की प्रभावना में श्री वृद्धि वाला हो। आपका शासन काल हर दृष्टि से स्वर्णकाल बने। यही अभीप्सा है।

– रतन दूगड़

मेरे जीवन के सरताज

गुरुदेव के जन्मदिवस के मांगलिक अवसर पर यही मंगलकामना करता हूं की आप युगों युगों तक यूंही हम पर राज करते रहें।

– नरेंद्र दुगड़, भतीजा

मानवता के मसीहा का आज जन्मदिन है,
महातपस्वी महाश्रमण का आज अवतरण दिवस है।

तुलसी महाप्रज्ञ के लाडले ने विजय पताका लहराया है,
जन जन का कल्याण कर निरंतर कदम बढ़ाया है।

आठूं मंगल करते है कामना,
जुग जुग जियो यही है अर्चना।

– सरिता ललित दुगड़

मैं और मेरा छोटे भाई मोहन

मेरे जन्म के दो साल बाद मेरे छोटे भाई का जन्म हुआ जिसका नाम मोहन रखा गया। मेरा छोटा भाई होने के कारण वह मुझे अतिप्रिय था।

मोहन जब चलने योग्य हुआ तो मैं उसे चलना सीखाता था, जब स्कूल जाने योग्य हुआ तो मेरे साथ स्कूल जाना शुरु किया।

बड़े गौरव और संतुष्टि की अनुभूति होती है जब देखता हूं कि मेरा वो ही अनुज जिसने मेरे सामने चलना सीखा, जिसको गिनती करना मैंने सिखाया, आज महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण के रूप में लाखों लोगों का जीवन संवार रहे हैं, करोड़ों लोगों को नशा मुक्त करवा चुके हैं।

आप ऐसे ही निरामय-निरोग रहते हुए दीर्घकाल तक विश्व को नैतिकता युक्त एवं नशा मुक्त बनाते रहें। यही शुभ मंगल कामना।

– सूरज दूगड़

गुरु ने अपना बनाके मुझको मुस्कुराना सिखा दिया,
अंधेरे घर में चिराग जैसे जगमगाना सिखा दिया।
जगत के कर्मो में बंधा था सारा ही बंधन छुड़ा दिया,
भेदभाव की दृष्टि मिटा कर, अर्हम् अर्हम् सिखा दिया।।

– अनूप कुमार दूगड़

परम पूज्य गुरुदेव के जन्मदिवस की हार्दिक मंगल कामनाएं प्रेषित करती हूं। इस महान अवसर पर कामना करती हूं की आप यूंही मानव सेवा के रास्ते पर आगे बढ़ते हुए जनकल्याण का रास्ता बताते रहें ।

– रतनी देवी बोथरा, बड़ी बहन

मेरे भगवान गुरुदेव को जन्मदिवस की कोटि कोटि शुभकामनाएं। मानवता के कल्याण की जो राह आपने चुनी है उसी पर सदा आगे बढ़ते हुए विश्व में शांति का परचम लहराते रहें ।

– ललित दुगड़, भतीजा

परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी के अवतरण दिवस पर अनेकों शुभकामनाएं।

सुखमय, समृद्धिमय, स्वस्थ जीवन की अनेकानेक मंगलकामनाएं!

– सुरेंद्र दुगड़, भतीजा

केंद्रीय संस्थाओं की ओर से भावपूर्ण अभिवंदना स्वर

आचार्य महाश्रमण जैन परंपरा के तीर्थंकर तुल्य एक प्रतिनिधि आचार्य तो हैं ही, अपनी निस्पृहता, समता, आचार कुशलता और दृढ़ धर्मिता से उन्होंने एक ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया है जिसके सामने कोई भी सहज ही नतमस्तक होना चाहता है। अति विद्वान, तपस्वी अथवा वक्ता होने से भी शतगुणा कठिन है आचार के आदर्शों को जीना। आचार्य महाश्रमण इसकी जीवंत प्रतिमूर्ति है। उन्होंने साधना के जीवन के नए मानदंड प्रस्तुत किए हैं। धर्म संघ के अधिशास्ता के रूप में भरत चक्रवर्ती की अनासक्ति के साथ शासन की सार-संभाल ऋषभ के काल की याद दिलाती है। कोटिशः नमन ।

- के. सी. जैन
संयोजक, कल्याण परिषद । प्रबंध न्यासी, अ.भा. अणुव्रत न्यास

अतिशय गुणों के धारक महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी का व्यक्तित्व अलौकिक और अद्वितीय है। आचार्यश्री महाश्रमणजी ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप एवं वीर्य- इस पंचाचार की साधना के जीवन्त प्रतिरूप हैं। संतता के शिखर पर विराजमान एक अप्रमत्त योगी हैं। आपश्री आत्म कल्याण के साथ ही मानव मात्र के कल्याण के लिए भी अहर्निश प्रयत्नशील हैं।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी की असीम अनुकम्पा से दीक्षा दिवस के इस अवसर को 'युवा दिवस' के रूप में मनाते हुए अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् परम सौभाग्य एवं धन्यता की अनुभूति कर रहा है। अभातेयुप को यह अवसर प्रदान कराने के लिए मैं पूज्य चरणों में अनन्त कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं। मैं आचार्य महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव के पावन अवसर पर शत्-शत् वंदन करते हुए यह मंगलकामना करता हूं कि परम पूज्य गुरुदेव स्वस्थ एवं शतायुधिक जीवन जीते हुए धर्म की विराट चेतना का पुंज बनकर युगों-युगों तक मानव जाति के मंगल और कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते रहें।

- रमेश डागा
अध्यक्ष, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

परम पूज्य युवा मनीषी आचार्य श्री महाश्रमण जी के दीक्षा दिवस पर कोटि-कोटि वंदन-अभिनंदन। आप दीर्घायु हों, चिरायु हों। आपकी छत्र छाया में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के क़रीब 11000 सदस्य देश भर में धार्मिक और सामाजिक कार्यों में संलग्न है। आपका आशीर्वाद TPF पर यूँ ही सदैव बना रहे।

-पंकज ओस्तवाल
अध्यक्ष, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम

संतता के शिखर पुरुष आचार्य महाश्रमणजी के अनुत्तर संयम पर्याय के 50वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। दीक्षा कल्याणक का यह अपूर्व अवसर चतुर्विध धर्मसंघ के लिए आह्लाद, आनंद, उत्साह और उमंग का अवसर है। गणाधिपति गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी ने जिसे अपने कर कमलों से तराशा और महाश्रमण बना तेरापंथ की गादी पर प्रतिष्ठित किया ऐसे महाप्रतापी अनुशास्ता की अनुशासना पाकर पूरा धर्मसंघ अपने आपमें धन्यता, कृतपुण्यता का अनुभव कर रहा है। वर्धापना के इस पावन अवसर पर मैं पारमार्थिक शिक्षण संस्था परिवार की ओर से अनन्त आस्था, श्रद्धा, कृतज्ञता समर्पित करते हुए मंगलकामना करता हूं कि आप चिरायु हों, निरामय हों तथा पग-पग पर विजयश्री का वरण करते हुए भैक्षवगण, जिनशासन और मानवता की सेवा करवाते रहें। **- बजरंग जैन,**
अध्यक्ष, पारमार्थिक शिक्षण संस्था

महातपस्वी, महामनस्वी, शांतिदूत, युगप्रधान परमपूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी का जीवन अप्रमत्त, श्रमशील, साधनाशील है। आचार्यश्री महाश्रमणजी एक महान आध्यात्मिक व्यक्तित्व, समाज सुधारक और विचारक हैं। आचार्य प्रवर ने अहिंसा की प्रलम्ब यात्रा कर जन-जन को नैतिकता, सद्भावना और नशामुक्ति का संदेश दिया। उन्होंने एक करोड़ से अधिक लोगों को नशामुक्ति के संकल्प कराकर समाज व राष्ट्र के आंतरिक रूपान्तरण का पथ प्रशस्त किया है। वे सामाजिक विकास के लिए निरंतर प्रयत्नशील हैं। नैतिक मूल्यों के विकास, सांप्रदायिक सौहार्द तथा अहिंसक चेतना के जागरण के लिए समर्पित परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी के श्रीचरणों में आचार्यप्रवर के 50वें दीक्षा दिवस के मंगल अवसर पर सम्पूर्ण तेरापंथ श्रावक समाज तथा महासभा परिवार की ओर से युगप्रधान आचार्यप्रवर की अभिवंदना करते हैं, नमन करते हैं। आचार्य प्रवर चिरायु हों, निरामय रहें और जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ चिरकाल तक उनके सुपावन कुशल नेतृत्व में निरन्तर उन्नति करता रहे।

- मनसुखलाल सेठिया
अध्यक्ष, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

महाश्रमण नाम स्वयं में ही मंगल का प्रतीक है और आचार्यप्रवर की अभिवंदना में हमारे शब्द कोश भी पर्याप्त नहीं होंगे। गौर वर्ण, आकर्षक मुख मंडल, सहज मुस्कान से परिपूर्ण, विनम्रता, दृढ़ता , शालीनता, व सहजता जैसे गुणों से ओत-प्रोत आचार्य श्री महाश्रमणजी से न केवल तेरापंथ अपितु पूरा धार्मिक जगत आपके पाथेय प्राप्ति हेतु सदैव तत्पर है। 700 साधु- साध्वियों, समणियों एवं लाखों श्रावक-श्राविकाओं को सम्भालना एवं धर्म संघ एवं आस्था से बांधे रखना बड़ा ही दुर्लभ है। आचार्य श्री महाश्रमण मानवता के लिए समर्पित जैन तेरापंथ धर्म संघ के उज्जवल भविष्य है। हमारा सौभाग्य है कि हमें ऐसे युगपुरुष का निरन्तर सान्निध्य प्राप्त है, जिनकी देवीय वाणी से हजारों व्यक्तियों ने अपने जीवन को नवीन दिशा प्रदान की है। मैं कामना करता हूं कि आप चिरायु हों और आपकी छत्र-छाया में धर्मसंघ निरन्तर नवीन कीर्तिमान स्थापित करता रहे।

- टी. अमरचंद जैन (लुंकड़)
अध्यक्ष, जैन विश्व भारती

आचार्य श्री महाश्रमण एक ऐसे महापुरुष का नाम है जो अपने व्यक्तित्व व कर्तृत्व से लाखों-लाखों लोगों के जीवन को सकारात्मक दिशा दे रहे हैं। तृतीय अणुव्रत अनुशास्ता के रूप में सन 2010 से आचार्य श्री महाश्रमण अणुव्रत आंदोलन को अपना विलक्षण नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं। 14 वर्षों के इस कालखंड में अणुव्रत आंदोलन ने नयी करवट ली है। अणुव्रत उद्घोष है - संयम ही जीवन है। आचार्य श्री महाश्रमण स्वयं संयमित जीवनशैली के शिखर पुरुष हैं। उनके जीवन में संयम, सादगी और प्रामाणिकता की पराकाष्ठा देखी जा सकती है। आपने अपनी अणुव्रत यात्रा के तीन प्रमुख उद्देश्यों में अणुव्रत दर्शन के तीन मूलभूत तत्त्वों को शामिल किया- नैतिकता, सद्भावना और नशामुक्ति। अपनी प्रलंब पदयात्राओं में आपने लाखों लोगों को इन तीन सदाचरणों के प्रति संकल्पित कराया है।

आचार्य प्रवर के संत जीवन की संयम यात्रा के 50 वर्षों की सम्पूर्णता पर आयोजित 'दीक्षा कल्याण महोत्सव' के पुनीत अवसर पर सम्पूर्ण अणुव्रत परिवार की तरफ से मैं अणुव्रत अनुशास्ता के प्रति मंगलकामना व्यक्त करता हूँ। आप युगों-युगों तक मानव जाति के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते रहें। **- अविनाश नाहर**
अध्यक्ष, अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

पंच परमेष्ठियों में परिगणित, आचार्य पद पर प्रतिष्ठित, ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप-वीर्य - इन पांच आचारों के सम्यक् निष्कलंक आचरण व शिक्षण में अग्रगण्य, सूर्य व प्रतिपूर्णचन्द्र आदि विविध उपमाओं से उपमित 'बहुश्रुत' व गीतार्थ की समस्त विशेषताओं को स्वयं में संजोए हुए, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के उज्ज्वल-निरवद्य 50वें श्रामण्य-पर्याय में प्रविविक्षु होने पर कोटिशः वन्दन-अभिनन्दन!

- प्रो. बच्छराज दूगड़,
कुलपति, जैन विश्व भारती संस्थान

युग की आस्था के अमर धाम, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण भारतीय सन्त परम्परा के यशस्वी संत हैं जो तेरापंथ के एकादशमाधिशास्ता के पद को सुशोभित कर रहे हैं। राष्ट्रीय जनोन्नयन के विकास में आपने जो महत्वपूर्ण योगदान दिया है वह न केवल उल्लेखनीय है अपितु अनुमोदनीय भी है। मैत्री, नैतिकता, सद्भावना और नशामुक्ति का डंका बजाने वाली प्रलम्ब अहिंसा यात्रा सूर्य की तरह अविराम, श्रम की शानदार एवं अविस्मरणीयता का प्रतीक है। आचार्य महाश्रमणजी का संकल्प सच की धरती पर साकार होकर अवतरित होता है। बढ़े चले हम रूके न क्षण भी... इस स्वर लहरी में आत्मा का संगीत मुखरित होता है। युगों-युगों तक आचार्य महाश्रमण के अमल आभामण्डल की ज्योति रश्मियाँ मानव मन में व्याप्त तमस को दूर करती हुई नव प्रभात के उज्जवल हस्ताक्षर करती रहेगी। इसी आशा, विश्वास के साथ...

- सरिता डागा
अध्यक्ष, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

युग-प्रणेता युग-प्रचेता युग-प्रधान परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के 50 वें दीक्षा वर्ष की परिसंपन्नता पर जनकल्याण हेतु आयोजित दीक्षा कल्याण महोत्सव के पावन अवसर पर आचार्य तुलसी शान्ति प्रतिष्ठान टीम का गुरुदेव के श्री चरणों में श्रद्धासिक्त वंदन-अभिनंदन। हे युग-दृष्टा, युग-सृष्टा ! आपका पावन सान्निध्य युगों-युगों तक संपूर्ण समाज को यूँ ही मिलता रहे, यही मंगल कामना करते हैं।

- हंसराज डागा
अध्यक्ष, आचार्य तुलसी शान्ति प्रतिष्ठान

आचार्य श्री महाश्रमण जी के ५१ वें दीक्षा महोत्सव (युवा दिवस) के परम पावन अवसर पर कोटि-कोटि वंदन-अभिनंदन। आचार्यप्रवर हम यही कामना करते हैं कि आप स्वस्थ रहें, निरामय रहें और युगों-युगों तक धर्मसंघ और मानव जाति को जीवन की सही राह प्रदान कराते रहें। आपके संयम पर्याय के शतक के हम साक्षी बनें, यही कामना। संघ पुरुष शतायु हो। संघ पुरुष चिरायु हो।

- पन्नालाल बैद
प्रबंध न्यासी, जय तुलसी फ़ाउंडेशन

सम, शम, श्रम संस्कृति के उन्नायक, जिन शासन के उज्जवल नक्षत्र, संत संस्कृति के ज्योतिर्मय अग्रदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी के दीक्षा कल्याण महोत्सव पर कोटि-कोटि वंदन। परम पूज्य गुरुदेव, अध्यात्म के सुमेरु आप युगों-युगों तक समस्त मानव जाति का कल्याण करते रहें। आपका वरदहस्त हम सभी पर सदा-सदा बना रहे एवं हमारा मार्ग प्रशस्त करता रहे। **- भैरूलाल चोपड़ा**
अध्यक्ष, प्रेक्षा विश्व भारती

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

आचार्यश्री महाश्रमण
दीक्षा कल्याण महोत्सव

दुनिया में चार चीजें दुर्लभ मानी गई हैं- मनुष्यता, धर्म श्रवण, श्रद्धा और संयम में पराक्रम।

-आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव के पावन अवसर पर सादर श्रद्धा प्रणति

नज़र कंवर सुराणा हॉस्पिटल
लेडर्ले फार्मा लिमिटेड
संजय मेहुल सुराणा, दिल्ली

आनन्द कुमार कुशाल गदैया
राजगढ़ - दिल्ली

शुभकरण
मनीष कुमार सिंघी
लाडनूं - गुवाहाटी

सुमनेश नरेंद्र कोठारी
बीदासर - गुवाहाटी

निर्मल निलेश श्यामसुखा
सरदारशहर - गुवाहाटी

अशोक कुमार अमित मालू
सुजानगढ़ - गुवाहाटी

विजय सिंह विवेक डागा
गंगाशहर - गुवाहाटी

शांतिलाल कोठारी
चूरू - गुवाहाटी

संदीप निक्कू खटेड़
तारानगर - गुवाहाटी

पी. बी. सैनिटरी
छापर - गुवाहाटी

सुमेरमल जयंत सुराणा
पड़िहारा - गुवाहाटी

मोतीलाल गौतम दूगड़
सरदारशहर - मुंबई

नोरतन पूजा
हितांश पुगलिया
राजगढ़-मुंबई

सुभाषचंद जितेंद्र संजय
विक्रम गादिया
राम सिंह गुड़ा - सूरत

सुखी देवी जम्मड़
सरदारशहर - गुवाहाटी

संतोष राखी
वैभव शुभम चोरड़िया
बीदासर - मुंबई

भंवरलाल स्नेहलता
राहुल सिंघी
श्रीडूंगरगढ़ - मुंबई

पुखराज बोकड़िया
सुजानगढ़ - दिल्ली - मुंबई

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स

महाश्रमण - सुधारसम्

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स

(1) रामगिरिरागेण गीयते (मूढ! मुह्यसि मुधा)
पूतं प्रभास्वरं, नमामि गणभास्करम्।

1. त्वदीया विमलच्छविः प्रगे सायं प्रभो!, समायाति लोचनाग्रे प्रायः।
न केवलं स्मरणे मननयने विभो!, विराजसे ममात्मनि तीर्थार्य! ।।
2. गुरुसन्निधेर्हृदि पावनपुण्या स्मृतिः, प्रेरयति माञ्च मुखरीकुरुते।
दीक्षाकल्याणोत्सवे हार्दिकीं संस्तुतिं, मानसं मुदा प्रकटीकुरुते।।
3. श्रुतसुमनोविकाशी भ्रमतिमिरनाशी, दिवाकरो निशाकरस्त्वमेव।
पीयूषशमरसवर्षी जनहृदयकर्षी, पयोधरः सुधाकिरस्त्वमेव।।

अर्थ- मैं गण के पावन, प्रभास्वर (दैदीप्यमान) महासूर्य को नमन करती हूं। प्रभो! आपकी अनाविल छवि प्रात-सायं प्रायः मेरे नेत्रों के समक्ष आ जाती है। हे गणस्वामिन्! आप न केवल स्मृतियों, विचारों और नयनों में, बल्कि मेरी आत्मा में विराजमान हैं। गुरु-सन्निधि की हृदयस्थित पवित्र स्मृति मुझे प्रेरित और मुखरित करती है। यह मानस दीक्षाकल्याणक महोत्सव पर प्रसन्नतापूर्वक स्तुति को अभिव्यक्त कर रहा है। प्रभो! श्रुत-सुमनों को विकसित करने वाले, भ्रम-तिमिर को विनष्ट करने वाले सूर्य-चन्द्र आप ही हैं, उपशम रूपी पीयूष की वर्षा करने वाले मेघ और जनता के हृदय को आकर्षित करने वाले सुधावितरक आप ही हैं।

(2) धनाश्रीरागेण गीयते (परिहरणीयो रे)
सुयोगो योगो रे।

4. माधवमासे रे! सरदारशहरे, सत्तमदूगड़वंशे।
जातिर्जाता रे! भैक्षवयतिपते! झूमरगृहे हर्षे।।
5. माधवमासे रे! सरदारशहरे, गृहीता त्वया दीक्षा।
मन्त्रीमुनिना रे! दत्ता सुशिक्षा, पूर्णा कृता वीक्षा।
6. माधवमासे रे! सरदारशहरे, द्विसहस्रदशाब्दे।
संघाधीशा रे! जाता भवन्तो गांधीविद्यास्थले।।

अर्थ- यह उत्तम योग है कि भैक्षव गण के मुनीन्द्र! सरदाशहर, वैशाख मास, उत्तम दूगड़ कुल, झूमरमलजी के घर में हर्षोत्फुल्ल वातावरण में आपका जन्म हुआ। उसी सरदारशहर में, वैशाख माह में आपने दीक्षा ली, मन्त्रीमुनि के द्वारा आपकी सम्यक् देख-रेख की गई और सुशिक्षा प्रदान की गई। सरदारशहर में, वैशाख मास में ही गांधीविद्यामंदिर नामक स्थान पर सन् 2010 में आप गणाधीश (आचार्य) बन गए।

(3) मारुतिरागेण गीयते (विनय! विधीयतां रे)
अयि! वन्दामहे रे जिनकल्पं महाश्रमणम्।

7. आगमरम्यागम्यरहस्यं, वेत्तारं महाप्राज्ञम्।
निः श्रेयसभवसुखदातारं, गतशोकं महाभागम्।।
8. भारतराष्ट्रे राजितरमणीयकीर्त्यात्यन्तवलक्षम्।
कलिकालेऽस्मिन् तारणतरणीं, तप एव प्रत्यक्षम्।।
9. भीष्मभवार्णवे पावनशरणं, सत्तमगुणगणगेहम्।
आत्मविशुद्ध्याः का तव वार्ता, सुरनरपूजितदेहम्।।

अर्थ- जो आगम के रमणीय गूढ़ रहस्यों के ज्ञाता, विद्वद्शिरोमणि, मोक्षसुखप्रदायक तथा शोकरहित हैं। भारत देश में सुशोभित कीर्ति से अत्यन्त धवल एवं इस कलिकाल में पार लगाने वाली नौका के समान स्वयं तपः रूप हैं। भयकारी भवसागर में पवित्र शरण और उत्तम गुण-समुदय के आवास हैं, जिनकी आत्मविशुद्धि की क्या बात, जो देव-मनुष्यों द्वारा पूजित तनुरत्न वाले हैं, सुजन! तीर्थंकर तुल्य वैसे आचार्य महाश्रमणजी को हम वन्दन करते हैं।

(4) टोडीरागेण गीयते (विनय! विभावय गुणपरितोषम्)
नमाम्यहन्तु गुरुवरकृतयः।

10. आयतौ संघव्यवस्थाया, रचितं गणिना मुख्यमुनिपदम्।
ततोऽभिषिक्तो श्रीमहावीरो, धृतियुक्तो मतियुक्तो प्रवरो।।
11. दिवंगते सति शासनमातुस्त्वया नियुक्ता साध्वीप्रमुखा।
यासां विभा विश्रुता संघे, गुरुपादे या नम्राः स्वस्थाः।।
12. गुरुवर्याणां कृतिर्विशिष्टा, साध्वीवर्या भक्त्या पुष्टा।
गुरुसेवायां पूर्णा मुदिता, गणगगने या भाति ह्लुदिता।।

अर्थ- गुरुवर की कृतियों को नमन। भावी संघव्यवस्था के लिए आचार्यप्रवर द्वारा मुख्यमुनि पद सृजित किया गया और धैर्यवान, मतिमान्, प्रवर मुनिश्री महावीरकुमारजी को उस पर अभिषिक्त किया गया। शासनमाता के महाप्रयाण के अनन्तर साध्वीप्रमुखाजी की नियुक्ति आप द्वारा की गई जिनकी विभा संघ में विख्यात है और जो गुरुदेव के चरणकमल में विनयशील एवं स्वस्थ हैं। भक्ति से पुष्ट साध्वीवर्याजी आचार्यप्रवर की विशिष्ट कृति हैं जो गुरुसेवा में पूर्णतः प्रमुदित हैं और गण रूपी आकाश में दीप्तिमान हैं, उदित हैं।

(5) सारंगरागेण गीयते (विभावय! विनय तपोमहिमानम्)
निभालय चेतन! गुरुगरिमाणम्।

13. बहुभवसञ्चितकर्मरिपुणा, सार्धं जितसंग्रामम्।
तीर्थेशोदितवाणीवल्ल्या, शोभिततीर्थारामम्।।
14. चरणकरणगुणमण्डनमण्डितमभिगतशुभपरिणामम्।
पीयूषं शुभवदनं वर्षति, येषां वारं वारम्।।
15. यातु जनो जगति सुखमिष्टं, शिरसा नामं नामम्।
व्रजतु कदाचिद् गहनं गेहं, नगरं ग्रामं ग्रामम्।।

अर्थ- चेतन! उन गुरुवर की गरिमा को देखो, जिन्होंने अनेक भवों से सञ्चित कर्म शत्रुओं के साथ युद्ध जीत लिया है, जिनका तीर्थ रूपी उद्यान जिनवाणी रूपी लताओं से शोभित है, जिनका आचार एवं कार्य गुण-आभूषणों से सज्जित है, जो शुभ परिणामधारा में प्रवहणशील हैं और जिनका मुख बार-बार अमृतवर्षा करता है। इस संसार में व्यक्ति वन, गृह, नगर या ग्राम, चाहे कहीं भी चला जाए, सिर झुकाकर उन्हें नमन करता हुआ अभीप्सित सुख को प्राप्त करता है।

(6) धनाश्रीरागेण गीयते (बुध्यतां बुध्यताम्)
दीयतां दीयतां विशुद्धिरति दीयताम्।

16. वर्धतां वर्धतां शिष्यश्रीः वर्धताम्,कल्याणदीक्षामहोत्सववर्षे।
वर्ततां वर्ततां शासने वर्तताम्, शुद्धौ धियां वृद्धिः परामर्शे।।
17. श्रेष्ठसमुपासना सुमंगलसाधना, व्रताराधनां सफलीकुरुते।
महाप्रज्ञश्रीसंज्ञया वरश्रुताराधना, साधुतामतीव सुफलीकुरुते।।
18. सायं सप्तवादनं शनिदिवासामायिकी, जैनं जयतु शासनं प्रकल्पम्।
लोकोपकारिणी व्रज्या सप्तवार्षिकी, विशिष्टावदानानि भवताम्।।

अर्थ- आप हमें अत्यन्त विशुद्धि प्रदान करें। दीक्षाकल्याणक महोत्सव वर्ष में आपकी शिष्य-सम्पदा वृद्धिंगत हो और शासन में शुद्धि, बुद्धि तथा तर्कशक्ति में विस्तार हो। श्रेष्ठ उपासना पद्धति सुंमगलसाधना मनुष्य भव को तथा श्रीमहाप्रज्ञ नाम से प्रचलित उत्तम श्रुताराधना साधुत्व को सफल बनाती है। शनिवार सायं सात बजे वाली सामायिक, जैनम् जयतु शासनं प्रकल्प, जनहितकारी सप्तवर्षीय यात्रा (अहिंसा यात्रा)– ये आपके विशिष्ट अवदान बन गये हैं।

(7) वसन्तरागेण गीयते (पालय पालय रे)
नेमानन्दन! ते गरिमा नितरां गेयः। झूमरनन्दन! ते वरिमा सुतरां ज्ञेयः।।

19. भैक्षवशासनभर्त्ता धर्त्ता, युक्तिविवेचनयोक्ता।
वक्ता हर्त्ता कल्मषराशेर्निरुपमेयस्त्वं श्रोता।।
20. मंगलकारी भवभयहारी, सरसविशाले वाणी।
तमः प्रणाशी चेतः कर्षी, शिवदर्शी सुखखानिः।।
21. सभ्या भव्यास्त्वां सेवन्ते, किं विशिनज्मि तत्र।
मत्सरिणो हठिनोऽपि नित्यं, ध्यायन्ति सर्वत्र।।

अर्थ- नेमानन्दन! आपकी गरिमा नितान्त गेय है। झूमरनन्दन! आपकी महिमा नितान्त ज्ञेय है। आप भैक्षवशासन के पालक, धारक, युक्तिविवेचन के प्रयोक्ता, वक्ता, पापराशि के हारक और अनुपमेय श्रोता हैं। आपकी वाणी मंगलकारी, संसार-भय को हरने वाली, सरस, विशाल, तम को विनष्ट करने वाली, चित्त को आकृष्ट करने वाली, शिवदर्शी एवं सुख की खान है। सभ्य एवं भव्य व्यक्ति आपकी सेवा करते है, इसमें विशिष्टता नहीं है बल्कि द्वेषी एवं आग्रही व्यक्ति भी आपका ध्यान करते हैं, यह विशेष बात है।

(8) नटरागेण गीयते (शृणु शिवसुख साधनसदुपायं रे...)
शृणु गुरुवरशासनवरवर्षं, वरवर्षं रे वरवर्षम्।

22. तुलसीजन्मशताब्दीवर्षं, नूतनशैल्यां समायोजितम्।
संघे वरविस्तारो जातो, दीक्षाशतकं त्वया प्रदत्तम्।।

23. महाप्रज्ञजन्मसदीवर्षे, कृतानि कार्याणि भरहर्षे।
शासनसंहितामनतिक्राम्यः कोरोनाव्याधिरुत्कर्षे।।
24. अमृतमहोत्सवपावनगाथा, शासनमाता प्रथिता जाता।
पुरावृत्तेऽपूर्वा हि यात्रा, शासनमात्रे कृता वर्णिता।।

अर्थ- श्रीगुरुदेव की शासना के श्रेष्ठ वर्षों को सुनो। तुलसी जन्मशताब्दीवर्ष आपके द्वारा अभिनव शैली में आयोजित किया गया। उस समय आपने सौ दीक्षाएं प्रदान की, गण में प्रवर वर्धमानता रही। महाप्रज्ञ जन्मसदीवर्ष में कोरोना व्याधि के उत्कर्षकाल में आपने शासन (सरकारी नीति) नीति का अतिक्रमण न करते हुए अत्यधिक हर्षपूर्वक कार्य सम्पन्न किए। अमृतमहोत्सव की पवित्र गाथा, शासनमाता और शासनमाता के लिए की गई आपकी अपूर्व यात्रा इतिहास में उल्लिखित और प्रसिद्ध हो गई।

(9) केदाररागेण गीयते (कलय संसारमतिदारुणम्)
जय जय श्रेयस्पथगामिनः।

25. जातु पुरा प्रभोऽश्रावि मया, श्रीभारमल्ला विनीतकाः।
दर्शं-दर्शं यौष्माकीणम्, विनेयत्वं रमे भवतारका।।
26. जातु पुरा प्रभोऽश्रावि मया, श्री जीतमल्लाः प्रशासकाः।
दर्शं-दर्शं यौष्माकीणम्, शासकत्वं रमे भवतारका।।
27. जातु पुरा प्रभोऽश्रावि मया, श्रीमघवाः पापभीरुकाः।
दर्शं-दर्शं यौष्माकीणम्, पापभीरुतां मोदे सदा।।

अर्थ- मैंने कभी पहले सुना-आचार्यश्री भारमलजी अत्यन्त विनीत थे। हे भवतारक! आपकी विनम्रता को साक्षात् देखती हुई मैं आह्लादित हो जाती हूं। मैंने कभी पहले सुना-आचार्यश्री जीतमलजी प्रशासक (कुशल शासक) थे। हे भवतारक! आपके प्रशासन कौशल को प्रत्यक्ष देखती हुई मैं आनन्दित हो जाती हूं। मैंने कभी पहले सुना-आचार्यश्री मघवा पापभीरु प्रकृति के थे। आपकी पापभीरुता को साक्षात् देखती हुई मैं प्रमुदित हो जाती हूं।

(10) रामकुलीरागेण गीयते (सुजना! भजत सदा भगवन्तम्)
रसना! वदत सदा गुरुगानम्।

28. तव सुखदं शासनमनुशासनमनुगच्छति रघुराज्यम्।
प्राज्यं विद्यावित्तं व्याप्तिः, प्राप्तिः शान्तेराज्यम् रे।।
29. संस्कृतभाषाविद्यास्नेही, प्रबन्धने महादक्षः।
करुणायां वात्सल्यप्रमोदे, भूमौ कस्त्वादृक्षो रे।।
30. अल्पज्ञानां नवशैक्षाणां, मुग्धसुरक्षाकारी।
तेषां सफलविकासे सततं, यत्त्वं प्रेक्षाकारी रे।।

अर्थ- रसनाओ! सदा गुरु का गान करो। आपका सुखमय शासन-अनुशासन रामराज्य का अनुसरण करता है। यहां विशाल विद्याधन एवं शांति का नवनीत व्याप्त है। आप संस्कृत भाषा एवं विद्या के अनुरागी, प्रबन्धन में अत्यन्त दक्ष हैं। पृथ्वी पर करुणा, वत्सलता और प्रमोद भावना में आपके सदृश और कौन है? अल्पज्ञों, नवदीक्षितों और भोले व्यक्तियों के आप रक्षक हैं। जब तक उनका सफल विकास न हो, तब तक उनका मार्गदर्शन करते रहते हैं।

(11) आशावादीरागेण गीयते (भावय रे! वपुरिदमतिमलिनम्)
भावय रे गुरुवित्तविहरणम्।

31. विविधेषु प्रान्तेषु देशे, भूटाने नेपालविदेशे।
नगरे-नगरे ग्रामे-ग्रामे, व्रज्या जाता प्रातः साये।
32. नैतिकमूल्याणां सद्वृद्धिः, सद्भावानां सम्यक्सिद्धिः।
जनताया व्यसनेभ्यो मुक्तिरेतद्धि यात्राया लब्धिः।।
33. देशाटनं परमपूज्यानां, परोपकरणं जगति जनानाम्।
महाकृपाया जलसिञ्चनेन, कल्याणं जातं मनुजानाम्।।

अर्थ- गुरुदेव की प्रसिद्ध यात्रा का चिंतन करो। देश के विविध प्रान्तों में, भूटान एवं नेपाल विदेश में, नगर-नगर तथा ग्राम-ग्राम में यह यात्रा प्रात-सायंकाल होती थी। नैतिक मूल्यों की वृद्धि, सद्भावों की सम्यक् सिद्धि तथा जनता की नशामुक्ति- ये यात्रा की उपलब्धि हैं। परमपूज्य का देशाटन जगत् में व्यक्तियों का उपकार करने वाला था। महती अनुकम्पा के जलसिञ्चन से मनुष्यों का कल्याण हो गया।

(12) श्रीरागेण गीयते (विनय! निभालय निजभवनम्)
चेतन! चिन्तय गुरुचरणम्।

34. हृदयविशालं ललितललाटं, वदनं मुदितायाःसदनम्।
मन्ये धन्यं तव चरणाब्जं, जनतायाः शुभशिवशरणम्।।
35. श्रवणं विशदं कुरुते वाणी, रसनां विविधं स्तोत्रम्।
रम्याकृतिर्नयनं ते भगवन्! चरणौ शीर्षं धरां परम्।।
36. येषां चित्तं वसति चरणयोस्तेषां जगति समस्या का?
पार्श्वं आयाति समाधानन्तु, चानुभूतेष्टाया राका।।

अर्थ- चेतन! गुरुचरणों का चिन्तन करो। आपका हृदय विशाल, ललाट सुन्दर तथा मुख प्रसन्नता का आलय है पर मैं आपके चरण कमल को धन्य मानती हूं जो जनता के लिए पवित्र, कल्याणकारी शरण है। भगवन्! आपकी वाणी कर्ण को, विविध स्तुतियां जिह्वा को और सुन्दर आकृति नेत्र को पावन करती है किन्तु आपके चरण मस्तक और धरा-दोनों को पवित्र करते हैं। जिनका चित्त इन चरणों में रहता है उनके लिए इस संसार में समस्या क्या है, उनके पास तो समाधान वैसे ही आता है जैसे चतुर्दशी के बाद पूर्णिमा।

(13) परजीवारागेण गीयते (विनय! चिन्तय वस्तु...)
सुजन! पूजय शान्तिदूतम्।

37. मनसि काये वचसि भगवन्!, नहि विलोके द्वैधत्वम्।
सरलभावं सहजसहचरो, विद्यते नहि भेदत्वम्।।
38. वदति मनुजो जगति प्रायः, भवति शास्ता न विकलरुषा।
कोपमलविगतो हि विभुवर!, भाससे दोषा दिवा।।
39. विविधरूपे बम्भ्रमीति, लोभदस्युः समन्ततः।
निध्यायसि कदा नहि यतो, सहायविकलो स ततः।।

अर्थ- सुजन! शान्तिदूत की पूजा करो। भगवन्! आपके मन, वचन, काया में मैंने कभी द्वैधता नहीं देखी, सरलभाव आपका सहज सहगामी है अतः कहीं भी भिन्नता/भेदता विद्यमान नहीं है। मनुष्य प्रायः यह कहता है कि अनुशास्ता कोपरहित नहीं होता किन्तु विभुवर! आप क्रोधमल से रहित होकर दिन-रात दीप्तिमान हैं। लोभ रूपी शत्रु अनेक रूपों में आपके चारों ओर बार-बार भ्रमण (परिक्रमा) करता है किन्तु आप कभी भी उसकी ओर नहीं देखते, अतः वह सहायविकल बना हुआ है।

(14) देशाखरागेण गीयते (विनय! विचिन्तय मित्रताम्)
भज भज ज्योतेश्चरणान्।

40. शान्तिप्रदायक! हन्नायक!, सदुपदेशं ते लोकाः।
स्वीकुर्युश्चेद् भवेयुर्लोकाः शोकविमोकाः।।
41. हर हर गुरुवर! तापं, सञ्चितबहुविधपापम्।
जिह्वा मे जपति जापं, कथयति सुप्रलापम्।।
42. भव्यां नव्यां सरणिं, शान्त्या दर्शय दर्शय।
सदानन्दसंदोहदानतो, हर्षय मामुत्कर्षय।।

अर्थ- ज्योतिचरण की उपासना करो। शान्तिदायक! हृदयनायक! आपके सदुपदेश को यदि लोग स्वीकार कर लें तो वे शोकरहित बन सकते हैं। गुरुवर! मेरी रसना आपका मंत्र जाप एवं आपकी श्रेष्ठ वार्ता करती है, आप अनेक तरीकों से मेरे द्वारा अर्जित पाप और ताप का हरण करें। शान्ति का भव्य, नव्य पथ हमें दिखलाएं और परमानन्द राशि प्रदान कर हमें आनन्दित करें, विकस्वर बनाएं।

(15) काफीरागेण गीयते (विनय! विभावय शाश्वतम्)
वन्दे मंगलं शरणम्।

43. वाग्मी गायको नेता, प्रखरतत्त्ववेत्ता।
पूतः परमोर्ध्वरेताः, त्वमिन्द्रियजेता।।
44. सर्वत्र गुञ्जति गणार्य!, जयदुन्दुभिर्वरा।
जीयाच्चिरं नन्द्याच्चिरं, भिक्षुशासनशेखर!
45. त्वदीयचरणच्छायायां, वसामो मोदेन।
कृतपुण्या वयं धन्या, विभो! विविधरूपेण।।

अर्थ- मंगलमय शरण को वंदन। आप वाग्मी, गायक, नेता, प्रखरतत्त्ववेत्ता, अनाविल, ऊर्ध्वगामी वीर्यधारक एवं इंद्रियजयी हैं। गणनाथ! सर्वत्र आपकी श्रेष्ठ विजय-दुन्दुभि गूंजती है। भिक्षुशासनशेखर! आप दीर्घकाल तक जीवित रहें और आनन्द प्रदान करते रहें। आपकी चरण-शरण में हम प्रसन्नतापूर्वक रहते हैं, सचमुच हम अनेक रूपों में धन्य और कृतपुण्य हैं।

(16) प्रभातीरागेण गीयते (अनुभव! विनय सदा सुख..)
जय जय भैक्षवसंघविकासक! जय जय तेरापंथपते!
जय जैनागमसिन्धोर्मन्थक! जय गणशेखर! मेध्यमते!

46. कारुण्यं तव ह्नैर्मल्यं, गुणग्राहकत्वं सद्धैर्य्यम्।
पापभीरुत्वं गुरुगणभक्तिर्वात्सल्यं सुस्थैर्यम्।।
47. किमपि लिखेयं किमपि वदेयं, किमपि सुगेयं वा ज्ञेयम्।
जाताऽनन्ता गुरुवार्ता तु, तदपि ह्यन्ते कामयेऽहम्।।
48. देहि देहि मे शक्तिं स्वामिन्!, विस्तारय मंगलमालाम्।
रारटीतु रसना पूता, गुरुगुणगणगौरवशालाम्।।

अर्थ- भिक्षु संघ के उन्नायक! तेरापंथ के अधिनायक! जैनागम रूपी सागर के मन्थक! संघशिरोमणि! पवित्र मतिशाली! आपकी जय हो। आपमें कारुण्य, पवित्रता, गुणग्राहकत्व, प्रशस्त धैर्य, पापभीरुता, गुरुजनों के प्रति भक्ति, वात्सल्य तथा सम्यक् स्थिरता विद्यमान है। मैं क्या लिखूं और क्या कहूं, क्या गाऊं और क्या जानूं, गुरुवार्ता तो अन्तहीन है, फिर भी अन्त में मैं कामना करती हूं कि हे स्वामिन्! मुझे आप शक्ति प्रदान करें और मंगलपंक्ति का विस्तार करें। यह पावन रसना गुरुदेव के गौरवास्पद गुणसमूह को बार-बार रटती रहे, जपती रहे।

अनुष्टुपत्रयी

49. पवित्रं प्रभुचारित्रं, विश्वविश्वे सुविश्रुतम्।
कृतो मया प्रयासोऽयं, श्रद्धासमर्पणाय वा।।
अर्थ- सम्पूर्ण विश्व में प्रभु का पवित्र चरित्र (यद्यपि) सम्यक्तया विख्यात है, तथापि श्रद्धा अर्पित करने के लिए मेरे द्वारा यह प्रयास किया गया है।
50. गम्यसुरम्यनम्याश्च, राधशुक्लाचतुर्दशी।
तेरापंथगणे पुण्या, क्षणवेला शुभंकरा।।
अर्थ- तेरापंथ धर्मसंघ में वैशाख शुक्ला चतुर्दशी प्रसिद्ध, रमणीय, नमनीय, पवित्र, उत्सवरूपा एवं कल्याणकारी है।
51. भद्रं भूयाच्चिरं भूयाद्, महोऽयं गणगणेशितुः।
सर्वरूपेषु सर्वेषां, सत्त्वानां सर्वथा सदा।।
अर्थ- गण-गणपति का यह उत्सव सभी प्राणियों के लिए सब रूपों में, सब प्रकार से कल्याणमय और दीर्घकालिक हो।

- साध्वी स्वस्तिकप्रभा

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

आचार्यश्री महाश्रमण
दीक्षा कल्याण महोत्सव

आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।

-आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव के पावन अवसर पर सादर श्रद्धा प्रणति

निर्मल सुशील धीरज मनोज विक्रम विक्रांत लोव्यम नाहटा,
गंगाशहर - इंदौर - बंगाईगांव - जलगांव

अजय पूजा
प्रेक्षा अक्षत भंसाली
श्रीडूंगरगढ़ - गुवाहाटी - मुंबई

गुलाबचंद सिंघवी
परिवार
मेड़ता सिटी - मुंबई

शांतिलाल देवेंद्र
महावीर सोलंकी
गजपुर - सूरत

विजयदेवी
माणकचन्द बैद
राजलदेसर - मुंबई

स्व .मांगीलाल जी
कमला देवी मनोज
मनीष डोसी
सुजानगढ़ - मुंबई

अमरचंद अनिल सुमित
मुदित समदड़िया
पाली - सूरत

पुष्पादेवी
बजरंग बोकड़िया
सुजानगढ़ - दिल्ली - मुंबई

राकेश बोथरा
मनोज कठोतिया
(प्रोडक्ट पैक इंडस्ट्रीज)
मुंबई

पन्नालाल मनोज
मनीष मालू
सुजानगढ़ - दिल्ली

हनुमानमल
नरेंद्र सुराणा
सुजानगढ़ - गुवाहाटी

सुमेरमल
चंचल डूंगरवाल
सुजानगढ़ - गुवाहाटी

अभय राज
अरुण डोसी
सुजानगढ़ - गुवाहाटी

विमल कुमार
विकास मणोत
उदासर - गुवाहाटी

नवरतनमल
आकाश कुमार सेठिया
उदासर - गुवाहाटी

रूपचंद
पुनीत कुमार सुराणा
पड़िहारा - गुवाहाटी

प्रवीण
वरुण डुंगरवाल
दौलतपुरा - दिल्ली

रायचंद छत्तर
नरेंद्र देवेन्द्र घोषल
राजलदेसर - फरीदाबाद - मुंबई - दिल्ली

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
20 मई - 26 मई , 2024

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी के मनोनयन दिवस पर वंदन-अभिनंदन

भैक्षव गण की अष्ट महा-सतियों की पाई विरल संपदा, तप, जप, अध्ययन, अध्यापन में, रत रहती हैं जो सर्वदा,
आत्म-गण-साध्वी विकास का, चिंतन करती जो हर क्षण, गुरु आशीष से विश्रुतविभा, बन जाए वैराग्य अधिष्ठात्री नर्मदा।।

अविकल्प संकल्प की प्रतिमा : साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी

● साध्वी सुमंगलप्रभा ●

संकल्प की स्याही से ही सफलता के हस्ताक्षर होते हैं। दृढ़ मनोबल और अविकल्प संकल्प रूपी चरण जिनकी साधना की यात्रा को गति देते हैं- उनका नाम है साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी। साध्वीप्रमुखाश्री जी का जीवन अथ से अब तक 'शिवसंकल्पमस्तु मे मनः' की परिक्रमा कर रहा है। कुशल कार्यशैली और सकारात्मक सोच ने उनके जीवन को नई दिशा प्रदान की है। संकल्प लेना जितना सरल है उतना ही कठिन है उसकी अविकल्प साधना। साध्वीप्रमुखाश्री जी की अविकल्प संकल्प की साधना उनकी हर सिद्धि की चाबी है।

बाल्यावस्था में साध्वीप्रमुखा श्री जी ने संकल्प किया कि मुझे संयम के संस्कारों को पुष्ट करना है, संयममय जीवन जीना है। योग मिला संसार पक्षीम बड़े भ्राता के कठोर अनुशासन का, जिसने संयम की चेतना को प्रखर बनाया। फलस्वरूप सरोज मोदी साधना के मार्ग पर प्रस्थित हो गई। बचपन में प्राप्त संयम की घूंटी आज भी नस-नस में प्रवाहित है, अनुशासन का दीप आज भी प्रज्वलित है।

साध्वीप्रमुखाश्री जी के व्यक्तिगत जीवन और दिनचर्या में ये दोनों तत्व आहार संयम, वाणी संयम आदि अनेक रूपों में सहचर बने हुए हैं। साथ ही संपूर्ण साध्वी समाज का पथ प्रदर्शित कर रहे हैं।

'अप्पाखलु सययं रक्खियव्वो सव्विदिएहिं सुसमाहिएहिं' - सर्व इन्द्रियों को संयमित कर आत्मा की सुरक्षा करना मुमुक्षु सविता का प्रथम लक्ष्य रहा। आत्मसंयम और स्वानुशासन के गुणों से प्रभावित हो पारमार्थिक शिक्षण संस्था के व्यवस्था पक्ष ने मुमुक्षु सविता में छिपी नेतृत्व शैली को पहचाना और मुमुक्षु बहनों की साधना संबंधी व्यवस्था का दायित्व सौंप दिया। भविष्य में समणी स्मितप्रज्ञा और मुख्य नियोजिका के रूप में मुमुक्षु बहनों का सफल मार्गदर्शन किया। साथ में समण श्रेणी को प्रथम नियोजिका के रूप में अनुशासन के साथ विकासोन्मुख किया तथा वर्तमान में सम्पूर्ण साध्वी समाज के लिए साध्वीप्रमुखाश्री जी का संकल्प बल, अनुशासन तथा संयमयुत नेतृत्व प्रेरणा है, प्रोत्साहन है।

जितना बड़ा दायित्व, उतना मजबूत संकल्प बल। उपकरणों की सीमा रखकर 'लघुभूतविहारी' बने रहने का संकल्प आज भी प्रबल है। आहार संयम व तप के प्रति विशेष रुझान प्रारंभ से ही रहा है। किसी भी परिस्थिति में निर्धारित तप का क्रम यथावत् रहता है। साथ ही वर्षों से चलने वाली द्रव्य सीमा की साधना स्वाद विजय का प्रतीक है। मिठाई का ग्रास साध्वियों को अवश्य प्रदान करवाते हैं, किन्तु मिष्ठान कभी भी प्रमुखाश्रीजी के मुख का ग्रास नहीं बनता। विहार, स्वास्थ्य, पारणा या मनुहार द्रव्य सीमा के संकल्प को बाधित नहीं कर पाते। ऐसा लगता है पांच मांडलिक दोषों से रहित आहार आपकी साधना का विशेष प्रयोग है। आहार करने की क्रिया अवश्य होती है लेकिन उसकी मानसिक या वाचिक प्रतिक्रिया नहीं नजर आती। इसीलिए साध्वी समाज को भी आहार संयम की प्रेरणा प्राप्त होती रहती है।

समणश्रेणी में आपने वर्षों तक अष्टमी, चतुर्दशी को कायोत्सर्ग प्रतिमा का प्रयोग किया है। रात्रि शयन में भले ही देरी हो किंतु ब्रह्म वेला में जागरण के बाद होने वाले ध्यान, जप, स्वाध्याय आदि ऐसे सहचर हैं, जो शक्ति के स्रोत बने हुए हैं।

साध्वीप्रमुखाश्री जी के दृढ़ संकल्प का प्रथम प्रहरी है- जागरूकता। इसीलिए संकल्प कभी विकल्पों में नहीं भटकता। प्रकृति में भी देखा जाए तो जो वृक्ष प्रारंभ से जड़ों के सिंचन से तने को मजबूती देते हैं वह ऊंचा बढ़ जाता है। जो वृक्ष कम ऊंचाई में भी शाखा, प्रशाखाओं में बंट जाता है, वह ऊंचाई को प्राप्त नहीं कर पाता है जैसे एरण्ड का वृक्ष ऊंचा नहीं बढ़ पाता, जबकि नारियल का पेड़ एक लक्षी हो तने को उन्नत करता है और अंत में शाखा-प्रशाखाओं व अमृत सम पेय और श्रीफल पैदा करता है। इसी प्रकार जो व्यक्ति विकल्प रूपी प्रशाखाओं में न उलझकर संकल्प रूपी तने को मजबूती देता है वह उन्नत हो जाता है।

अविकल्प संकल्प की प्रतिमा साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी के उन्नत बनने का कारण है- अटल संकल्प। जो उनकी तपस्या, साधना, लेखन, गुरुनिष्ठा, साधुचर्या, दिनचर्या आदि अनेक आयामों में नींव का पत्थर बना हुआ है। अविकल्प संकल्प को नमन।

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी के चयन दिवस पर विशेष

स्वाध्याय-योग की अप्रतिम प्रतिमा साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा

● साध्वी मुदितयशा ●

अध्यात्म के शिखर पर आरोहण का एक सशक्त सोपान है स्वाध्याय। 'स्व' के अध्ययन एवं 'स्व' की परिक्रमा से जुड़ा 'स्वाध्याय' शब्द व्यापक संदर्भों में प्रयुक्त होता है। स्वाध्याय शुभ योगों में रमण करने की एक सुंदर प्रविधि है। स्वाध्याय के द्वारा अज्ञात विषय ज्ञात बनता है तथा ज्ञात विषय के संस्कार मज्जागत होते हैं। यह ज्ञान को सुस्थिर बनाने का अमोघ उपक्रम है।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी की साधना का एक अनन्य आयाम है स्वाध्याय। आपका स्वाध्याय के प्रति नैसर्गिक अनुराग है। आपने जीवन के दूसरे दशक में पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रवेश किया। उस समय आप ब्रह्म मुहूर्त में उठकर नियमित स्वाध्याय किया करती थी। वह क्रम आज भी यथावत् चल रहा है। उस समय आप स्वयं स्वाध्याय करती और अपने आस-पास रहने वाली बहनों को भी प्रेरित करती रहती। आज भी अनेक साध्वियां और समणियां बड़े कृतज्ञ भाव से इस बात का जिक्र करती हैं कि साध्वी प्रमुखा श्री जी की प्रेरणा का ही परिणाम है कि हमारा कंठस्थ ज्ञान आज भी पक्का है। आगम साहित्य में स्वाध्याय के पांच प्रकार निर्दिष्ट हैं- वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा और धर्मकथा।

ज्ञान की विशदता का उपक्रम है वाचना

स्वाध्याय का पहला प्रकार है वाचना। वाचना का अर्थ है दूसरों को पढ़ाना, अध्ययन कराना। किसी वस्तु का दान देना सरल है, पर ज्ञान का दान देना बहुत कठिन है। यह हर किसी के वश की बात नहीं होती। जो दूसरों को ज्ञान देता है, वह स्व और पर दोनों को लाभान्वित करता है। उसके ज्ञान की विशदता स्वतः बढ़ती है। साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी के उपपात में वाचना का क्रम निरंतर चलता रहता है। समणश्रेणी में आपके पास अनेक समणियां रहीं, आप उनको अध्ययन कराती, अध्ययन हेतु प्रेरित करती। समणी प्रसन्नप्रज्ञा जी नवदीक्षित समणी के रूप में आपके पास रही। वे ब्राह्मी विद्यापीठ की एक स्वयंपाठी छात्रा के रूप में अध्ययनरत थी। आप रात्रि में दो बजे से तीन बजे तक उनको पढ़ाती। चार विषयों का कोर्स पूर्ण कराया। उनके जीवन का यह एक ऐसा संस्मरण है जिसे याद कर उनका हृदय गद्गद् हो जाता है। साध्वी बनने के बाद भी आपके अध्ययन-अध्यापन दोनों का क्रम चलता रहा। सबसे बड़ी बात यह है कि आज भी वह क्रम निर्बाध चल रहा है।

योजना आगमवाचन की

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी ने साध्वीप्रमुखा के गरिमामय पद पर प्रतिष्ठित होने के बाद आगमवाचन की सुदीर्घ योजना बनाई। सर्वप्रथम संस्कृत भाषा में प्रणीत आचारांगभाष्य का वाचन प्रारंभ दिया। प्रातःकालीन अर्हत् वंदना से पूर्व अनेक साध्वियां आपके उपपात में पहुंच जाती। एक-एक शब्द का अर्थसहित वाचन होता तथा साथ-साथ परिचर्चा भी चलती। उसके बाद आयारचूला का अर्थ और टिप्पण सहित वाचन कराया। सूत्रकृतांग प्रथम श्रुतस्कन्ध का वाचन परिसंपन्नता पर है। आगे सूत्रकृतांग द्वितीय श्रुतस्कन्ध का वाचन संभावित है। रात्रि के समय भी आपके पास वाचन चलता है। मुंबई चतुर्मास में अति व्यस्तता के बावजूद आपने साध्वियों को दसवेआलियं, कल्याण मंदिर आदि ग्रंथों का अर्थ सहित वाचन कराया। व्यक्ति स्वयं अध्ययन करता है, कोई ग्रंथ पढ़ता है तो उसके जीवन में ज्ञान का नया दीप प्रज्ज्वलित होता है। वही जब दूसरों को पढ़ाता है तो ऐसा लगता है कि एक दीप से अनेक दीप एक साथ प्रज्ज्वलित हो रहे हैं।

योगदान ज्ञानाराधना में

जो वाचना देता है, वह ज्ञान का वितरण करता है। इसी तरह जो किसी की ज्ञानाराधना में प्रेरक एवं सहयोगी बनता है वह भी प्रकारान्तर से ज्ञान का वितरण करता है। प्रसंग सन् 2005 का है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का चतुर्मास दिल्ली में था। आचार्यवर के निर्देश से आपने चार शैक्ष संतों एवं एक शैक्ष साध्वी इस प्रकार पांच विद्यार्थियों को छठी क्लास से अध्ययन शुरू करवाया। सात वर्षों तक अध्ययन का क्रम चला। सप्तवर्षीय अध्ययन की संपन्नता पर आचार्य श्री महाश्रमण जी की सन्निधि में अनौपचारिक दीक्षान्त समारोह सा हो गया। उस समय आचार्यवर ने यही फरमाया- इन पांचों के अध्ययन में प्रिंसिपल की भूमिका रही मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा जी की।

आचार्यश्री महाश्रमणजी का सन् 2018 का चतुर्मास चेन्नई में था। उस समय हमारे धर्मसंघ में महाप्रज्ञ श्रुताराधना के रूप में गहन-गंभीर आगमाधारित पाठ्यक्रम की योजना बनी। उसकी पृष्ठभूमि में भी मुख्य नियोजिका जी की प्रार्थना निमित्त बनी। आचार्यवर ने पाठयक्रम की पूरी रूपरेखा तैयार करवाई और उसके संचालन की ऑफिशियल जिम्मेदारी आपको सौंप दी। आज भी इस पाठ्यक्रम से जुड़ी संपूर्ण प्रक्रिया का मुख्य दायित्व आप पर है। इस प्रकार अनेक ज्ञानार्थियों की ज्ञानाराधना में आपका विशेष योगदान रहा है। आपका एक सुंदर सपना है कि हमारे धर्मसंघ में साधु-साध्वियों के ज्ञान का धरातल ठोस बने। ज्ञान के पर्यव निर्मल से निर्मलतर हों।

संदेह-निवर्तन का उपाय है जिज्ञासा

स्वाध्याय का दूसरा प्रकार है पृच्छना। जिज्ञासा ज्ञानचेतना के विकास का पायदान है। साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी के मन में जिज्ञासा की उर्मियां उठती रहती हैं। यदा कदा आपकी जिज्ञासाएं मुखर भी होती हैं। कहा जाता है जिसके भीतर जिज्ञासा होती है वह अपने संदेहों का निवर्तन कर लेता है।

एक बार महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की सन्निधि में 'नीतिशतकम्' ग्रंथ का अर्थ चल रहा था। वहां एक पंक्ति है -'जातिर्यातु रसातलं गुणगणस्तस्याप्यधो गच्छतां'- आपने जिज्ञासा की - महाराज! जैसे 'यातु' क्रिया है वैसे ही गच्छतात् क्रिया का प्रयोग हो सकता था, गच्छतां क्यों? साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने फरमाया- प्रश्न उचित है, इस संदर्भ में सोचकर बताना होगा। आपने उसी समय वहां उपस्थित साध्वियों को प्रेरणा देते हुए कहा- जब भी वाचन होता है मुख्य नियोजिका जी जिज्ञासा करती रहती हैं। जिज्ञासा की वृत्ति सबमें होनी चाहिए। इससे ज्ञान का विकास होता है।

महाश्रमणी जी अपने वक्तव्यों में जब भी संस्कृत या प्राकृत भाषा के श्लोक फरमाती तो आप बड़े गौर से सुनती। यदि किसी भी शब्द अथवा चरण का अर्थ समझ में नहीं आता तो स्थान पर आने के बाद महाश्रमणजी जी से पूछकर अर्थ को हृदयंगम करने का प्रयास करती। आज भी आप कोई ग्रंथ पढ़ती हैं और यदि कोई बात स्पष्ट नहीं होती तो उसे अनदेखा नहीं करती। तत्काल संबद्ध साध्वियों से पूछती हैं अथवा कभी-कभी गुरुदेव से पूछकर भी समाधान प्राप्त करने का प्रयास करती हैं। जिज्ञासा से विषय की स्पष्टता होती है। विषय की जितनी स्पष्टता होती है उतनी ही ज्ञान की गहराई बढ़ती है। साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी की ज्ञानविकास की यात्रा में जिज्ञासुवृत्ति की प्रभावी भूमिका रही है।

परिवर्तना बनाम ज्ञान की सुस्थिरता

स्वाध्याय का तीसरा प्रकार है परिवर्तना। परिवर्तना का अर्थ है पुनरावर्तन करना, दोहराना। प्राचीन समय में ज्ञान गुरु-परंपरा से चलता था। इसलिए उस समय कंठस्थीकरण का बहुत मूल्य था। हमारे धर्मसंघ में कंठस्थ करने की सुंदर परंपरा रही है। आज भी दीक्षित होने से पूर्व और दीक्षित होने के बाद कुछ चीजों को कंठस्थ करना अनिवार्य होता है। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी की प्रारंभ से ही कंठस्थ करने की विशेष अभिरूचि रही है। आपको हजारों-हजारों गाथाएं मुखस्थ हैं। आज भी आप कुछ न कुछ नया सीखती रहती हैं।

कभी-कभी कंठस्थ करना आसान होता है, पर सम्यक् परावर्तन न होने से उसे सुरक्षित रख पाना कठिन होता है। कुछ व्यक्ति प्रारंभ में पुनरावर्तन करते हैं, पर धीरे-धीरे संकल्प शिथिल हो जाता है। अपने संकल्प पर दृढ़ता से डटे रहने वाले विरल होते हैं। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी उन विरल व्यक्तित्वों में हैं, जो स्वाध्याय को अपनी दिनचर्या का अहम हिस्सा मानती हैं। स्वास्थ्य की अनुकूलता के अभाव में कदाचित् रात्रि में शयन जल्दी करना पड़े, पर सुबह के समय स्वाध्याय का क्रम शायद ही कभी विच्छिन्न होता है। सन् 2008 का आचार्य महाप्रज्ञ का चतुर्मास जयपुर में था। उस समय आपको टाइफाइड हो गया। रात्रि के समय बैचेनी रहती थी, पर चार बजे आप नियमतः उठ जाती। परिपार्श्व में सोने वाली साध्वियों को उठा देती और कहती- स्वाध्याय शुरू करो। कभी-कभी तो ऐसा लगता स्वाध्याय करते-करते आप अपनी वेदना भी मानो भूल गई हैं। इसे आपकी स्वाध्यायप्रियता का एक उच्चतम निदर्शन कहा जा सकता है।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के सान्निध्य में चार बजे के बाद नियमित स्वाध्याय होता था। स्वाध्याय करने वालों की एक मंडली सी बनी हुई थी। उसमें एक मुख्य नाम आपका था। वर्तमान में आपकी सान्निधि में स्वाध्याय का वह क्रम उसी तरह चलता है। वे व्यक्ति सौभाग्यशाली होते हैं, जो ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्वाध्याय करते हैं। ऐसा माना जाता है कि जो सुबह-सुबह आगमों एवं आगमतुल्य ग्रंथों का शुद्ध उच्चारणपूर्वक नियमित स्वाध्याय करते हैं, उनकी वाणी पवित्र हो जाती है। स्वाध्याय करने वाला इस जन्म में ही नहीं अग्रिम भव में भी आदेयवचन वाला होता है। उसकी बात को बड़े सम्मान के साथ सुना जाता है। स्वाध्याय विपुल कर्मनिर्जरा का माध्यम है। स्वाध्याय में तल्लीनता जब प्रकर्ष पर पहुंचती है तो साधक ध्यान की स्थिति में चला जाता है। साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी की स्वाध्यायविषयक एकाग्रता प्रशस्य है।

अनुप्रेक्षाः अर्थ की परिक्रमा

स्वाध्याय का चौथा प्रकार है अनुप्रेक्षा। अनुप्रेक्षा में अर्थ का अनुचिन्तन चलता है। किसी भी ग्रंथ का सृजन शब्दों से होता है। वे शब्द कितने सटीक हैं, इसका भी बहुत मूल्य है, लेकिन उससे भी ज्यादा मूल्य है शब्दों में निहित भावों का। अर्थ का सौष्ठव और भावों का गांभीर्य शब्दों को भी प्राणवान् बना देता है। शाब्दिक परावर्तन के साथ-साथ यदि अर्थ की परिक्रमा भी चलती रहे तो वह भाव स्वाध्याय बन जाता है। साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी का स्वाध्याय प्रायः भाव स्वाध्याय होता है। आपको जो ग्रंथ कंठस्थ हैं उनका अर्थ भी विज्ञात है। आप बहुधा कहती हैं- अर्थ सहित स्वाध्याय करने से भीतर में आनंद का एक अलग ही रसायन पैदा होता है। साध्वीप्रमुखा श्री जी के सान्निध्य में सुबह के समय बहुधा किसी न किसी ग्रंथ का अर्थ चालू रहता है। तत्वसंबंधी चर्चाए भी चलती रहती हैं। ज्ञानचेतना के विकास एवं विस्तार का एक महत्वपूर्ण उपक्रम है अनुप्रेक्षा।

(शेष पेज 19 पर)

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी के चयन दिवस पर विशेष

शोभामय विकास यात्रा के शुभ सोपान

● साध्वी तन्मयप्रभा ●

विकास की यात्रा में सतत गतिशील विराट् व्यक्तित्व के महिमामंडित पगथिए मार्गदर्शक बनते हैं, अनुरागियों एवं अनुगामियों के लिए। आचार्यप्रवर ने कुछ दिन पूर्व साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी की सेवा के विषय में 'शोभामय' विशेषण का प्रयोग किया। आपके जीवन को किसी भी कोण से देखें तो वह शोभामय प्रतीत होता है। आपके जीवन की साधना, आराधना एवं शासना शुभंकर एवं क्षेमंकर बनी हुई है। ये सद्गुण आपके गौरव को शतगुणित कर रहे हैं। शोभामय विकास का प्रथम सोपान है- शोभामय आराधना ।

1. शोभामय आराधना-

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ और आचार्य महाश्रमण- इन तीनों गुरुओं की शुभदृष्टि की सर्वतोभावेन समर्पण के साथ आराधना की। न कभी आज्ञा में अपील की, न ही समर्पण में सवाल किया। 'आज्ञा गुरुणां ह्यविचारणीया' इस सूक्त की निर्विकल्प साधना की। गुरुत्रय की समर्पण पूर्वक आराधना के कारण आप उनके वात्सल्य, कृपा एवं विश्वास से हमेशा अभिस्नात रही।

आपका समर्पण समणी दीक्षा की पूर्व भूमिका में स्पष्ट परिलक्षित होता है। जहां स्वयं मुमुक्षु बहनें एवं उनके पारिवारिक जन समण दीक्षा हेतु तैयार नहीं थे, वहां मुमुक्षु सविता ने सर्वात्मना समर्पण प्रस्तुत कर समणश्रेणी की प्रथम पंक्ति में दीक्षित होने का गौरव प्राप्त किया। विशिष्ट क्षमताओं को अंतर्गर्भित रखने वाला नन्हा सा बीज आत्म समर्पण के आधार पर वटवृक्ष का विशाल रूप धारण कर लेता है। उसी प्रकार मुमुक्षु सविता के रूप में किए गए आपके समर्पण ने आपको आज तेरापंथ की विशाल साध्वी समाज का शिरोमणि बना दिया।

राजस्थान में चंदेरी के उपनाम से विख्यात 'लाडनूं' शहर में आपका जन्म हुआ। कहा जाता है प्रतिभा परिवेश के बंधनों को भी लांघ देती है। आपने गाँव के अंग्रेजी विहीन उस परिवेश को लांघकर अपनी प्रतिभा से अंग्रेजी में लेखन और वक्तृत्व की बेजोड़ क्षमता हासिल की। आपने समय-समय पर देश-विदेश में होने वाले विविध सम्मेलनों में तेरापंथ का प्रतिनिधित्व कर गरिमामय प्रस्तुति दी। भले वह रोम एवं बारी (इटली) में पॉप पॉल के साथ कांफ्रेंस का प्रसंग हो या एलबाना फ्लोरेंस विश्वविद्यालय में उद्बोधन का अवसर हो । आपने आचार्य श्री महाप्रज्ञजी की अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकों के अंग्रेजी अनुवाद का कार्य परिसंपन्न कर अपने व्यक्तित्व को विशिष्ट पहचान दी।

आपने गुरुदृष्टि की अनवरत आराधना की है। 'इंगियागार संपन्ने' इस सूक्ति को जीवन में चरितार्थ किया। जो निर्देश प्राप्त हुआ उसका अक्षरशः पालन आपके जीवन का अटल ध्येय रहा। चाहे वह समणी दीक्षा का प्रसंग हो या श्रेणी आरोहण का, नियोजिका के दायित्व निर्वहन का कार्य हो या फिर संस्था के संरक्षण का कार्य हो, विदेश यात्रा का अवसर हो या फिर आगम कार्य का प्रसंग हो। 'एके साधे सब सधे'- इस उक्ति को आदर्श मानकर आपने गुरुदृष्टि को साधकर सर्वस्व साधने का सार्थक प्रयत्न किया है।

तुलसी-महाप्रज्ञ युग में आपको विकास के अनेक अवसर प्राप्त हुए। एक-एक सोपान पर आरोहण करते हुए अनवरत आगे बढ़ते रहे। आपने आचार्य महाप्रज्ञजी की विशेष कृपा प्राप्त की। आचार्य महाप्रज्ञजी का कृपापूर्ण मार्गदर्शन आपकी विकास यात्रा में प्रबल निमित्त बना। जैन दर्शन के अनुसार बहुत सारी बातें द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव सापेक्ष होती हैं। परंतु आचार्य महाप्रज्ञजी के प्रति आपका समर्पण सदा एकरूप रहा। सन् 1992 के दीक्षा महोत्सव में 20 दीक्षार्थी भाई बहनों के नामों की घोषणा के पश्चात् 21 वीं दीक्षा किसकी हो? यह दायित्व आचार्य महाप्रज्ञजी को सौंपा गया। मात्र एक सप्ताह पूर्व आपको श्रेणी आरोहण का आदेश प्राप्त हुआ। उस समय गुरूदेव तुलसी ने आपकी विदेश यात्रा में उपयोगिता का उल्लेख आचार्य महाप्रज्ञजी के सम्मुख किया तब उन्होंने फरमाया- ₹अठे भी उपयोगी बणसी₹। ऐसा लगता है सिद्धपुरूष के वे सिद्ध वचन प्रतिपल सार्थक सिद्ध हो रहे हैं।

गुरुओं ने आपको जब जिस कार्य में नियोजित किया, आपने अपने श्रम, समर्पण, प्रतिभा, बुद्धि एवं विवेक से उन्हें शत-प्रतिशत क्रियान्वित करने का प्रयास किया। गुरुत्रय ने जितना विश्वास किया उससे सवाई पात्रता सिद्ध की। आपका जीवन निर्विकल्प समर्पण, अविचल श्रद्धा, कार्यदक्षता, संयमित जीवनशैली, प्रशासनिक क्षमता एवं विनम्रता आदि विशेषताओं का समवाय है। आचार्य महाप्रज्ञजी की जन्म शताब्दी के अवसर पर महाप्रज्ञ वाङ्मय के महनीय कार्य के समायोजन- संपादन का मुख्य दायित्व आपको सौंपा गया। उस गुरुतर कार्य की परिसंपन्नता पर परमपूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी की प्रसन्नता ने पूरे वातावरण को उल्लासमय बना दिया। सारा कार्य सुव्यवस्थित देखकर स्वयं आचार्यप्रवर आश्वस्त थे। इस प्रकार आपके जीवन के अनेक प्रसंग हैं, जहां आपका समर्पण, आपकी आराधना शोभामय विकासयात्रा का शुभ सोपान बनी।

2. शोभामय साधना-

साध्वीप्रमुखाजी की शोभामय जीवन-यात्रा का मुख्य सोपान है- उनकी अनुत्तर साधना, चित्त को निर्मल बनाने वाली निस्पृह चेतना, मन को संतुलित रखने वाली मध्यस्थ मनोवृत्ति। 'समयं गोयम! मा पमायए' यह आगमसूक्त आपके जीवन का आदर्श वाक्य रहा है। कषायों का उपशमन एवं योगों की स्थिरता आपके अप्रमत्त जीवन का जीवंत उदाहरण है। आपका साधनामय जीवन प्रेरणा का प्रकाशपुंज है जो संपूर्ण साध्वीजगत को संप्रेरित, आलोकित करता रहता है। जागरण से लेकर शयन तक की पूरी दिनचर्या अप्रमत्तता से परिपूर्ण है। साढ़े तीन बजे द्रव्यनिद्रा से जागृत हो आप जप-ध्यान की साधना में तल्लीन हो जाती हैं। आप मंत्र साधना एवं ध्यान योग द्वारा कर्म दलिकों को प्रतनु करने की दिशा में अहर्निश प्रयत्नरत हैं।

संस्था के प्रारंभिक काल से ही जप-ध्यान एवं स्वाध्याय आपका नित्यक्रम रहा है। आज भी आपका स्वाध्याय घोष सुनकर हम छोटी साध्वियों की निद्रा छूमंतर हो जाती है। तप के द्वारा साधना की तेजस्विता में नया निखार आया है। संस्था में ही उपवास-पौषध आदि में आपकी विशेष रुचि थी। समणश्रेणी में प्रवेश करते ही आपकी साधना ने तीव्र गति से बल पकड़ा। श्रेणी की संयमित दिनचर्या का लाभ उठाकर काफी समय प्रयोगात्मक साधना में लगाया। कायोत्सर्ग प्रतिमा के प्रयोग ने आपके आध्यात्मिक व्यक्तित्व को और ऊर्जस्वल बनाया है। इसकी आप समय-समय पर प्रेरणा भी प्रदान करती थी। साधना के अनेक प्रयोग आपके जीवन में सुचारू रूप से चले और समय के साथ प्रवर्धमान भी बने। जैसे-

अष्टमी, चतुर्दशी, तेरस को उपवास करना। धीरे-धीरे आप महिने में सात उपवास भी करने लगे। तुलसी जन्म शताब्दी एवं महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी में सौ-सौ उपवास का संकल्प किया। प्रलम्ब यात्रा के बावजूद भी उस संकल्प को पूर्ण किया। कोरोना काल में प्रतिमाह एक तेले का अनुष्ठान किया। आपकी तप रुचि आपके मुखमंडल पर परिलक्षित होती है। साध्वियां अनेक बार अनुभव करती हैं कि तपस्या के दिन आपके चेहरे पर विशेष प्रसन्नता रहती है।

रविवार को नमक परिहार का आपने वर्षों तक प्रयोग किया है।

समण श्रेणी के लगभग प्रारंभिक छह वर्षों तक आपके चीनी एवं चीनी मिश्रित सभी द्रव्यों का वर्जन था। हम साध्वियों द्वारा पूछा गया- यह संकल्प क्यों? आपने फरमाया- नियोजिका होने के नाते विशिष्ट द्रव्यों के ग्रहण हेतु समणीजी का आग्रह रहता। मुझे यह इष्ट नहीं था। अतः मैंने त्याग को ही श्रेयस्कर माना। त्याग शब्द के समक्ष आग्रह स्वतः ही विलीन हो जाता है।

आपकी संतुलित जीवन शैली और मनःस्थिति संपूर्ण साध्वी समाज के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। यह शोभामय विकास यात्रा का शुभंकर सोपान है।

3. शोभामय शासना-

शासना का अर्थ है नेतृत्व। यह वो मशाल है जो स्वयं को ज्योतिर्मय बनाती हुई दूसरों को भी प्रकाशित करती है। आपकी साधना की तेजस्विता के कारण शासना भी प्रकाशमयी बन गई है। साधनामार्ग में प्रवेश एवं प्रशासनिक व्यक्तित्व का प्रारंभ दोनों आपके जीवन में समानांतर रेखा की भांति चले हैं।

प्रशासनिक योग्यता का प्रारम्भिक सूत्र है- आत्मानुशासन। 'निज पर शासन-फिर अनुशासन' यह अनमोल वचन आपके जीवन में देखा जा सकता है। आप स्वयं अनुशासित हैं और अनुशासनमय वातावरण ही आपको प्रिय है। आपके अनुशासित रूप की मुमुक्षु बहनों एवं संस्था के संरक्षक वर्ग पर गहरी छाप थी। आपसे बहनें संकोच का अनुभव भी करती थी। बहनों में एक धारणा थी ₹एक नजर डाली, बरामदा खालीं₹। आपकी एक आंख में अनुशासन था तो दूसरी में वत्सलता। दूर से भीत होने वाला अगर एक बार आपकी सन्निधि मे आता तो वह आपका हो जाता।

समणश्रेणी में भी आपके अनुशासन के अमिट पदचिन्ह अंकित हैं। आचार्य श्री तुलसी ने आपकी प्रशासनिक योग्यता का अंकन कर आपको प्रथम समणी नियोजिका बनाया। वह छह वर्षीय कार्यकाल समणश्रेणी के विकास में मील का पत्थर साबित हुआ।

'सबका विकास-सबका विश्वास'- यह आपके चिंतन में अनवरत रहता था। समणश्रेणी तथा पारमार्थिक शिक्षण संस्था के संरक्षण एवं संवर्धन में आपका विशेष योगदान रहा है।

श्रेणी आरोहण के पश्चात् आपका प्रशासनिक व्यक्तित्व नए-नए आयाम छूता गया। अचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने समणश्रेणी के रजत जयंती के शुभ अवसर पर आपको मुख्य नियोजिका के पद पर प्रतिष्ठित किया। आपने अपनी साधना के साथ-साथ समणश्रेणी और मुमुक्षु श्रेणी के विकास में भी अपने श्रम, शक्ति और समय का सम्यक् समायोजन किया।

आचार्य श्री महाश्रमण जी ने शासनमाता साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभाजी के महाप्रयाण के दो माह पश्चात् आपश्री को नवम साध्वीप्रमुखा के रूप में मनोनीत किया। वर्तमान में आप साध्वी समाज की सारणा- वारणा के साथ प्रत्येक साध्वी की चित्त समाधि का ध्यान रखते हैं। आप साध्वी समाज की आचार व्यवस्था को मजबूत बनाने के साथ-साथ साध्वियों को संस्कृत-अध्ययन, महाप्रज्ञ श्रुताराधना, तत्वज्ञान का पाठ्यक्रम अथवा अन्य विकास योजना के साथ जुड़ने की बराबर प्रेरणा प्रदान करते रहते हैं।

वर्तमान में केवल साध्वी समाज ही नहीं अपितु श्रावक-श्राविका समाज भी आपकी कुशल अनुशासना में आनंद एवं तोष की अनुभूति कर रहा है। 103 डिग्री ज्वर की स्थिति में और शिरोवेदना का अनुभव करते हुए भी आप मुंबई में नंदनवन से पांच किमी. दूर महिला मंडल के अधिवेशन के दौरान कार्यक्रम में पधारे। यह आपकी वत्सलता का परिणाम है। पारिवारिक संभाल, घरों का स्पर्श आदि से भी आप श्रावक समाज की श्रद्धा को और सुदृढ़ बना रही हैं।

इस प्रकार आपकी शोभामय आराधना, शोभामय साधना एवं शोभामय शासना आपके संपूर्ण जीवन को शोभास्पद बना रही है। शोभमय विकास यात्रा के ये सोपान संपूर्ण संघ के लिए शुभंकर, शिवंकर व क्षेमंकर बने। आपकी शासना साध्वी समाज के लिए वरदायी बने, मंगलकामना।

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी के चयन दिवस पर विशेष

वर्धापन मंगल वेला आई

● साध्वी रौनकप्रभा ●

वर्धापन मंगल वेला आई,
साध्वी प्रमुखा जी को देते बधाई।
रहो निरामय करो शासना,
मंगलभावों की भेंट मैं लाई।।

धन्य धन्य चंदेरी प्रांगण,
धन्य तेरा उदितोदित शासन।
महक उठी है गण फुलवारी,
प्रखर विश्रुतविभा अनुशासन।।

तुलसी चरण संयम पावन,
महाप्रज्ञ से श्रुत अवगाहन।
महाश्रमण की कृपा सवाई,
साध्वी प्रमुखा नवमी पाई।।

सहज सरलता है अलबेली,
सुंदर लेख प्रवचन शैली।
गण नंदनवन परिकर में तव,
गुण सुमनों की सुरभि फैली।

स्वाध्याय, ध्यान, सेवा अनुरक्ति,
जिनशासन में गहरी भक्ति।
साधना के नव उपक्रम चलाएं,
संघ विकास लगे तव शक्ति।।

दो आशीर्वार बढ़ते जाएं,
शिखरों को हम छूते जाए।
साधना के पंख लगाकर,
आसमां में उड़ते जाएं।।

स्वर्णिम भोर का अभिनंदन

● साध्वी राजुलप्रभा ●

स्वर्णिम भोर का अभिनंदन,
स्वर्णिम दौर का अभिनंदन,
वंदन, चयन दिवस पावन दिन आया,
विश्रुत आभावलय सुहाया,
करें हम शत-शत वर्धापनम् महासतीवर,
चयन दिवस है सुंदरं महासतीवर,
चयन दिवस है शोभनम्।।

ज्य हो जय ज्योतिचरण की, जय हो जय महाश्रमण की,
गण को नव ज्योतिकिरण दी हम हैं खुशहाल,
साध्वी प्रमुखाश्री पद, आपसे हुआ सुशोभित,
नय युग ने दस्तक दी, हम हैं खुशहाल।
नया सृजन सुरभित गण बगिया, प्रज्ञा से निखरे गण कलियां।।

कैसे हम तुम्हे बहाएं, वर्धापन स्वर गूंजाए,
भाव उपहार सजाएं, शुभ भूयात्
छूलें दिव्य आसमां, सफल हो सारे अरमां,
साधना की शुभ प्रतिभा, शिवं भूयात्।
शिवास्तु ते सन्तु पन्थानः, हर दिल गाए यही तराना।।

साध्वीप्रमुखा श्री बेस्ट, चिन्तन शैली लेटेस्ट,
ईस्ट हो चाहे वेस्ट, चढ़े एवरेस्ट,
साध्वी विकास में इंटरेस्ट, हमारी हार्दिक रिक्वेस्ट,
साध्वीवृंद प्रगति पथ पर बढे फास्टेस्ट,
दृष्टि आराधन कर पाएं, हर इंगित साकार बनाएं।।

लय - तूने पायल है छलकाई

गण में दीवाली आई

● साध्वी समत्वयशा ●

आई रे आई रे शुभ घड़ी आई, गण में दीवाली आई।
भाई मन भाई सगला रे मन भाई श्रमणी सरदार भाई।।

मंगल गावां सति शेखरे आज बधावां।
ल्यो स्वीकारो भावांजलियां झुक-झुक शीश नमावां।
दसूं दिशावां आज विरुदावै, बाजै है यश शहनाई।।

आभारी श्रमणी परिकर प्रभुवर रो।
मनोनयन साध्वीप्रमुखा रो हरख्यो हर मनड़ो।
चयन हुयो ओ मनहर विभुवर भाग्यलता विकसाई।।

दिल दरियो ओ हर्ष हिलोरा खावै।
सक्षम प्रमुखा पाकर सारो साध्वी गण मुस्कावै।
उजली-उजली किरणां थांरी गौरव गाथा सुणावै।।

श्री सरदार नवल सहित जेठा कानकुमारी।
झमकू लाडां कनकप्रभा जी सगला स्यूं न्यारी।
विश्रुत विभा नवमें पाट विराजै, जागी गण री पुण्याई।।

लय - कांची रे कांची

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा
वर्ष 2024 हेतु नवीन घोषित चातुर्मास
साध्वी रविप्रभा जी : कृष्णानगर-गांधीनगर, दिल्ली
साध्वी राकेशकुमारी जी : चेम्बूर, मुम्बई

पृष्ठ 23 का शेष

सत्य की साधना से...

वर्तमान में चुनावी माहौल चल रहा है, एक दूसरे पर प्रहार होता है पर झूठा प्रहार नहीं होना चाहिए। किसी पर झूठा आरोप अपनी वाणी से नहीं लगाना चाहिये। झूठा आरोप लगाने से जिह्वा के साथ आत्मा भी अपवित्र हो सकती है।

छत्रपति संभाजीनगर में अक्षय तृतीया महोत्सव करने पधारे आचार्य प्रवर ने फरमाया- अक्षय तृतीया का संबंध भगवान ऋषभ और वर्षीतप के पारणे से जुड़ा हुआ है। तीर्थंकर विश्व की महान विभूतियां होते हैं, जिनसे जनता को पथदर्शन मिलता है।

दुनिया में साधु समुदाय का होना भी मानों दुनिया का सौभाग्य है। ₹संत न होते जगत में जल जाता संसार।₹ संतों के उपदेश से लोग कितनी बुराईयों से बच सकते है, अच्छे मार्ग पर चलने वाले हो सकते हैं। 69 वर्ष पूर्व आचार्य श्री तुलसी के सान्निध्य में औरंगाबाद में महावीर जयंती के कार्यक्रम में आगम सम्पादन करने की घोषणा की थी। हम प्रयास करें आगम सम्पादन का कार्य शीघ्र सम्पन्न हो जाए।

चतुर्दशी के दिवस पर पूज्य प्रवर ने हाजरी का वाचन कराते हुए मर्यादाओं के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा प्रदान की। साधु-साध्वियों ने लेख-पत्र का उच्चारण किया।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि आचार्य प्रवर जहां-जहां पधारते हैं वहां प्रवचन करते हैं। प्रवचन से लोग जागृत होते हैं। जागृत रहने वाले व्यक्ति की बुद्धि का विकास होता है। प्रवचन से लोगों की विवेक चेतना जागृत होती है। गुरुदेव हित की बात बताते हैं, उपशम की चेतना जागृत करने की प्रेरणा देते हैं।

पूज्य प्रवर के स्वागत में डॉ भूमरे, आचार्य महाश्रमण अक्षय तृतीया प्रवास व्यवस्था समिति अध्यक्ष सुभाष नाहर, मुस्लिम धर्म गुरु मौलाना हबीद अंसारी, ईसाई धर्मगुरु बिशप कसाब, मारवाड़ी सभा के पुरुषोत्तम दरक, सकल जैन समाज के अध्यक्ष राजेंद्र दर्डा आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मंडल ने स्वागत गीत का संगान किया। पूज्य प्रवर के दर्शनार्थ राजनीति, सामाजिक, व्यापारिक क्षेत्र के अनेकों गणमान्य लोग उपस्थित हुए। स्वागत कार्यक्रम का संचालन सकल जैन समाज के सचिव महावीर पाटनी ने किया। गुरुदेव के सान्निध्य में जैन विवेक पत्रिका के विशेषांक का विमोचन किया गया।

अभातेयुप द्वारा पूज्य प्रवर के दीक्षा कल्याण महोत्सव वर्ष के उपलक्ष पर प्रकाशित युवादृष्टि विशेषांक 'चमन के बागवां' पूज्य प्रवर को समर्पित किया गया। इस संदर्भ में अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश डागा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

पृष्ठ 7 का शेष

गुरु सन्निधि के....

गीत की सम्पन्नता के बादः

पूज्य प्रवर - आज से ठीक 50 वर्ष पहले लगभग इस समय मैं सोकर उठा था। 5 मई 1974 को गुरुदेव तुलसी की अनुमति से मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी के पास मेरी दीक्षा हुई थी। मैं सुबह चार बजे उठकर मुनिश्री के पास गया और मैंने कहा- 'आज म्हारै सोनै रो सूरज उग्यो है। आपरै हाथां स्यूं म्हारी दीक्षा हुसी।' मेरी दीक्षा के समय एक विवाद चला कि दीक्षा कहां हो - न्यारा में या गुरुकुलवास में।

मुख्यमुनिश्री - पूज्य प्रवर आपश्री की क्या इच्छा थी?

आचार्य प्रवर - वैसे तो कहीं भी हो, किन्तु मेरी थोड़ी इच्छा थी कि दीक्षा मुनिश्री के पास हो जाए। उस समय रोशनलालजी स्वामी ने भी जोशीला भाषण बोला था। उन्होंने कहा- आज हम नौ निधि बनने जा रहे हैं। इन दो (हीरालाल, मोहनलाल) की दीक्षा के बाद हम 7 से 9 हो जाऐंगे। मोहन से सरदारशहर 21 होने जा रहा है और सरदारशहर से मोहन 21 होने जा रहा है। उस समय गंगाशहर के 17 सन्त थे और सरदारशहर के भी 17 सन्त थे। उन्होंने अपने भाषण में कहा- आज सरदारशहर ने गंगाशहर पर टांग फेर दी है। मैंने जब दीक्षा ली तब मैने भी भाषण बोला था। उसमें मेरी आवाज बच्चे जैसी लगती है। इस प्रकार पूज्य प्रवर ने अपनी दीक्षा से सम्बंधित कई अनुभव सुनाए। फिर फरमाया- आज तारीख के हिसाब से मेरा दीक्षा दिन है। ऐसा लगता है साध्वियों ने इस गीत के माध्यम से मेरी अभिवंदना कर दी हो।

मुझे भी आचार्य महाप्रज्ञ जी की सेवा का अवसर मिला है : मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

शाहदरा।

साध्वी अणिमाश्री जी एवं साध्वी संगीतश्री जी के सान्निध्य में ओसवाल भवन में तेरापंथी सभा शाहदरा के तत्वावधान में आचार्य महाप्रज्ञ के 15 वें महाप्रयाण का भव्य एवं गरिमामय कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में राजस्थान सरकार के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा- आचार्य भिक्षु तेरापंथ के जनक थे। सिरियारी में उनका पवित्र धाम बना हुआ जो हमारे राजस्थान का तीर्थस्थल है। मैं आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञजी व आचार्य महाश्रमणजी को नमन करता हूं। आचार्य तुलसी ने अनेक क्रांतिकारी कदम उठाकर तेरापंथ को सभी जैन संप्रदायों में महत्वपूर्ण संप्रदाय बनाने का काम किया। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने तेरापंथ धर्मसंघ को विश्व-क्षितिज पर प्रतिष्ठित किया। आचार्य महाश्रमणजी इसे व्यापकता प्रदान कर जनमानस में प्रतिष्ठित करने का श्रमसाध्य कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा- आचार्य महाप्रज्ञजी जैसे महापुरूष इस धरती पर कभी-कभी ही अवतरित होते हैं। उन्होंने शास्त्रों का गंभीर अध्ययन किया, 200 से अधिक पुस्तकों का लेखन कर साहित्य-जगत को समृद्ध किया। प्रेक्षाध्यान के द्वारा उन्होंने जनमानस को शांति का जीवन जीने का वरदान दिया है। मैं सौभाग्यशाली हूं कि मुझे भी आचार्य महाप्रज्ञजी के सान्निध्य में बैठकर सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ है।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने कहा- शून्य से शिखर तक पहुंचने वाली चेतना का नाम है- आचार्य महाप्रज्ञ। प्रज्ञा के महासमन्दर का नाम है- आचार्य महाप्रज्ञ। समर्पण व साधना के शलाका पुरूष का नाम है- आचार्य महाप्रज्ञ। उपशम-कषाय के महाशैल का नाम है, आचार्य महाप्रज्ञ। विवेक व विनम्रता के पर्याय का नाम है- आचार्य महाप्रज्ञ। आचार्य महाप्रज्ञजी ने अपने समर्पण के द्वारा अपने गुरु आचार्यश्री तुलसी के दिल में विशिष्ट स्थान बनाया। अपने समर्पण व प्रज्ञा के द्वारा वे गण के गोविन्द बने। आचार्य महाप्रज्ञजी के 15 वें महाप्रयाण दिवस पर राजस्थान सरकार के मुख्यमंत्री आए हैं। उनकी सहजता, सरलता, विनम्रता प्रशस्य है। पहली बार विधायक बनते ही मुख्यमंत्री बनना इनके जीवन का भाग्योदय है। आप परम पूज्य आचार्य महाश्रमणजी के दर्शन कर उनसे ऊर्जा प्राप्त करें। वो ऊर्जा आपके राज्य विकास में योगभूत बनेगी ऐसा मेरा मानना है।

साध्वी संगीतश्री जी ने कहा- आचार्य महाप्रज्ञजी के मुखमंडल पर चंद्रमा सी शीतलता व उज्जवलता के दर्शन होते थे। उनके तेजोद्दीप्त भाल पर सूर्य सी तेजस्विता झलकती थी। उनके चिन्तन में हिमालय सी ऊंचाई एवं विचारों में महासागर सी गंभीरता थी। वे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। ऐसा लगता है उनको साधना से अनेक सिद्धियां एवं लब्धियां हस्तगत हो गई थी। वे इस धरती के कल्पवृक्ष कामकुंभ एवं चिंतामणी सदृश थे। आचार्य महाप्रज्ञजी ने सत्य की खोज के लिए प्रेक्षाध्यान पद्धति का निरूपण किया। आचार्य महाप्रज्ञजी के अवदान मानव जाति के लिए वरदान है।

साध्वी शांतिप्रभा जी, साध्वी कमलविभा जी, साध्वी डॉ. सुधाप्रभाजी, साध्वी मुदिताश्रीजी ने अपने श्रद्धासिक्त भावों की प्रस्तुति दी। साध्वी समत्वयशाजी ने गीत का संगान किया। साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने मंच संचालन किया। साध्वीवृन्द ने सामूहिक गीत की प्रस्तुति भी दी। दिल्ली सभाध्यक्ष सुखलाल सेठिया, महामंत्री प्रमोद घोड़ावत शाहदरा सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद, ओसवाल समाज अध्यक्ष आनंद बुच्चा, महिला मंडल अध्यक्षा सरोज सिपानी, निगम पार्षद पंकज लूथरा, महासभा के पूर्व अध्यक्ष कमल दुगड़ ने विचार व्यक्त किए।

पृष्ठ 2 का शेष

कैसे बनाया संयम...

कायगुप्ति की यह साधना मनोगुप्ति और वचनगुप्ति के विकास में हेतुभूत बनती है। गुप्तित्रय की कठोर साधना आचार्य महाश्रमणजी के संयम-पर्यवों को उत्तरोत्तर अवदात बना रही है।

कर्म-निर्जरा का सर्वोत्तम साधन है- सेवा। आगम के व्याख्या ग्रंथों में उल्लेख आता है- 'जो रुग्ण और वृद्ध की सेवा करता है वह तीर्थंकरों की सेवा करता है।' आचार्य महाश्रमणजी ने सेवा व्रत को दैनन्दिन चर्या में अपनाया है। आपश्री के मन में सेवा के प्रति अहोभाव रहता है। साधु-साध्वियों को सेवा के लिए प्रेरित करते रहते हैं और स्वयं भी सेवा के कार्य के लिए तत्पर रहते हैं। आचार्य महाप्रज्ञजी के समय का प्रसंग है। युवाचार्य महाश्रमणजी ने निवेदन किया- 'आचार्यप्रवर! मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि जैसे सब साधु-साध्वियों को सेवा का अवसर मिलता है वैसे ही मुझे भी मिलना चाहिए। अभी मैं अवस्था में युवा हूं, सेवा करने में सक्षम हूं। अवस्था आने के बाद पता नहीं क्या स्थिति रहे, किन्तु आज तो आपकी कृपा से पूरा फिट हूं।' आचार्य महाप्रज्ञजी ने कहा- 'साधु-साध्वियों के लिए तो मात्र त्रैवार्षिक सेवा अनिवार्य है, परन्तु तुम्हारे ऊपर तो आजीवन संघ सेवा का दायित्व है।' युवाचार्यश्री ने विनत भावों से निवेदन किया-'पूज्यप्रवर! मेरा निवेदन औपचारिक नहीं है। मैंने आपश्री से कई बार यह भी निवेदन किया था कि मैं आपके साथ यात्रा करता हूं, आपके साधन के साथ चलता हूं, पर इस साथ चलने को मैं बहुत अधिक सार्थक नहीं मानता। इसे मैं सार्थक तब मानूंगा, जब साधन चलाने में मेरा उपयोग किया जाएगा।' प्रसन्न मुद्रा में आचार्य महाप्रज्ञजी ने कहा- 'महाश्रमण ने कई बार साधन चलाने की कोशिश की।

जैसे ही ये साधन चलाने का प्रयत्न करते हैं, सब साधु साधन छोड़कर दूर खड़े हो जाते हैं।' युवाचार्यश्री ने कहा- 'सचमुच संतों की ओर से बड़ी बाधा है। मैं बहुत चाहकर भी अपनी इच्छा को मूर्त रूप नहीं दे पाता।' आचार्यवर ने फरमाया- 'साधन चलाना सेवा का काम है, किन्तु इससे भी बड़ी सेवा है शासनरूपी साधन को कुशलता से चलाना। तुम शासन के रथ को अच्छी तरह संचालित करते रहो, यह सबसे बड़ी सेवा है।' युवाचार्यप्रवर ने विनम्र भावों से प्रार्थना की- 'पूज्यश्री! कभी-कभी मेरे मन में यह भी आता है कि अभी मैं युवा हूं, शारीरिक दृष्टि से सक्षम हूं। ऐसी स्थिति में खाली हाथ क्यों चलूं? कुछ पुस्तक-पन्नों और उपकरणों का बोझ अपने कन्धों पर उठाकर चलूं।' आचार्य महाप्रज्ञजी ने शिक्षामृत का पान कराते हुए फरमाया-'जो बोझ परम्परा से चलता आया है, वह बोझ मैं उठा रहा हूं और तुम्हें भी उसी बोझ को उठाना है, इसलिए तुम अपने कन्धों को मजबूत बनाओ।'

आचार्य महाश्रमणजी सजग प्रहरी बनकर चतुर्विध धर्मसंघ की जागरूकता के साथ सेवा कर रहे हैं। सेवा के संदर्भ में करणीय कार्यों में कभी विलम्ब भी नहीं करते। तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य की यह सजगता संगठन के प्रत्येक सदस्य के लिए आश्वस्ति का हेतु बन रही है। आचार्यवर का सेवा के प्रति उत्कृष्ट बहुमान ही उनके संयम-पर्यवों को शुभ्रतम बनाने में सहायक सिद्ध हो रहा है।

परमपूज्य आचार्य महाश्रमणजी ने सत्य की साधना और आराधना को अपने जीवन का मुख्य लक्ष्य बनाया है। संयम को आपने उसके साथ अनुस्यूत किया है, इससे आपका व्यक्तित्व तेजस्वी बन रहा है। आपने सेवा को जीवन-व्रत के रूप में अंगीकार किया है। सत्य, संयम और सेवा की इस पवित्र त्रिपदी ने आपश्री के संयम के पर्यवों को उज्ज्वल से उज्ज्वलतर और उज्ज्वलतम बनाया है। संयम के पर्यवों की उज्ज्वलता उत्तरोत्तर वर्धमान होती रहे, यही काम्य है।

पृष्ठ 16 का शेष

स्वाध्याय-योग की....

आगम साहित्य में अनेक ऐसे सूत्र हैं जिनकी अनुप्रेक्षा करने वाला अपने जीवन में बहुत बड़ा बदलाव ला सकता है। साध्वीप्रमुखा श्री जी अनेक सूक्तों की अनुप्रेक्षा करती रहती हैं। आपका एक प्रिय सूक्त है 'मम लाभो त्ति पेहाए। जीवन में कोई भी प्रसंग आए, चाहे वह अनुकूल हो या प्रतिकूल, आपके मुख से यह सूत्र सहज ही उच्चरित हो जाता है। जीवन में घटित होने वाली हर घटना हमें लाभान्वित कर सकती है बशर्ते कि हमारी सोच सकारात्मक रहे। साध्वीप्रमुखा श्री जी की सकारात्मकता आदर्श है। वे स्वयं सम्यक् सोचती हैं और नकारात्मक सोचने वालों को भी संप्रेरित और संबोधित करती रहती हैं। 'अनुप्रेक्षा' स्वाध्याय से जुड़ी एक ऐसी दीपशिखा है, जो हमारी राहों में उजाला बिखेरती है। साध्वी प्रमुखा श्री जी ने अनुप्रेक्षा के प्रयोगों द्वारा अपने मार्ग को हमेशा प्रशस्त और आलोकमय बनाने का प्रयत्न किया है।

धर्मकथा : प्रभावना प्रवचन की

स्वाध्याय का पांचवां प्रकार है धर्मकथा। यह साधु के जीवन से जुड़ा कर्मनिर्जरा का एक विशिष्ट उपक्रम है। धर्मकथा का अर्थ है धर्म का उपदेश देना, प्रतिबोध देना। साध्वीप्रमुखा श्री जी के जीवन में धर्मकथा एवं धर्मोपदेश का श्रीगणेश पारमार्थिक शिक्षण संस्था में ही हो गया। आपने मुमुक्षु के रूप में पर्युषण के अवसर पर यात्राएं की। यात्राओं का अवसर प्राप्त हुआ। आपने उन यात्राओं के दौरान कितनों को प्रेरित किया, कितनों के जीवन में धर्म और अध्यात्म का आलोक बिखेरा। ऐसी भी मान्यता है कि कभी-कभी विशेष साधना के द्वारा भी उतनी निर्जरा नहीं हो सकती, जितनी निर्जरा प्रवचन प्रभावना करके की जा सकती है।

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी को परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के प्रवचन से पूर्व महीनों तक उपदेश देने का अवसर प्राप्त हुआ। गुवाहाटी चतुर्मास के दौरान आपने चार महीनों तक उपदेश देने का दायित्व बखूबी निभाया। उसके बाद कोलकाता में दो माह तक तथा भीलवाड़ा चातुर्मास में चार महीनों तक उपदेश दिया। हैदराबाद चतुर्मास में कोरोना महामारी के दौरान पूज्यवर के निर्देश से रात्रि के समय दो माह तक कर्मवाद और व्यक्तित्व विकास पर आपके ऑनलाइन वक्तव्य हुए। चतुर्मास हो या शेषकाल आपके वक्तव्य होते रहते हैं। आपकी वाणी में ओज तथा भाषा में सहज सौष्ठव है। आप कठिन विषय को भी सरलता एवं सुगमता से प्रस्तुत करने का प्रयास करती हैं। फलस्वरूप आपकी बात लोगों के सीधी गले उतरती है। आपके वक्तव्यों में आगमों एवं निर्युक्ति, भाष्य आदि प्राचीन ग्रंथों के उद्धरणों की प्रचुरता रहती है। आप बहुत बार संस्कृत-श्लोकों एवं कथाओं के माध्यम से भी कथ्य को स्पष्ट करने का प्रयास करती हैं। इस प्रकार आपने अपने प्रवचनों, वक्तव्यों एवं बातचीत के माध्यम से लोगों को अध्यात्म के पथ पर गति करने की प्रेरणा दी है। साध्वीप्रमुखा के महनीय पद पर आसीन होने के बाद तो आपके उपपात में धर्मकथा के रूप में होने वाला यह स्वाध्याय तो मानो अहर्निश चलता रहता है। उसमें न समय की सीमा होती है न स्थान की प्रतिबद्धता।

स्वाध्याय के द्वारा व्यक्ति सबसे पहले अपनी आत्मा का हित साधता है। उसके भीतर करणीय और अकरणीय का विवेक जाग जाता है। साध्वीप्रमुखा श्री जी की साधना का एक मात्र ध्येय है आत्महित। आपकी हर प्रवृत्ति 'अन्तट्ठियाएं' सूत्र की परिक्रमा करती हुई परिलक्षित होती है। साध्वीप्रमुखा जी की विवेक चेतना हमारे लिए प्रेरणा है। आप अकरणीय को न करने की दिशा में जितनी जागरूक रहती हैं, करणीय की क्रियान्विति के प्रति भी उतनी ही सजग एवं सचेष्ट रहती हैं। स्वाध्याय से वैराग्य के संस्कार पुष्ट होते हैं। जीवन में अनासक्ति का विकास होता है। साध्वी प्रमुखाश्रीजी का वैराग्य विशिष्टता लिए हुए है। आपके व्यवहारों में सहज अनासक्ति का दर्शन होता है।

स्वाध्याय आभ्यंतर तप है। जो स्वाध्याय करता वह ज्ञान और तप दोनों की समन्वित अराधना करता है। साध्वीप्रमुखा श्री जी के जीवन में चलने वाला स्वाध्याय का यह तपोयोग दूसरों के लिए भी प्रेरणा-पथ बने इसी अभिकांक्षा के साथ शतशः प्रणतियां।

आचार्य महाश्रमण का GST पावर

● साध्वी अणिमाश्री, साध्वी सुधाप्रभा ●

प्राचीन शास्त्रों में चार प्रकार के व्यक्तियों का उल्लेख प्राप्त होता है-

1. दुनिया में कुछ व्यक्ति अंधेरे में जन्म लेते हैं और अपनी जीवन-यात्रा को अंधेरे में ही पूरी कर देते हैं।
2. कुछ व्यक्ति जन्म तो अंधेरे में लेते हैं किन्तु अपने जीवन-पथ को उजाले से भर लेते हैं।
3. कुछ व्यक्ति जन्म तो उजाले में लेते हैं किन्तु अपने जीवन को अंधकार मय बना लेते हैं।
4. दुनियां में कुछ ही पुण्यशाली व्यक्ति होते हैं, जो जन्म भी उजाले में लेते हैं, उजाले का जीवन जीते हैं एवं दुनिया में उजाला ही बांटते है।

ऐसे पुण्यशाली व्यक्तियों की श्रेणी के शलाका पुरूष हैं- आचार्य श्री महाश्रमणजी। जिन्होंने उजाले में जन्म लिया अर्थात् वैशाख के शुक्ल-पक्ष में मां नेमा की रत्नकुक्षि से इस धरणी धाम पर आलोक पुंज बनकर आए। उजाले से उजाले की ओर बढ़े यानि संयम-पथ के पथिक बने। प्रकाश-स्तंभ आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञजी के उजले हाथों में अपना जीवन-सूत्र समर्पित किया और पूरी मानव जाति को उजाला बांट रहे हैं। उजाला वही बांट सकता है, जिसके जीवन में उजाला हो। कहा भी है- आलोक वही बांट सकता है, जो स्वयं आलोकित होता है। सौरभ वही बिखेर सकता है, जो स्वयं सुवासित होता है। खुद को बदले बिना, औरों को बदलने की बात फिजुल है। शक्तिप्रदाता वही बन सकता है, जो शक्ति संपन्न होता है।।

सचमुच उजाले का राही वो ही शख्स बन सकता है, जो शक्तिसंपन्न होता है। आचार्य महाश्रमणजी अनंत शक्ति के अक्षय-स्रोत हैं। वे संघ के पावर हाउस है एवं पूरे संघ को पावर सप्लाई करते हैं। आचार्य महाश्रमणजी के जीवन में GST पावर है। इस पावर की बदौलत आचार्य प्रवर स्वयं भी पावरफुल हैं एवं धर्मसंघ को भी पावरफुल बना रहे हैं।

आओ, जाने आचार्य महाश्रमणजी का GST पावर :

G : गुड थिंकिंग पावर

कहते हैं छोटी सोच और पैर की मोच व्यक्ति को आगे नहीं बढ़ने देती। आचार्य महाश्रमणजी की सोच ऊंची एवं अच्छी है। अपनी ऊंची एवं अच्छी सोच के कारण ही सरदारशहर का नन्हा सा प्रतिभाशाली मोहन आज प्रभु महाश्रमण बन संघ का भाग्य लिख रहा है।

बचपन में गांधी जी के तीन बंदरों के बारें में पढ़ा था। पहला बंदर कहता है- बुरा मत बोलो। दूसरा बंदर कहता है- बुरा मत देखो तथा तीसरा बंदर कहता है- बुरा मत सोचो हमेशा, अच्छा ही सोचो। यदि व्यक्ति अच्छा सोचना प्रारंभ कर दे तो उसकी तकदीर बदल सकती है, सितारें चमक सकते हैं।

आचार्य महाश्रमणजी के पास अच्छी सोच, ऊंची सोच एवं सकारात्मक-सोच का किमिया मंत्र है। यह मंत्र ही नहीं, उनके जीवन का महामंत्र है। अपनी अच्छी सोच के कारण वे हमेशा हर परिस्थिति में खिले हुए गुलाब ही देखते हैं इसलिए नकारात्मक विचारों के कांटे उनके जीवन पथ को बाधित नहीं करते। अच्छी एवं ऊंची सोच के मालिक आचार्य महाश्रमणजी के जीवन का एक-एक पल संघ को खुशियों का आलोक बांट रहा है।

S : सुपर सिम्पैथी पावर :

एक टीचर ने विद्यार्थियों से पूछा- बताओ, बच्चों! बेस्ट थेरेपी कौनसी है? एक विद्यार्थी बोला सर! एलोपैथी। दूसरा बोला- सर! होमियोपैथी। तीसरा बोला-सर! नेचुरोपैथी। एक विवेकशील बच्चें ने कहा सर! सिम्पैथी। अगर किसी भी दवा के साथ सिम्पैथी जुड़ जाती है तो वह बेस्ट थेरेपी बन जाती है।

हम किसी के दुःख को मिटा तो नहीं सकते किन्तु बांट तो सकते हैं। हम किसी के दुःख को ले तो नहीं सकते किन्तु अनुभव तो कर ही सकते हैं। किसी के दुःख का अनुभव वही कर सकता है, जिसके भीतर संवेदना हो, सहानुभूति हो। आचार्य महाश्रमणजी के हृदय सागर में सहानुभूति व संवदेना की लहरें हिलोरे लेती है। वे दूसरों के दुःख का गहराई से संवेदन करते हैं। कोई अपने दुःख दर्द की गाथा उनके समक्ष प्रस्तुत करता है तो लगता है उनको ही पीड़ा हो रही है।

हुबली मर्यादा महोत्सव पर हमने साध्वी मंगलप्रज्ञाजी की बड़ी बीमारी होने के बाद पहली बार दर्शन किए। जब हमने पूज्यप्रवर को मंगलप्रभाजी के स्वास्थ्य की जानकारी दी तो पूज्यप्रवर के हाव-भाव से ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो गुरुदेव को पीड़ा की अनुभूति हो रही है। प्रवचन के मध्य पूज्य गुरुदेव ने साध्वी मंगलप्रज्ञाजी को आरोग्यवरदायी मंगलपाठ सुनाया।

एक नहीं ऐसे हजारों उदाहरण है, जो गुरुदेव श्री के सिम्पैथी लेवल को अभिव्यक्त करते हैं। संघ के छोटे सदस्य के प्रति भी पूज्यप्रवर की सहानुभूति के दर्शन होते हैं। सफल अनुशास्ता वही होता है, जो हर सदस्य के दुःख दर्द को समझ सके एवं सहानुभूति के साथ हर समस्या को समाहित कर सके। आचार्य महाश्रमणजी का सिम्पैथी पावर टॉप लेवल का है। इसीलिए तो वो संघ की टोप पोस्ट पर विराजमान है।

T : टाईम मेनेजमेन्ट पावर :

किसी विचारक ने बहुत सुन्दर कहा है- आपको हर वक्त पता रहता है कि आपके पास दौलत कितनी है किन्तु कितनी भी दौलत खर्च करलो आप यह नहीं जान सकते कि आपके पास वक्त कितना बचा है। सचमुच समय बड़ा कीमती है। जो इस कीमती समय का प्रबंधन करना जानता है, वह महानता के रथ पर आरूढ़ होकर युग का कुशलता से सारथ्य कर सकता है।

आचार्य महाश्रमणजी समय के कुशल प्रबंधक है। टाईम मेनेजमेंट के गुरु है। भगवान महावीर की वाणी है 'काले कालं समाचरे' आचार्य महाश्रमणजी का यह जीवन सूत्र है। उनको जिस समय जो काम करना होता है, उस काम को वे उसी समय संपादित करते है। इसी कारण उनके दिमाग पर काम का अतिरिक्त बोझ नहीं रहता। वे प्रतिदिन रात्रि को निःशेषम् कहकर गहरी नींद लेते हैं एवं प्रसन्नता के साथ सूरज की पहली किरण का अभिवादन करते हैं, ऐसा वही कुशल प्रबंधक कर सकता है, जिसने समय का सम्यक् नियोजन करना सीख लिया हो।

भगवान महावीर ने कहा है 'खणं जाणाहि पंडिए' जो समय को जानता है, वह पंडित कहलाता है। आचार्य महाश्रमणजी सिर्फ समय को जानते ही नहीं बल्कि क्षण-क्षण का सदुपयोग करते हैं।

कहते हैं समय व समझ दोनों एक साथ खुशकिस्मत लोगों को ही मिलती है। आचार्य महाश्रमणजी एक ऐसे सफल प्रबंधक है जो समझ के साथ समय की कलम हाथ में लेकर संघ की पोथी में नई इबारत लिख रहे हैं।

टाईम मेनेजमेंट के महागुरु आचार्य महाश्रमणजी से समय-प्रबंधन की कला सीखकर हम भी अपने जीवन को सजाएं, संवारे एवं महानता के पथ पर गतिशील बनें। प्रकाशपुंज गुरुवर से समय प्रबंधन का प्रकाश लेकर अपने जीवन में उजास भरें। GST पावर के महानायक की अभिवंदना! अर्चना! अभ्यर्थना!!

वित्त रागी नहीं वीतरागी चेतना हैं आचार्य महाश्रमण

● साध्वी स्वर्णरेखा ●

आज भौतिक उत्थान की उपग्रह बेला में बौद्धिकता की पराकाष्ठा है, सद्बुद्धि की रोशनी बुझती जा रही है, ज्ञान का मार्तण्ड भी अज्ञान से घिरा हुआ है। मनुष्य की दोनों मुट्ठियों में मानवता और शांति के मासूम बुदबुदे छटपटा रहे हैं, चिहुँ ओर से आवाज आ रही है- शान्ति से शान्ति को संभालो? कौन करे ऐसा प्रयास जो सम्मान्य शान्ति का मार्ग प्रशस्त करे, जो हिंसा की भावना को मिटा सके, जो भ्रष्टाचार का प्रलय मचाने वाली शक्ति से राहत दिला सके। मानवता के इस दर्द पर सूचिकारस भरण करने, मानवता का रोग पहचानने तेरापंथ के एकादशमाधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी ने अहिंसा यात्रा और अणुव्रत यात्रा की। प्राची के नभ पर उदित सार्वभौम भास्कर आचार्य श्री महाश्रमण मानवता की दुःखती हुई नसों पर शान्ति का संदेश देकर शान्ति से शान्ति को संभालने का प्रयास कर रहे हैं, विनाश की ओर वेग से दौड़ते घोड़े को रोकने का प्रयास कर रहे हैं, सुपाच्य अमृत-अणुव्रत की औषधि से भौतिकता की उच्छृंखल प्रगति से उत्पन्न व्यामोह को कम करने की दिशा दिखा रहे हैं। जिनकी साधना की अद्भुत शक्ति जन-जन में आध्यात्मिकता के तत्वांकुर को वृक्ष बनाने का कार्य कर रही है जो केवल विख्यात ही नहीं विलक्षण भी हैं, व्यक्ति और समय की आवश्यकता को समझकर उनके अनुरूप पथदर्शन भी करते हैं। अपने व्यक्तित्व की स्वतंत्रता के साथ संघ के वैशिष्ट्य को बनाए रखने का भागीरथ प्रयास करते हैं, जिनके उपदेश से जनता आश्वस्त ही नहीं पूर्ण रूप से विश्वस्त भी है। जिनके नेत्रों से विशद आनंद और नीरव शांति का स्रोत बह रहा है, वाणी में मितभाषिता मधुरता है, मार्मिक एवं सहज ज्ञान का एक प्रवाह सा बहता है जिसे सर्वसाधारण सहज ही ग्रहण कर सकते हैं। विद्वानों का मंतव्य है - 'यत्र तत्र समय यथा तथा, योऽसि सोऽस्याभिधया यथा तथा' जिस किसी देश, जिस किसी समय में महापुरुषों का जन्म हो, वह किसी भी नाम से पुकारा जाए वे वीतराग सम आदर के पात्र होते हैं। पूज्य गुरुदेव का चित्त वित्त रागी नहीं वीतरागी है।

मानव की अनमोल निधि है- भाग्य एवं श्रम। एक सहज प्राप्त है दूसरा यत्नसाध्य। आज तेरापंथ धर्मसंघ उन्नति एवं विकास के जिस स्वर्णशिखर पर खड़ा है वह श्रम की महिमा एवं संघ के सौभाग्य का स्वयं भाषी प्रमाण है। श्रम के प्रतिरूप आचार्य महाश्रमण के लिए अथक श्रम जीवन का पर्याय बना हुआ है। ज्ञान-गोमुख होकर ज्ञान की जाह्नवी बहा रहे हैं, कभी साधु-साध्वियों के बौद्धिक एवं मानसिक स्तर को उन्नत करने के लिए ज्ञान-दान की पवित्र प्रवृत्तियों में संलग्न रहते हैं, कभी आगमों पर अनुसंधान करते हैं। क्लान्ति उन्हें स्पर्श नहीं कर पाती। त्याग की वेदी पर कठोर श्रम की सविद्या से कर्मों का होम करने वाले कर्मठ पंडित हैं। समय की अनन्तता में अखंड विश्वास करते हुए पल-पल का हिसाब उसी तरह करते रहते हैं जैसे-अवसान बेला में वणिक लगता है।

पश्चिम रात्रि से रात्रि 10 बजे तक का प्रत्येक क्षण बंधा हुआ रहता है जैसे जीवन कठिन मर्यादाओं से बंधा है यथासंभव कोई भी मिसल एवं मसला दूसरे दिन के लिए नहीं छूटता। मानस पटल गहरा मितद्रु सा लगता है निस्तरंग थाह हीन, शान्त पवन। प्रभाव, निरीक्षण, नियंत्रण में अपूर्व धैर्य एवं अपार संयम से अल्प अनुशासन के साथ आध्यात्मिक शक्ति का भंडार सम्पूर्ण संघ में भर रहे हैं, युगों-युगों तक भरते रहें।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 मई - 26 मई , 2024

अनित्य जीवन से नित्य सिद्धत्व की प्राप्ति का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

छत्रपति संभाजीनगर। ।
9 मई, 2024

छत्रपति संभाजीनगर की उपनगरीय यात्रा करते हुए भैक्षव शासन के एकादशम् पट्टधर आचार्य श्री महाश्रमण जी अक्षय तृतीया कार्यक्रम आयोजन स्थल पधारे। धर्म धुरंधर आचार्य प्रवर ने फरमाया कि शास्त्रों में हमें कल्याणी वाणी प्राप्त होती है। आगम साहित्य हमारे लिए एक महत्वपूर्ण वाणी है। हमारे धर्मसंघ में जो आगम सम्पादन का कार्य शुरू हुआ था उसकी घोषणा औरंगाबाद में ही हुई थी। आज से लगभग 69 वर्ष पहले परम वंदनीय आचार्य श्री तुलसी यहां पधारे थे और महावीर जयंती के अवसर पर उन्होंने यह शुभ घोषणा की थी।

जैन विश्व भारती साहित्य सम्पादन का कार्य करती है। बत्तीस आगमों

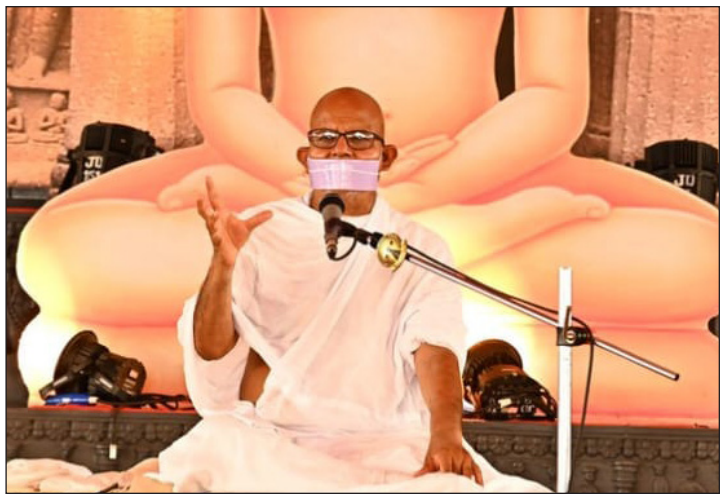

का मूल पाठ तो प्रकाशित हो चुका है। अनेक आगमों के हिन्दी और संस्कृत अनुवाद, टिप्पण आदि भी प्रकाशित हो चुके हैं। यह भगीरथ कार्य जिसमें बहुत काम हुआ है, कुछ शेष भी है। आगम वाणी में अनेक शिक्षाऐं, तत्वज्ञान की बातें, अध्यात्म व दर्शन की बातें प्रसंग - कथानक आदि अनेक चीजें गद्य-पद्य में प्राप्त होती हैं।

तेरापंथ धर्मसंघ में 36 आगमों की मान्यता है, उनमें एक है उत्तरज्झयणाणि, जिसके 36 अध्याय हैं। उत्तराध्ययन के दसवें अध्याय में 'समयं गोयम मा पमायए' चरण के साथ श्लोकों के अन्त में गौतम के नाम से बार-बार संदेश दिया गया है कि गौतम! क्षण भर भी प्रमाद मत करो। इस संदेश का एक आधार अनित्यता का दिया गया। यह मानव जीवन अनित्य है। जैसे एक वृक्ष का पत्ता सूखकर गिर जाता है वैसे ही यह मनुष्य जीवन भी एक दिन समाप्त हो जाता है। हर संसारी प्राणी का जीवन अनित्य है, सिद्धत्व नित्य है। इसलिए हम प्रमाद न कर जागरूक रहने का प्रयास करें।

शरीर अध्रुव है, वैभव, धन-सम्पति भी शाश्वत नहीं है। मृत्यु निकट आती जा रही है, इसलिए जितना कर सकें धर्म का संचय करने का प्रयास करना चाहिए। इस अनित्य जीवन से शीघ्र नित्यता -सिद्धत्व की प्राप्त हो सके ऐसी साधना-आराधना करने का हम जितना हो सके प्रयास करें। गृहस्थ भी धर्म की साधना करें, सांसारिक कार्यों में संलग्न हुए रहते हुए भी कमल पत्र की तरह निर्लिप्त रहकर, धर्म साधना करते रहें। अनेक प्रकार के त्याग-प्रत्याख्यान, चौदह नियम, तपस्या आदि के द्वारा मानव जीवन का लाभ उठाने का प्रयास किया जा सकता है। पूज्यप्रवर की सन्निधि में जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित आगम 'अनुत्तरोवायिअदसाओ' का लोकार्पण किया गया। बहुश्रुत परिषद सदस्या 'शासन गौरव' साध्वी कनकश्री जी की आत्मकथा भी पूज्यवर के समक्ष लोकार्पित की गयी। पूज्यवर के स्वागत में व्यवस्था समिति मंत्री डॉ. अनिल नाहर, सभाध्यक्ष कौशिक सुराणा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों की सुंदर प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

स्थितप्रज्ञता की जीवंत प्रतिमा को अनन्तशः नमन'

● साध्वी जिनबाला ●

एक बार आइंस्टीन से पूछा गया - आपके जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि क्या है ? आइंस्टीन ने एक बच्चे की तरफ इशारा करते हुए कहा- यह। फिर पूछा- आप तो बहुत बड़े वैज्ञानिक हैं, किसी और उपलब्धि के बारे में बताते। आइंस्टीन- यह बालक ही मेरी उपलब्धियों को आगे बढ़ाएगा। प्रज्ञा पुरूष आचार्य श्री महाप्रज्ञ से जब सबसे बड़ी उपलब्धि के बारे में पूछा गया तो उन्होनें आगम अनुसंधान, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान जैसे अनेक महत्वपूर्ण अवदानों को बड़ी उपलब्धि नहीं बताया। आचार्य श्री महाश्रमण जी को जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि माना। जिज्ञासा उभर सकती है, आखिर क्यों? मुझे लगा जो गुरु के हर इंगित की आराधना में सर्वात्मना समर्पित रहता है, जो अहर्निश गुरुदृष्टि पर चलना अपना परम धर्म मानता है, जो संयम की उज्ज्वल धवल चद्दर को निर्मल निर्दाग रखता है, जो पूर्ण स्थिर योगी होकर आत्म साधना में लीन रहता है वह शिष्य गुरू की सबसे बड़ी उपलब्धि हो सकता है। महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी का जीवन अनेक अनुपम विलक्षणताओं का पुंज है। रवि की तेजस्विता, चन्द्र की शीतलता, मंगल की निर्भीकता, बुध की सिद्धहस्तता, बृहस्पति की आत्मशक्ति, शुक्र की ओजस्विता, शनि की प्रतिरोधात्मकता का समवाय साक्षात् दृष्टिगत होता है। इसीलिये उन्हें न पुखराज पहनने की आवश्यकता है, न माणक धारण करने की जरूरत, न पन्ना खरीदने की आवश्यकता है न मूंगा धारण करने की। स्वयं में ही समाहित है सारे ग्रहों की शक्तियां।

इनके जीवन में न आवेश का लवलेश है, न अंह का। न लोभ का भाव है, न माया का। न चिन्ता की रेखा है, न तनाव का भार। न अनिष्ट विचार है, न कार्यभार। उनका जीवन तो पुरूषार्थ का पहरूआ है। ब्रह्ममबेला से शयन तक श्रम का पहिया, कालचक्रवत् घूमता रहता है। बुलन्द है उनके भाग्य का सितारा, जिस पर शासन करता है पौरूष का ध्रुवतारा। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के शब्दों में 'महाश्रमण का भाग्य चमक रहा है।' आचार्यश्री महाश्रमण जी की मंगलवरदायी शीतल छत्रछाया पाप, ताप, संताप का विनाश करने वाली है। वाणी सत्यनिष्ठा की कहानी है। आचार्य महाश्रमण जी तो ऊर्जा के अक्षयकोष हैं। वे इन्द्रियजयी, सहिष्णु, स्वाध्याय-ध्यान में लयलीन ध्रुवयोगी हैं। वे आत्मस्थ, तटस्थ, साम्ययोगी, स्थिरयोगी, वीतराग-प्रयोगी हैं। जयाचार्य जैसी स्थितप्रज्ञता का साक्षात् दर्शन उनके जीवन में किया जा सकता है। तेरापंथ शासन का इतिहास प्रसिद्ध प्रसंग है - जयाचार्य द्वारा पाली के बाजार में रखी स्थिरता। जिसका संक्षिप्त विवरण देते हुए गणाधिपति गुरूदेव श्री तुलसी ने आठ प्रवचन माता के अन्तर्गत ईर्या समिति का प्रशिक्षण देते हुए अपने गीत में लिखा है- "बालवये जीत मुनि पाली रै बाजार। नाटक नहीं देख्यो लिखतां आंख उठार। तो क्यूं मारग में बिसारी, माता ईर्या समिति।।"

इसी प्रसंग को संस्कार बोध में भी उदृत किया है -

"पालीकेबाजारका,यादकरेंइतिहास। स्थिरयोगी शिशु जीत मुनि, बढ़ा विपुल विश्वास।।"

उन्हीं प्रसंगों को पुनर्जीवित किया आचार्यश्री महाश्रमण जी ने। सन् 1984 की घटना है। आचार्य श्री तुलसी का चातुर्मास सूर्यनगरी जोधपुर की धरा पर था। उस समय दिल्ली में 31 अक्टूबर को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी का देहावसान हो गया। 2 नवम्बर को पार्थिव देह की अंत्येष्टी यात्रा का दूरदर्शन पर सीधा प्रसारण चल रहा था। जिसे प्रायः सबने देखा होगा पर मुनि मुदित (वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमण जी) ने एक बार भी आंख उठाकर नहीं देखा। एक श्रावक वहां मौजूद था जो एकटक मुनि मुदित को देखता रहा। वास्तव में स्थितप्रज्ञता बेजोड़ थी।

ऐसे आचारनिष्ठ, अनुशासननिष्ठ, मर्यादानिष्ठ, अध्यात्मनिष्ठ, आचार्यनिष्ठ, संघनिष्ठ, संयमनिष्ठ आचार्य हैं आचार्यश्री महाश्रमणजी। आचार्यश्री महाश्रमण जी की अनेक विशेषताओं का समय-समय पर उल्लेख करते हुए आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने अनेक बार फ़रमाया- "महाश्रमण हमेशा संघीय दृष्टि से सोचता है। इसमें समर्पण और करूणा का भाव है। हमने महाश्रमण को अनेकों बार अनेक कसौटियों पर कसा, जिनमें वह स्वर्ण की भांति निखर कर सामने आया। मैं इसे अपना सौभाग्य मानता हूं कि मुझे ऐसा उत्तराधिकारी मिला। आचार्य महाश्रमण को युवा मनीषी कहें या नहीं पर महातपस्वी जरूर कहें। महाश्रमण का इन्द्रिय संयम अनुत्तर है, आहार संयम अनुत्तर है, सहनशीलता अनुत्तर है, वाणी संयम और चक्षु संयम अनुत्तर है। अंतरंग तप की दृष्टि से महाश्रमण से बड़ा तपस्वी पूरे धर्म संघ में मुझे कोई दिखाई नहीं देता है।"

कहते हैं जिसके जीवन में उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम इन छह सूत्रों का संगम हो उसकी देवता भी सहायता करता है। लगता है आचार्यश्री महाश्रमण जी की सेवा में देवशक्ति अहर्निश नतशीष रहती है। आचार्यश्री महाश्रमणजी के जीवन को गहराई से देखने पर लगता है साधुता आपकी आत्मा है। संघीय मर्यादा, गुरू आज्ञा, आगम-आणा साधना की मूल्यवत्ता है और कर्म में अप्रमत्तता है। आचार्यश्री महाश्रमण जी के उदात्त जीवन की भविष्यवाणी बचपन में ही हो गयी थी। मैंने पढ़ा एक बार एक रेखा शास्त्री, छगन मिश्रा मुनि श्री सुमेरमल जी स्वामी (लाडनूं) के पास आया। उनके हाथ पैर की रेखाएँ देखकर कहा आप दो बालकों को छः महीने के भीतर दीक्षा दोगे। फिर बालक मोहन की हाथ पैर की रेखाएँ देखकर कहा- यह बालक आपकी विद्यमानता में ही आपके धर्मसंघ का सर्वोपरि स्थान प्राप्त कर लेगा। इस भविष्यवाणी की सच्चाई आज सबके सामने है। ऐसे ही एक बार सरदारशहर के बिरधीचंद नाहटा ने बालक मोहन की हस्तरेखा देखकर कहा- इसके हाथ में तो देव रेखा है, जो विरले व्यक्तियों के हाथ में होती है। आप श्री की दीक्षा स्वर्णजयन्ती हम सबके लिये खुशियों का सुन्दर साज लेकर आई है। हम यह संकल्प करती हैं कि इस माध्यम से हम भी अपने संयम पर्यायों को निर्मल से निर्मलतम बनाते रहे।

इस अवसर पर पूरा धर्मसंघ चाहता है कि आचार्यश्री महाश्रमणजी अतीत की सारी परम्पराओं, आदर्शों, सिद्धान्तों और मर्यादाओं को संरक्षण देते हुए अपने मौलिक चिन्तन, ऊर्जस्वल कार्य क्षमता और दूरदर्शी निर्णयों से नये-नये कीर्तिमान गढ़ते रहें। उनकी वरदायी बरगदी छांव तले चतुर्विध संघ निश्चिंतता, निर्भारता का अनुभव करता रहे। पुनः पुनः चिर आयुष्य, चिर आरोग्य और चिर शासना की अनन्तशः शुभकामना।

अहिंसा और संयम युक्त साधन है शुद्धः आचार्यश्री महाश्रमण

32 दिवस के अंतराल के पश्चात साध्वीप्रमुखाश्री पहुंची गुरुकुलवास में

निपानी।
6 मई, 2024

संयम के महानायक आचार्य श्री महाश्रमणजी ने अमृतवाणी का रसास्वादन कराते हुए फरमाया कि संयम और तप में अध्यात्म का बहुत बड़ा सार समाया हुआ है। आगम में कहा गया कि संयम और तप से स्वयं को भावित करते हुए विहार करते रहें। हमारे जीवन में एक मार्ग भोग का है, इन्द्रिय विषयों के उपभोग का है और दूसरा मार्ग है- संयम का। एक अनुस्रोत का मार्ग है, तो दूसरा प्रतिस्रोत का मार्ग है। प्रवाह के साथ बहना सामान्य बात है पर स्रोत के प्रतिकूल चलना कठिन हो सकता है। संयम और तप का मार्ग प्रतिस्रोत का मार्ग है। अनुस्रोत संसार है, प्रतिस्रोत संसार को तरना है।

शास्त्र में कहा गया है पर श्रेष्ठ बात यह कि मैं अपनी आत्मा को दान्त बनाऊं, संयमित बनाऊं। हम अपने साध्य को प्राप्त करने का मनोभाव बनाते हैं। साध्य को पाने के लिए साधन की आवश्यकता होती है।

साध्य शुद्ध है तो साधन भी शुद्ध होना चाहिए। आत्मा का दमन करने के साधन बताए गए- संयम और तप। ये दोनों बड़े शुद्ध साधन हैं।

प्रश्न हो सकता है कि साध्य और साधन की शुद्धता की कसौटी क्या है ? जिस साध्य में अहिंसा और संयम है वह साध्य शुद्ध है, इसी प्रकार अहिंसा और संयम युक्त साधन भी शुद्ध हो सकता है। मोक्ष यदि साध्य है तो साधना में संयम-तप करें, अहिंसा का ध्यान रखें, ज्ञान, दर्शन, चारित्र में अभिवृद्धि करें। ये सब शुद्ध साधन हैं। यहां हिंसा को प्रश्रय नहीं है, असंयम का प्राधान्य नहीं है।

साध्य भौतिक भी हो सकता है, उसके लिए भी हम ज्यादा से ज्यादा अहिंसा का प्रयोग करें, जितना हो सके संयम रखें। जो जरूरी नहीं वह हिंसा, असंयम काम में न लें। राजा के तीन कर्तव्य होते हैं- सज्जन लोगों की रक्षा करना, असज्जन लोगों पर अनुशासन करना और जो आश्रित जनता है, उसका भरण-पोषण करना। इन कर्तव्यों में राजा भी अहिंसा और संयम का ध्यान रखे।

संयम और तप द्वारा अपनी आत्मा का अनुशासन करें। आत्मानुशासन धर्म के क्षेत्र में भी काम का है, तो राजनीति, समाज नीति और परिवार में भी काम का है। अपने आप पर हम अपना अनुशासन करें अन्यथा दूसरे हम पर अनुशासन करेगें। वह स्थिति न आये इसलिए हम संयम और तप के द्वारा अपनी आत्मा पर अपना अनुशासन करने का प्रयास करें।

आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन में बताया- निज पर शासन, फिर अनुशासन। हम संयम और तप के द्वारा अपनी आत्मा पर अनुशासन करने का प्रयास यथोचित रखें।

आज साध्वीप्रमुखा जी 32 दिनों के अन्तराल बाद गुरुकुलवास में पधारी हैं। जो होता है अच्छे के लिए होता है। कहा गया है- हुआ और होगा कि जो वह सब भला नितान्त। परम शांति के हेतु हैं ये दो चिन्तन कान्त।।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने फरमाया कि चकोर पक्षी चन्द्रमा की बाट निहारता है, मयूर बादल की ओर देखता रहता है, चकवा पक्षी सूर्य की, योद्धा विजय की और हाथी विंध्याचल की प्रतीक्षा करता रहता है वैसे ही हम सब साध्वियां आचार्यप्रवर का स्मरण कर रहीं थीं।आज हमें अत्यधिक आनन्द की अनुभूति हो रही है। मेरे भीतर में संघर्ष चल रहे थे।

मेरे कान और मेरी आंखों में संघर्ष हो रहा था, कानों को तो पूज्य श्री के संवाद मिल रहे थे, पर आंखों को दर्शन नहीं मिल पा रहे थे। दूसरा संघर्ष था मन और पैरों का। मन कहता था आगे बढ़ूं पर पैर तैयार नहीं थे। पर आज आचार्य प्रवर के दर्शन हो गए। पूना और औरंगाबाद के युवक प्रतिदिन हमारे विहार में अच्छी संख्या में साथ थे। युवक परिषद का सेवा का यह कार्य अपने आप में विलक्षण है।

साध्वीवर्या संबुद्घयशाजी ने कहा कि आज अत्यंत खुशी हो रही है कि साध्वीप्रमुखाश्री जी पुनः गुरुकुलवास पधार गई हैं, साध्वियों का ठिकाणा हरा भरा हो गया है।

मुख्यमुनि महावीरकुमार जी ने कहा गत दिनों के प्रसंग बताते हुए कहा कि आचार्य प्रवर की सन्निधि इतनी पवित्र है कि लोगों को बार-बार आपके दर्शन करने की भावना रहती है। गुरुदेव की यात्रा जैन शासन एवं तेरापंथ संघ की प्रभावना बढ़ाने वाली थी।

पूना सभाध्यक्ष महावीर कटारिया एवं पूना समाज ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। विद्यालय प्रबंधन ने पूज्य प्रवर के स्वागत में अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

निर्मलता को प्रदान करने वाला तत्त्व है तपस्या : आचार्यश्री महाश्रमण

छत्रपति संभाजीनगर।
8 मई, 2024

महातपस्वी युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि अध्यात्म की साधना में सम्यक् ज्ञान, सम्यक दर्शन, सम्यक चारित्र का महत्व है, तो तप का भी महत्व है। तपस्या के द्वारा आत्मा की शुद्धि होती है। तपस्या के बारह प्रकार बताए गए हैं। वैसे शुभ योग भी अपने आप में तप होता है।

अक्षय तृतीया का दिन तपस्या की सम्पन्नता के साथ जुड़ा हुआ है। अनेकों लोग इस दिन अपना वर्षीतप सम्पन्न करते हैं। वर्षीतप भगवान ऋषभ से जुड़ा हुआ है। भगवान ऋषभ की स्तुति में भक्तामर एक ऐसा ग्रन्थ है, जो जैन एकता का प्रतीक है, आधार है। श्वेताम्बर हो या दिगंबर दोनों आम्नाय में भक्तामर का स्वाध्याय होता है। इसमें भक्ति का भाव सन्निहित है। अनेकों विघ्न- बाधाएं इस स्तोत्र के माध्यम से दूर हो सकती हैं।

अक्षय तृतीया को शुभ दिन के रूप में भी माना जाता है। तेरस और तीज बिना पूछे ही मुहूर्त माने जाते हैं। यह वैशाख महीना भगवान ऋषभ से तो जुड़ा हुआ है ही, भगवान महावीर के केवल ज्ञान दिवस से भी जुड़ा हुआ है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का महाप्रयाण भी वैशाख कृष्णा एकादशी को सरदारशहर में हुआ था। वैशाख पूर्णिमा का दिन महात्मा बुद्ध से भी जुड़ा हुआ है। तपस्या निर्मलता को प्रदान करने वाला तत्व है। तपस्या के अनेक प्रकार हैं, ध्यान, स्वाध्याय करना भी तपस्या है, जिनसे कर्म निर्जरा हो सकती है। तपस्या करने वाले अनुमोदना-साधुवाद के पात्र हैं। तपस्या का सार यह आ जाना चाहिए कि कषाय मुक्ति हो जाए, राग-द्वेष पतले पड़ जाएं, आत्मा शांत, उपशम से युक्त हो जाए। तपस्या हो न हो पर कषाय मुक्ति हो जाए तो बहुत बड़ी बात हो जाती है। समता की स्थिति हमें प्राप्त हो, उसका महत्व है। ध्यान, स्वाध्याय, आध्यात्मिक सेवा आदि भी तपस्या हैं, इनसे भी आत्मा विशुद्ध होती है।

पूज्य प्रवर के स्वागत में ललीता सुभाष नाहर ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। नाहर परिवार के सदस्यों ने स्वागत गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि श्री दिनेशकुमार जी ने किया।

सत्य की साधना से प्राप्त हो सकता है परम शांति का तत्त्व : आचार्यश्री महाश्रमण

छत्रपति संभाजीनगर।
7 मई, 2024

तेरापंथ धर्मसंघ के महासूर्य एकादशम् अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी का छत्रपति संभाजीनगर (औरंगाबाद) में पावन पदार्पण हुआ।

परम पावन ने फरमाया कि पुरुष! तुम सत्य को पहचानो। हमारी दुनिया में सच्चाई की साधना के लिए अभय का भाव होना आवश्यक है, सरलता का भी होना आवश्यक है। डरने वाला कभी झूठ भी बोल सकता है। भय से आदमी अयथार्थ भाषण कर सकता है। सच्चाई की साधना में कठिनाईयां भी आ सकती है, परन्तु हमारा विश्वास है कि सच्चाई परेशान तो हो सकती है, पर पराजित नहीं हो सकती। अंतिम विजय तो सच्चाई की होती है। सच्चाई की साधना में मनोबल चाहिए। पौरुष और वीर्य होता है तब सच्चाई की विशिष्ट साधना की जा सकती है। चारित्रात्माओं के लिए सर्वमृषावाद का जीवन भर त्याग होता है। हर सच्ची बात को बताना जरूरी नहीं है, जरूरी यह है कि साधु झूठ न बोले। सच्चाई की साधना से जो मिलता है, वह बहुत बड़ा तत्व होता है। परम शांति का तत्त्व सच्चाई की साधना से प्राप्त हो सकता है।

झूठ बोलना दिमागी तनाव का कारण बन सकता है। झूठ के पैर कमजोर पड़ सकते हैं। सच्चाई में विरूपता नहीं है, झूठ में विरूपता है। एक झूठ को ढकने के लिए दूसरा झूठ बोलना पड़ता है। सत्य सम्प्रदाय से भी ऊपर होता है। जहां सत्य है वहां संप्रदाय का मोह भी छोड़ देना चाहिए। संसार में संतता, त्याग का सम्मान होता है। गृहस्थों में भी ईमानदारी के प्रति रुझान रहे। (शेष पेज 18 पर)

लगातार 40 घंटे के रक्तदान शिविर को इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड एवं एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में स्थान

छत्रपति संभाजीनगर/इंदौर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव - रिदम के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद इंदौर द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन 4 एवं 5 मई को भोलाराम उस्ताद मार्ग इंदौर में किया गया।

40 घंटे तक निरंतर चले इस शिविर को इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड एवं एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में स्थान प्राप्त हुआ। छत्रपति संभाजीनगर में विराजित युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के श्री चरणों में अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने दोनों संस्थाओं द्वारा प्रदत्त सर्टिफिकेट निवेदित किये।

इस अवसर पर अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-प्रथम पवन माण्डोत, आचार्यश्री महाश्रमण अक्षय तृतीया प्रवास व्यवस्था समिति अध्यक्ष सुभाष नाहर, लोकमत के प्रधान सम्पादक एवं महाराष्ट्र सरकार के पूर्व गृह मंत्री राजेन्द्र बाबू दरडा, स्थानीय तेयुप अध्यक्ष अंकुर लूणिया, अभातेयुप परिवार एवं छत्रपति संभाजीनगर की युवाशक्ति उपस्थित थी।

तेयुप इंदौर अध्यक्ष अर्पित जैन ने बताया कि शिविर के माध्यम से थैलेसीमिया से पीड़ित बच्चों की सहायता के लिए 1013 यूनिट ब्लड एकत्रित किया गया।

शिविर के दौरान नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, शंकर लालवानी, महापौर पुष्पमित्र भार्गव के साथ अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता, संगठन मंत्री अमित सेठिया एवं मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के राष्ट्रीय सह प्रभारी सौरभ पटावरी एवं इंदौर के युवा साथी आदि उपस्थित थे।

बागबान के हाथों में 'चमन के बागवां' विशेषांक

छत्रपति संभाजीनगर/इंदौर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा पूज्य प्रवर के दीक्षा कल्याण महोत्सव वर्ष के उपलक्ष पर प्रकाशित युवादृष्टि विशेषांक 'चमन के बागबान' पूज्य प्रवर को समर्पित किया गया। इस संदर्भ में अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश डागा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि गुरुदेव की दीक्षा के पचास वर्ष पूर्ण होने पर इस विशेषांक की कल्पना से निर्माण तक कार्यकारी संपादक विपिन जैन के साथ अनेकों कार्यकर्ताओं का श्रम नियोजित हुआ है।

सम्पादकीय

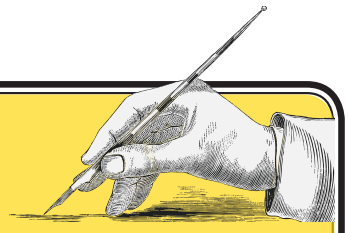

पुण्याई के महापुंज : महातपस्वी महाश्रमण

जिनशासन के महान् पारावार में चिंतामणि सम वैक्षव शासन हमें मिला है जहां परम प्रतापी, पुण्यशाली, महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी की शासना हमें प्राप्त है। आचार्य श्री महाश्रमण जी पुण्य के अक्षय भंडार हैं। न जाने हमने कौनसे सद्कार्य किए होंगे जो हमें उनका पावन वरदहस्त मिला है। परंतु हमसे भी सहस्र गुना अधिक सद्कार्य आचार्य श्री ने पिछले भवों में किए होंगे, जिस कारण उनका पुण्य इतना उज्ज्वल है।

गीत में लिखा गया है –

एक तो तेरे पुण्य उजले, दूसरी तप साधना...

सचमुच पूज्य प्रवर के पुण्य अति उज्ज्वल हैं जो उन्हें दुर्लभ मनुष्य भव, जिन शासन, तेरापंथ धर्म संघ प्राप्त हुए। इतना ही नहीं इस नंदन वन में संयम यात्रा का महान आरक्षण भी मिला जो आप श्री सतत गतिमान रहते हुए दूसरों को भी संयम में स्थित और स्थिर कर रहे हैं। इससे भी आगे जाएं तो आपको गणाधिपति तुलसी एवं आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की निकट सेवा का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ। थोड़ा और आगे बढ़ें तो युवाचार्य महाप्रज्ञ के अंतरंग सहयोगी, साझपति, महाश्रमण, युवाचार्य पद आदि विभिन्न रूपों में आप श्री द्वारा दी गई सेवाएं भी आपके पुण्य का उदय मानना चाहिए। वर्तमान में आप युगप्रधान शांतिदूत आचार्य के रूप में धर्म संघ की वल्गा को थामे हुए हैं। इतना सब कुछ एक ही व्यक्तित्व में समा जाना पुण्याई के अक्षय कोष से ही संभव हो सकता है।

आपश्री अपने इस अक्षय कोष को निरंतर वर्धमान बनाने की दिशा में प्रयत्नशील हैं। सैंकड़ों चारित्रात्माओं की साधना में सहयोगी बनना, हजारों व्रती श्रावकों की व्रत चेतना को पुष्ट बनाना, लाखों-लाखों लोगों को अहिंसा, संयम और तप की प्रेरणा देना, करोड़ों लोगों को सद्भावना, नैतिकता एवं नशा मुक्ति का संदेश देना। ये सब आपके पुण्य कोष को वृद्धिंगत ही कर रहे हैं। इनके अतिरिक्त आपश्री का दृष्टि संयम, वाणी संयम, खाद्य संयम, काय क्लेश आदि आदि अनेकों उपायों से आप अपने पुण्य के आभावलय को दिन प्रतिदिन विस्तार दे रहे हैं।

आप जैसी परम पुनीत पुण्य शाली आत्मा को पाकर सब परम सौभाग्य का अनुभव करते हैं। आपकी पावन सन्निधि निरंतर मानव जाति को अध्यात्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती रहे। आपश्री के दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता, 63वें जन्म दिवस,15वें पदाभिषेक दिवस एवं 51वें दीक्षा दिवस के अद्वितीय अवसर पर भाव भरा अभिनंदन, अभिवंदन।

जब भी पाता दर्शन तेरे, खो जाता मन मोर है,
अधरों पर आकर रुक जाता, भीतर मन का शोर है,
वो पल मन भावन लगता है, जब सन्निधि तेरी मिलती है,
मीरा के ज्यों श्याम, राम तुम मेरे, नस-नस कहती है।।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
ये प्रभो! यह तेरापंथ
20 मई - 26 मई , 2024

कीर्तिपुरुष की कीर्तिगाथा

दीक्षा

5 मई 1974, वि. सं. 2031, वैशाख शुक्ला चतुर्दशी, सरदारशहर में मुनि सुमेरमल जी द्वारा

आचार्य प्रवर की व्यक्तिगत सेवा में नियुक्ति

वि. सं. 2041, ज्येष्ठ कृष्णा अष्टमी, आचार्य तुलसी द्वारा

महाप्रज्ञ के अंतरंग सहयोगी

16 फ़रवरी 1986, वि. सं. 2042, माघ शुक्ला सप्तमी, उदयपुर मर्यादा महोत्सव में आचार्य तुलसी द्वारा

साझपति

14 मई 1986, वि. सं. 2043 वैशाख शुक्ला चतुर्थी, अक्षय तृतीया महोत्सव ब्यावर में आचार्य तुलसी द्वारा

महाश्रमण पद

9 सितंबर 1989, वि. सं. 2046 भाद्रव शुक्ला नवमी, आचार्य तुलसी द्वारा लाडनूं में एवं पुन: 6 फ़रवरी 1995, वि. सं. 2051 माघ शुक्ला सप्तमी गणाधिपति गुरुदेव तुलसी द्वारा दिल्ली में

युवाचार्य पद

14 सितंबर 1997 वि. सं. 2054 भाद्रव शुक्ला द्वादशी आचार्य श्री महाप्रज्ञ द्वारा, गंगाशहर में

आचार्य पदाभिषेक

23 मई 2010 वि. सं. 2067 द्वि वैशाख शुक्ला दशमी, सरदारशहर में

दीक्षा प्रदाता का सम्मान

माघ शुक्ला सप्तमी, वि. सं. 2067, राजलदेसर में मुनि श्री सुमेरमल जी 'लाडनूं' का 'मंत्री मुनि' के रूप में मनोनयन

शासनमाता अलंकरण

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के प्रमुखा पद के अमृत महोत्सव पर 30 जून 2022 को लाडनूं में 'शासनमाता' का अलंकरण

एक दिन में 47 किमी की यात्रा कर उन्हें दिल्ली में दर्शन देना

युगप्रधान पद

10 मई 2022 सरदारशहर में संघ द्वारा अलंकरण

साध्वीप्रमुखा मनोनयन

15 मई 2022 सरदारशहर में नवम् साध्वीप्रमुखा का मनोनयन

महान यायावर

अहिंसा यात्रा, अणुव्रत यात्रा के प्रणेता, 55000 किमी से अधिक की यात्रा करने वाले, पूरे भारत की यात्रा एक बार में करने वाले प्रथम आचार्य

साध्वीवर्या पद सृजन

2 जून 2016 को नुगरा, असम में साध्वीवर्या पद की घोषणा

मुख्यमुनि पद सृजन

4 जून 2016 को बरपथार, असम में मुख्यमुनि पद की घोषणा

संयम प्रदाता

61 संत, 189 सतियां एवं समणियों को संयम मार्ग पर प्रतिष्ठित करने वाले, तुलसी जन्म शताब्दी पर 100 दीक्षाओं के लक्ष्य को पूर्ण करने वाले, बीदासर वृहद् दीक्षा महोत्सव में एक साथ 43 दीक्षा देने वाले

अवदान

नशामुक्ति के प्रेरक, शनिवार सामायिक, सुमंगल साधना, सघन साधना शिविर, संवत्सरी एकता, जैनम् जयतु शासनम् आदि अनेकों अवदानों के प्रणेता

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक - **दिनेश मरोठी**